बक्षिसावृत्ति

रामवियोग.

लल्लुभाइ नारणजी देशाइ.
बळसाड.

बक्षिसावृत्ति.

रामवियोग

आलेखक

योगेंद्र लेखक

लल्लुभाइ नारणजी देशाइ

वलसाड.

विक्रमार्क, खिस्ताब्द,

१९६२. १९०६.

Presentation Edition for Eternal Bliss to the Author's wife, sister, and sister's two daughters.

RAMVIYOGA

A

HISTORICAL PICTURE

OF

HEART

(in dramatic figures)

BY

L. N. DESAI

AUTHOR OF YOGENDRA

BULSAR.

Vikramark	Christian Eara
1962	1906
Paush.	January.

the UNION Printing Press Co. Ld.—Ahmedabad,

पत्नी भगिनी अने भगिनीनी बे पुत्रीओनी
आत्मगतिनां कल्याण अने शांति अर्थे

बक्षिसावृत्ति.

रामावियोग

आलेखक

योगेंद्र लेखक

लल्लुभाइ नारणजी देशाइ

वलसाड.

विक्रमार्के	ख्रिस्ताब्द
१९६२	१९०६
पौष.	जान्युआरी.

जे पण कंई फळग्राही होय तेना

अवलोकनार्थे

लेखक तरफथी प्रेमपूर्वक अर्पण.

रा. रा–

पुस्तकालय
के
व्यवस्थापक मंडळ

लल्लुभाइ
अथवा
संमतिथि

वैश्वदेवी.

जुओ शुं ऊंध्या?! शिव सूर्ये सयाजी!
नाशे शुं नाहि तारका लाजी लाजी?
रूपो, ना, जेने रूप शुं रंगी दीधां!!
व्यापे शुं व्यापी बिंब कोणे न लीधां!!!

मालिनी.

किरण प्रसरी छातां त्यागुं कं? को वखाणुं?
लदबद थई न्हातां "कोण हुं?" "क्यां?" न जाणुं!
परवश बनी जातां अर्पी हुं, हुं न आणुं
रसबस गळी थातां अंग आनंद भानु!!!

चैत्र वद ९, १९६०

वियोगांजली.

ज्ञाने रुदन न घटे तोय हृदे रुए छे
"अंबी" "अंबी" साद उठे रुण हृदे अर्पे छे. १

हाहा ! उडी गई तुं धीर धरी न दिन बेण,
साले तारो वियोग भारी छोड्यो ना छूटे ए. २

बारमुं[१] वरस बेसतां बाळा तुं छोडी चाली
शुं संभारी मातु तुंए ? के संग भ्रात चाली ?!! ३

नयन ठरती तारा उपर मात तुं छोडी जातां
वियोग भगिनी भुली भगिनीथी अधिक थातां. ४

सुशील तुं मुखशोभा आनंद आनंद देती
तुज नयनरस विवेके उर्मि तो शांति पीती. ५

उज्ज्वळ तारुं मुख लांबु दृष्टिने सुख देतुं
जोइ ल्हावो क्यांय लेशुं हृदे संभारी रोतुं. ६

मातवियोगी पितुविखुटी आजी अंगे ठरी तुं
हा शांत उद्योगी बाळा, छेह देवो घटे शुं ?!!! ७

पुत्री ल्हावो लूंटायो आजी रुए अतिशे
बामासीनी डाळ ककडी दुःख न ओछुं खसुसे !!! ८

पाळी तारी भगिनी मोटी सुख तारे ठरी हा
एनोए अंतर ल्हावो लूंटी जवुं घटयुं क्यां ? ९

संगे परणी दुःखे खरडी तोये आनंद धरती
छेह दइ आनंदने ए मूकी चाली रखडती. १०

---

१ चैत्र, १९१०

ना ना मूकी ए रखडती मास नवे[1] उपाडी
बाळ विहोणां हमने कीधां दया शुं न लेश धारी? ११

मुक्तावशे कोण काम उद्यमी नित्य रहेतां
आजी मासी हृदय रडतुं छेह तुं आम देतां. १२

हा हा!! झडपी काळे पूठ बे मास फरीने
ना चाल्युं कंइ दीन बाळा जोत्रुं—हा!—शुं फरीने?!! १३

भय आप्यो त्रास आप्यो पीठ काके टोंकी तुं
मीनी रडतां काक कळकळे कंप हृदे भरी तुं. १४

वळी वळी शंका हृदे लेतुं काळ कोपी करे शुं
मास थया नथी पुत्रने[2] अन्य घा शुं ज लेशुं?!! १५

तोये पाछुं हृदय धरतां दिन गाळ्या हमोए
मास त्रिजे काळ आव्यो व्हेम चिन्हो खरां ए. १६

काळे घेरी तोये बाळा रामना याप धरती
हृदे क्रिया तारी जोतां शांति तो हमने वळती. १७

नव मासे एज चिन्हो आवी हमने घेरे ज्यां
काळ कोने माथे हवणां भय बहु बहु मे दे त्यां. १८

१ मार्गशीर्ष; १९६१. २ माघ; १९६०.

भगिनी उपाडी लइ तें वृद्ध राख्यां ज रोतां
दुखी एने सुख कीधुं काळ शुं जोतां जोतां. १९

आठ वर्षथी सुखी न को हिंद दुखी रडे हा!!
पुत्र वियोगी अन्न वियोगी शोर उंडा उठे ह्यां!!! २०

मृत्युनो ज्यां त्रास ज व्याप्यो दुःख गृहे गृहे हा!
पुत्र पिता सहु विखुटां बाळ टळ वळतां ज्यां त्यां!!! २१

कुटुंब-तो छिन्न भिन्न नारी विधवा हा रोये
वृद्ध डोसां डोसी मुकी पुत्र चाल्या शुं जोये? !!! २२

सेवा न को पामे जोतां हाय हाय वृद्धि होये
काळ कारमो सहु पुकारे आक्रंद हृदे शुं जोये? !! २३

तरत परण्यां तरत रंडातां काळ शुं रोतां रोतां
व्हीले मुखे परणी जातां कन्या मुख न जोता. २४

लग्न मरणनी क्रिया साथे काळ कारमो करावे
मातापिता स्नेही मरतां हाय हाय हृदे चलावे. २५

मृत्यु दुष्काळ भूकंप वेठे हिंद रडतुं अधिके
कोण दुःख त्यां हमारुं? शोक भूलुं खसुसे. २६

आनंद पामी आनंद लेजो बाल वियोगी तोये
बार वर्ष ज्यां तत्व पोष्यां आशिष एज होये. २७

त्रिजे वरसे स्फुर्णा उठी **वियोग** ज्यां चित्र देवा
धार्युं न हतुं कदिए में आम वियोग रोवा. २८

शुं स्फुर्णाए सत्य जोयुं के वियोग छे सर्ज्यो हुं
आगळ आवी स्वरुप दीधुं शोक हृदे न ले हुं २९

मामा सासु स्नेही गणतां सेवक अंग न भूले
एक वर्षमां सात लेतां शोक सहु एज झूरे. ३०

संवत साठथी एकसठ पौष वियोगनो काळ मोटो
ए वियोगे **वियोग** चितर्यो क्षेम सौ हृदे शुं जोतो. ३१

छप्पन मावे भगिनी जातां वर्ष पांचे थयां छे
आत्मारंगो ते पूर्वेथी जोतजोतां कह्या छे. ३२

आत्मातत्वो पोषण पामे एज ज्यां सत्य जोयुं
भगिनी! तुं, ने, बाळ हृदे जोई हुं हृदे न रोयुं. ३३

आत्री पोष्यां हमो सर्वने कार्य पूरुं ज थातां
क्रिया तमारी पूर्ण थातां वार लागी न जातां. ३४

वियोग चितरी संतोष लीधो छे वियोग नथी हुं
हा अंबी ए भ्रमणा खोटी, छे दुःखी श्वसुरपक्ष तुंहुं !! ३५

वर्ष थयुं नहि वियोग तारे त्रण पूठे ज आव्यां
वडसासु ने भगिनी तारी भगिनी श्वसुरे दुःख आण्यां ! ३६

पत्नीबंधु आज मोटो जोतजोतां गयो हा
वडश्वसुरनुं कष्ट जोये, पुत्र घा को न ले ह्यां ? !!! ३७

वर्ष दोढ थयुं न, नचिंत बेठां, अंतर त्रण मास न जातुं
स्वप्नो पीडे बिलाड रुए क्षोभ हृदे शोक पातुं, ३८

काक त्रिकाळ रुदन जोतां हृदे शंका पर जातुं
हा हा !! काळे शुं ज बनशे संकल्प विकल्प जोर धातुं !!! ३९

क्रिया सृष्टिनी भाविके ज्यां, मूढ व्हेमो धरे ए
हिंद ! हा हिंद !! तुं दुःख पूर्वे चिन्ह सूचक को भूलतुं ए ?!!४०

बे वर्षमां बार अंबी कहेतां शुं कहुं ए
मामी ने श्वसुर तारां पूठ थातां को भूलतुं ए !!! ४१

वैशाख सत्तावने मृत्युं जोयुं, स्वप्न मिथ्या ना थयुं ते
प्रेम कल्लोल मामी भाणेज शून्य गृह झुरतुं ए. ४२

विनोद विनयनो शणगार अंबी, आज क्यां हुं भाळु
शून्य ! शून्य !! गृहसंग शून्य !! धाम वृथा हुं पाळुं !!! ४३

शांति पीधी आत्मारंगे तेय जो के न जाती
तोये अंबी गृह कष्ट जोतां, क्षोभ क्रिया को न वाती ?!!! ४४

हा अंबी ! ए क्षोभ न टकतो, विशाल कर्तव्य जागे
कर्तव्य ए मार्ग भूमिनो स्फुर्णा निज आनंद मागे. ४५

पोष्यां तत्व आनंदी उठे आनंद आनंद होजो
ए आनंदे सर्वे समाइ स्वर्ग शुं रंग लेजो ! ४६

जे जे हृदे आर्या वर्ते वियोग एम देई जातां
शांति पामो स्वर्गवासे आत्मशुं आनंद लेतां ! ४७

क्रिया जो को हृदे अनुभवे **वियोग** उद्गार जोतां
उद्गार आनंद सर्वे लेजो हृदे कल्याण देतां. ४८

एज अंजली हुं अर्पुछुं वियोगी स्नेही मारां
पोषण पाम्यो ज्यांय ज्यांय फळ सहु होजो तमारां ! ४९

सृष्टिना वियोगी तत्वो पोषण हृदे ज्यां हुं दीधुं
काळो विल्या तोए मारुं कृत्य अर्पु हुं सीधुं. ५०

एज अंजली आनंद देतां आनंद होजो सहुको
वियोग धर्म छे सृष्टिनो चित्त चिंता न लेजो. ५१

अंजलाव पौष वद २, १९६२.

कोने गणीशुं मोटो रे भाई
काळचक्रमां कोने गणीशुं मोटो } ध्रुव

थइ गया कंईक थवाना कंइको
नाम निशाण रह्युं न ए को. कोने.

भरती भराई ठेलाई जाये
जन्म मरणथी एवुं ज देखाये. कोने.

कोने गणीशुं? कोने मुकी दइशुं?
ईर्ष्या कोनी करी घडो कोनो लइशुं! कोने.

चालतुं ए जोतां भूत कां न जुओ?
प्रसंगे थाता मोहे कां डूलो? कोने.

सैकाथी सहस्र गणना जोतां
शुं आवे हाथ (मेल) धोतां धोतां? कोने.

क्रोडाधिश कंइक मेले डटाया
रह्या बाकी ते सैके डबाया. कोने.

राजा अत्रटाया हजी न गणाया
भरत ध्रुवादि कोक ज जणाया. कोने.

तत्वो अर्पे तत्वो मुकी जाये
एज एज नर मोटा गणाये. कोने.

(१८९९ अप्रकाशित काव्य संग्रह).

पितुसंवत्सरी
माघ सुद ३, १९६१

अर्पणपत्रिका.

परम पूज्य मातुश्री विजया.

उदय अने अस्त आशा अने निराशा ए सृष्टिक्रमना स्वाभाविक धर्म छे. उंचेथी नीचे नीचेथी उंचे पडतां चढतां जळ वमळमां गुंचवाट, अकळाट, गभराट, भय अने एनो पण लय थतां नीरना सरळ प्रवाहसम मन अने हृदयगतिनां मधुर मधुर आंदोलन ए एवा धर्मनी स्वाभाविक क्रिया छे. सहुए अथडाय छे, सहुए तरफडे छे, केटलाक पछडाय छे, केटलाक निहत थाय छे, घणा एक वमळमां गुंचवाइ पाताळवश्य थाय छे, प्राणमुक्त थाय छे तो केटलाक ज प्राण मात्र टकी रहे छे; अने कोक ज उंची गतिना दिव्य सुखनो आनंद अनुभवे छे. ए सृष्टिधर्मनुं परिणाम के क्रियाफळ छे. मातुश्री आपनुं जीवन लग्नवयथी ज अनेक क्रिया अनुभवतुं आव्युं छे. ६९ थी ७२ चार वर्ष प्रजा सुख (पुत्री अने पुत्र) अने पिताश्रीना भाग्योदयथी अधिकाधिक अभिवृद्धिनी आशा अने आनंदनां हतां. ७३ शीरुमां ज पिताश्रीना स्वर्गवासथी निराशा अने अंधकार प्रवर्ती रह्यां. साधन छतां साधन रहित होवाथी मातुलपक्षनी (सुलतानपुर स्थळे मोरारजी वाघजीना नामथी वर्गमां सुप्रख्यात कुळनी) विशाळ कुटुंब छायाए, उभराता उमळका, प्रेम, आनंद अने कर्तव्यभावनाना अधिक श्रमथी, निराशा अने अंधकारनो नाश कर्यो. वृद्ध पिताश्रीनां कर्तव्यलोप तरफ क्षमा अने उदारता ज प्रवर्ती रह्यां. पुत्रादिकना सुखमां जीवन आशा धरवा लाग्युं. मातुलपक्षमां सरळता, शुद्धता, उदारता, निस्पृहता, अदीनता, प्रेम अने विवेकनुं तेज प्रसरी रह्युं. तमने ओछुं न आवे तेनी सहुको काळजी धरतुं रह्युं. बार तेर वर्ष पर्यंत बे बाळ सहित आपद्धर्मे मातुलपक्षमां प्रेमकल्लोलमां क्षमाधर्मनुं सेवन करतां काळबळे अनुकूळतानां किरण उदय थयां,

अत्यारसुधी प्रेमछायामां तत्वो अने आशानुं पोषणमात्र ज हतुं. हवे स्वतंत्र-बुद्धि अने व्यवस्थाधर्मनो प्रदेश उदय थयो. ८९ नी आखरे वृद्ध पिता-श्रीना स्वर्गवासथी अपरिचित कृषिधर्म प्राप्त थयो. कर्तव्यभावनाने संपूर्ण अवकाश मळ्यो. गृहव्यवस्थामां स्वसा सहाय होतां एमां उत्तरोत्तर अभिवृद्धिथी दया, क्षमा, विवेक अने उदारतावाळी अदीन उत्तम व्यवस्था परिचित समूहमां सुप्रसिद्ध ज छे. मातुश्री आपनुं जीवन कर्तव्यमय ज छे[१] मारी विद्या संबंधी बाळचेष्टाओ (ए जीवनना अंशरुप होइ), आपनां विशाळ मातुलपक्षमां प्रौढता, प्रेम, विवेक, सरळता अने उदारतादिक वर्तन अने व्यवस्थामां केळवाई, पोषायेल वर्तनस्वरुपमांथी आपनी प्रेममय छायामां पोषण पामती—रंगकल्लोल करती—अमर्याद वहे छे. ए आपना अने पिताश्रीना सर्वोत्तम गुणोनुं प्रभावफळ ज छे. पिताश्रीने पण उन्नत चारित्र साथे उन्नत संकल्पनो ज प्रवाह हतो. टुंक वयमां वर्तन अने हृदय स्मृति बहार हजी गयां नथी. धर्म, विद्या, सत्य, वर्तन वर्ग के समूह अने देशोदय एज एमनां सूत्र हतां. बाळवयमां ज पिताश्रीना हस्त आवेल पत्रोना उन्नत विचारथी ज, मातुश्री, आपनां आदर्शरुप बाळ हृदय धडवड वहतुं हतुं. एमनी सिद्धि माटे अनेक तरंग, तर्क अने कल्पना करतुं हतुं; अने मातुश्री-आप जुओ छो तेम ए बाळहृदय हजी बाळक ज होइ तरंग, तर्क, कल्पना अने विचारना रंगकल्लोलमां ज राचे छे, व्यवहारभावना भूले छे, अने अधर अधर आकाशमां स्वप्न तेम ज जागृतमां तरतुं होय तेम थन थन नाची रहे छे. ए थनथनाट आगळ व्यवहारने सत्य लागती भावनाओ असत्य माने छे. सर्वत्र उन्नत भावनानो लोप जुए छे, काळबळ आगळ जमानाने भावनाने अंगे हीन थतो जुए छे. कर्तव्य भावनानो लोप होतां

---

१ बे वर्षमां त्रण बाळक अने वध्वादिकना स्वर्गवासथी कर्तव्यभारमां वृद्धि ज थती रही छे.

सर्वत्र दीनता व्यापी रहेली जुए छे. एवी दीनताने लीधे ज (सामान्य विद्वान अने लेखकोनी दशा बाद करतां) आंगल भूमिना एक समर्थ तत्वज्ञे इर्या कर्युं हतुं; अने हीन पण थयो हतो. छेल्ली अवस्थामां ज ए तत्वज्ञने जमानाना तेमज स्वना प्रथम आडंबर स्वरुपनुं भान थयुं हतुं. पण मातुश्री आर्य कहेवडाववा इच्छती व्यक्तिनी ए भावना नथी. पाताळमां पण एक तत्वज्ञे निस्पृहतानुं बळ गायुं छे.[१] एम छतां पण समयनुं अवलोकन करतां जमानाना एक गुर्जर विद्वानने नीचे प्रमाणे पत्रोद्गार स्फुरे ए पण काळनो ज महिमा !!!

"आपणा देशमां लेखको पोतानो लेखक उद्योग 'धंधा'ने अर्थे पकडे छे. त्यारे गमे तो 'धंधा'ना सामान्य मार्गोने अनुसरी ग्राहकोमां पोतानो माल खपावे छे अने गमे तो ए मार्गथी अवळे मार्गे चाली द्रव्य गुमावे छे. सत्य जोतां आपणा देशमां आ धंधो अने लेखकनो उच्च उद्देश ए बे वाना साथे लागां शोधनार लेखक उभयमांथी भ्रष्ट थाय छे."

मातुश्री, विद्वानना आवां वाक्यो श्रवण पडतां तमारुं हृदय खळभळ्या विना रह्युं नहि के 'शुं विद्या भिक्षार्थे छे?' के 'कर्तव्य माटे छे?' 'शुं विद्या

(1.) A self-denial, no less austere than the saint's, is demanded of the scholar. He must worship truth, and forego all things for that, and choose defeat and pain, so that his treasure in thought is thereby augmented (Intellect) —EMERSON.

विद्या निमग्नने, निस्पृहताने अंगे तपस्वी करतां कंई ओछां तपोबळनी जरुर नथी. एणे सत्य पूजक थवुं जोइये, अने एटला ज खातर सर्व वस्तुनो त्याग करवो, हानी अने दुःखनो संग करवो के जेथी करी विचार शक्तिमां एनो भंडार वृद्धि पामतो रहे—(तर्क) इमर्सन.

परीक्षा माटे छे" के "परीक्षा विनाना मिथ्या आक्षेप माटे छे?" मातुश्री ए आपनां अद्दीन अने प्रौढ स्वरुपनो जमानामां लोप जोवाय छे. विद्वान ए जमानानुं आदर्श होवाथी विद्वानना वाक्य ए जमानानी भावनाना ज उद्गार छे. ए भावना एटली बधी हीन थइ गइ छे के नृपवरो तुलना शक्तिने अभावे वाक्चातुर्य अने जमानाना मोहमां मोज मानता जणाय छे. विद्वद्वरो, परीक्षको, पोषको अने राज्यपुरुषो के व्यवस्थापको स्थूळ दृष्टिनी संकुच हदमां ज परिक्रमण करता जणाइ हृदयक्रियानां समग्र अने विशाळ स्वरुप तरफ सुग धरावता वृत्तिरंग हृदयसौंदर्यानुराग के हीन अने संशयात्मक पद्धतिना अनुकरणमां भ्रमण करे छे.[1] त्यारे समूहमां विद्यारस नथी. विद्यारसनी (विशाळ) अभिवृद्धि नथी. तुलना, ग्रहण, अवलोकन अने तर्क शक्ति हजी विकासने पामी नथी. व्यवहारीक जरुरीयातो अने व्यवहारीक कर्तव्यनो प्रदेश हजी उदय थयो नथी. जागृति, उत्साह अने प्रेरणानो समय छतां एवी जरुरीयात अने कर्तव्यने अंगे अनेक दिशाओनो प्रकाश हजी ए समूहना अति मोटा भागने दृष्टिगोचर थयो नथी अने थतो पण नथी. विद्या, विद्यागृह, विद्यालय अने विद्याने अंगनुं कर्तव्य ए भावनानी व्यक्ति परत्वे स्फुर्णा सरखी पण नथी. अने ज्यां स्फुर्णा सरखी पण नथी त्यां ग्रहणशक्ति, अवलोकनशक्ति, तर्कशक्ति अने रसनी केळवणी माटे महा विद्यालय अने विश्व विद्यालयमां केळवायली व्यक्तिमां पण आग्रह, खंत, विकास, रस के तीव्र जीज्ञासानुं धावन क्यांथी होय?[2] विद्याना

---

१ विद्याना संस्कारमां प्रयुक्त के एवा संस्कार माटे प्रयास करती व्यक्तिओनी अविकासित पृथक्करण शक्ति, मार्गना विकासनुं रुंधन कर्ता ज थइ पडे छे.

(2) On the Report of the New Imperial Library at Calcutta, Times of India (Thursday, April 20, 1905) says :—

एवा समग्र अभावने लीधे ज पाश्चात्य वर्गने अनुकूळ जोइता गुणोनी केळवणीमां पण, सरखामणी आर्यावर्त करतां, वैभव, अहंता अने स्वार्थमां उर्ध्व गति करता पाश्चात्य आगळ खरे निर्माल्य, उत्साह रहित, दीनपणे भूमि उपर धूळी पुंजमां ज तृष्णा रहित बाळकसम आळोटे छे; अने क्षुधा के

A magnificent catalogue of the books was issued during the year in two volumes, but out of 2,000 copies printed 6 only were required by the public. Even Vernacular books, which may naturally be supposed to be required in great numbers by the Indian readers, are not cared for. "The small demand for them is surprising. About 13 per month are read exclusive of the few contained in the Reading Room Collection." "The reason given here for all this apathy is characteristic of the native public and is probably true." The failure of the readers to utilise the opportunities provided appears to be due in the case of natives of India to a disinclination either to give trouble or to take it. They rarely address personal enquiries to the Librarian or the Superintendent of the Reading Room and do not consult catalogues sufficiently".

राज्यनगर कलिकातामां देश व्यवस्थापक अने राज्यप्रतिनिधि तरफथी स्थापवामां आवेल 'न्युइम्पीरीअल' नामना विद्यागृहना रक्षक तरफथी ए गृहना वार्षिक उपयोगनां निबंध उपर टाइम्स ओफ इन्डीआ (२०—४—०९) विवेचन करतां कहे छे के पुस्तकोनां सूचिपत्रनी सुशोभित प्रत बे ग्रंथमां काढवामां आवी हती, पण मुद्रांकित करावेल २,००० प्रतमांथी समूहने तो मात्र छ प्रतनी ज जरुर लागी. देशी भाषानां पुस्तको के जेनी हिंद-

तृषाथी पीडाय त्यारे बाळकसम रुदन करे छे. ए धूलीपुंजनो त्याग करावनार अने आकाश तरफ उर्ध्वगति करावनार समग्र मनुष्यलक्षण अने समग्र विद्याविषय तरफ हजी पण—गृह के राज्य के ए बन्नेना दबाणनी छाया तळे—स्फुर्णानी अभिवृद्धि नथी. उलटुं विद्या ए एक व्यापार मनाय छे. दीनता, भिक्षा, संशयात्मक वृत्ति अने व्यवस्थापको के पोषकोनुं लालन एज एनां अंग मनाय छे. राज्यप्रवृत्ति एकली एज एक कर्तव्य मनाय छे. गृहने भोगे मंडळनो प्रचार एज वृत्तिआनंद के वृत्तिआनंदनुं स्थान मनाय छे.[1] जमानानुं एवुं प्रक्रिया स्वरुप होतां गमे तेवुं पण लक्ष्मीनुं पूजन एज सिद्धि मनाय छे. तो एवा जमानाना लेखको दीन अने खुसामत प्रिय भिक्षुक होई, लक्ष्मीनुं ज उपासन करतां व्यापारी सम अतिप्रशंसा, छळ, प्रपंचादिकनुं के जमाने जमाने वृत्तिरंगनुं ज पोषण करता कचरासम थइ पडे एमां शुं आश्चर्य? पाश्चात्य देशमां पण ए देशना तत्वज्ञोनां उन्नत सू-

---

वासीओ तरफथी स्वाभाविक रीते विशेष अपेक्षा होवानी आशा राखवामां आवे, तेवां पुस्तकोनो उपयोग पण जरूरनो जणातो नथी. (रक्षकना शब्दमां) "एवां पुस्तक माटे नजीवी मागणी आश्चर्यजनक छे. विद्यागृहनां वाचनस्थळसंग्रहमां रखातां थोडां पुस्तकोनी गणना नहि करतां, दरमासे तेर पुस्तको वंचाय छे!!" सर्व आवी अजीज्ञासु वृत्ति माटे अत्र दर्शाववामां आवेल कारण ए देशी समूहनुं स्वाभाविक लक्षण छे. (रक्षकना शब्दमां) "आपवामां आवेल तकनो आवो वाचकवृंदमां अनुपयोग, श्रम आपवा के श्रम लेवानी हिंदवासीओनी अनादर वृत्तिने आभारी होय एम जणाय छे. रक्षक अथवा वाचनस्थळव्यवस्थापकने एओ मुख प्रश्न भाग्ये ज पुछे छे, अने एओ सूचिपत्र संपूर्ण रीते अवलोकता नथी."

१ आर्यत्वमां अखिल आर्यावर्त के अखिल आर्य समूह एक गृह छे.

त्रोनो लोप थतां एवा ज पोकार [1]दृष्टिगोचर थाय छे. एम हलकां स्वरुपनुं अनुकरण होतां गुण के कर्तव्यभावननी कदरनो लोप थतां, कार्योत्पादक भावनानो ज ज्यां वेग प्रबळ होय त्यां स्वार्थ, संकुचवृत्ति, लक्ष्मी, अहंता, भावनानी विकृति के विकृतभावना अने आडंबरनुं पोषण कयां अधम तत्वोने जन्म नहि आपे ? जेथी करी मातुश्री ज्यां एक मजुरथी श्रीमंत अने नृप पर्यंत सहुको जमानाना मोहथी दीन थइ रह्युं होय त्यां उन्नत अने समग्र

---

(1) The Graphic, October 15, 1904.

Addison, were he writing now, would probably not obtain a publisher and would certainly be popular with a very limited public.... ... ...

The decay in the style and character of literature, in the production of artistic commodities and in the quality of saving is a serious condition, which cannot but have some grave consequences.

Leader of the Bomday Gazette March 29, 1905. ... ... There is scarcely a magazine to be found today that has not its blood-curdiug stories of crime which in some cases, show how easy it is to become sxpert as a thief and how simple a thing it is to cover up all traces of a crime and so avoid discovery.

At the cheap trashy magazines we are not surprised. But the publication which have always been considered of excellent tone are descending to this objectionable class of story and not one magazine on the stalls this month omits its criminal story.

कर्तव्यभावनाने अंगे सरळता, शुद्धता, निर्मलता, अदीनता, उदारता, धीरता, सत्य प्रशंसा, सत्य प्रेम, न्यायवृत्तिता अने विवेकादिक उत्कृष्ट गुणोने अवकाश क्यांथी होय? स्वार्थ के आडंबरना पोषण खातर गमे तेवां सामान्य, हीन के अधमतत्वोनुं सेवन अने पोषण एज नृप अने श्रीमंत सहुको समूहनुं भावना बिंदु के स्वरुप छे. एकदेशीय प्रवृत्तिना संकुच के अल्प स्वरुपने जमानाना मोहमां महतभाव अपाइ तेनी महत्ता भले वधराय. पण मातुश्री लेखकने तो कर्तव्यनी समग्र भावना साथे ज संबंध छे त्यारे विद्या वर्तन अने अदीनतादिक गुणोने अभावे गमे तेवां मोहस्वरुपने महत् रुप आपी तेनी पाछळ ज मंथन करी समूह मध्य माखनी माफक गणगणतो भ्रमण करे छे. मातुश्री एवां स्वरुप अधम भावोनुं ज पोषण करी अधम भावो ज केळवे छे. महत्ता, स्वार्थ, वृत्तिना रंग के तरंग अने आडंबरना मोह आगळ जमानामां ए भेद लोप पामे छे. उत्पन्न करेल एक तत्व केवां केवां अनेक तत्वोने जन्म आपशे ए दृष्टिथी सहुको विमुख रहे छे. ए सत्य निवेदन करतां मातुश्री कोई विद्वान के कोई कोई व्यक्तिना आक्षेपनो भय रहे छे. पण मातुश्री लेखकनुं हृदय ए जमानानुं हृदय नथी. जमाने जमाने वृत्तिना रंग, स्वार्थ, आडंबर अने महत्ताने बंध बेसतां जमानानां व्यवहारीक सूत्रो ए लेखकना सूत्रो नथी. ज्यां समग्र अने विशाळ कर्तव्यनीभावना होय त्यां आत्मोन्नति अने सत्य प्रशंसा एज उद्देश होय त्यांतो एवी भावना केळवतुं हृदय निरंकुशित अविछिन्न ज वहे. जेथी करी एवां हृदयना भावो समूहनी कल्पनामां न आवतां समूह आक्षेप करे तो तेथी लेखकनी आत्मगतिने शुं रोध? एतो निज कर्तव्यमां ज राचे. जेथी करी जमानानी दृष्टिने अनुसरी भले को अन्यायी के अविवेकी गणवा तत्पर रहे.[1] एकदेशीय प्रवृत्तिमां कोइ कोइ उत्तम के उत्कृष्ट प्रयास कुदरतनां समग्रपणां अने विशाळतामां लघुताने ज

---

१ पाश्चात्य समष्टीकरण अने आर्य एकीकरणनी चालु क्रिया दृष्टि बहार नथी.

पामे छे. आ पत्रिकानी सन्मुखनां चित्रने पाताळना तत्वज्ञना विचारनी[1] संगे जोतां काळगणनामां—सैकापर सैकानुं अवलोकन करतां—जमानानी दृष्टिनो लोप थतां हृदयनी दृष्टि तो समग्र अंग तरफ ज रहे. अने एम थतां आकाशमां तरनारने सहु नीचुं ज देखाय एम हो तो भले! (पाताळनो कथित तत्वज्ञ पण अन्य स्थळे एने अनुसरता ज उद्गार[2] वदे छे.) एम छतां एक

---

(1) It is long ere we discover how rich we are. Our history, we are sure, is quite tame: we have nothing to write, nothing to infer. But our wiser years still run back to the despised recollections of child hood, and always we are fishing up some wonderful article out of that pond; until by and by, we begin to suspect that the biography of the one foolish person we know is in reality nothing less than the miniature paraphrase of the hundred volumes of the Universal History. (Intellect.)—Emerson

आपणामां (जमानामां) केटलो भंडार छे ए सिद्ध थतां पहेलां घणोकाल व्यतीत थई जाय छे. आपणो (जमानानो) इतिहास तदन परिचित छे ए माटे आपणे खात्री पूर्वक छीए: आपणने अनुमान काढवा के लखवाने कंई नथी. एम छतां पण ज्ञानमां वृद्धि पामेलां आपणां (जमानानां) वर्ष मादान गणाती बाल्यावस्थाना (पूर्वकालना) प्रसंगोना स्मरण उपर ज, जई ठरे छे अने ए तडागमांथी आपणे कंई नहि तो कंई चमत्कारी वस्तु हमेशां उपर लावता रहीए छीए. अने एम करतां करतां आपणने संशय थाय के एक परिचित मूर्ख पुरुषनी जीवनमाळा **समग्र काळना इतिहासनां** सहस्त्र पुस्तकोमां अल्पमां अल्प रुपांतर शिवाय खरेखर अन्य कंइ ज नथी—(तर्क)—इमर्सन.

(2) But to most of us society shows not its

समय एवा काळनो पण हतो. हृदय अने मानसिक क्रियाफळ **रामवियोग**-नुं हृदय एवा एक काळनी क्रियानुं ज चित्र छे. तो ए मातुश्री आपना हृदयनुं ज फळ होवाथी ए फळ आपने ज अर्पण करतां आकाशमां पण रंग कल्लोल करतां हृदयना अनिवार्य उपकारना भावो सहित,

हुं छुं

वधुनास्वर्गवासथी

त्रण बाळको सहित

आपनो

आज्ञांकित

लल्लु.

अंजलाव ता. वलसाड.
पोष वद २, १९६२.
शुक्र ता. १२-१-१९०६.

---

face and eye but its side and back. To stand in true relations with men in a false age is worth a fit of insanity, is it not? We can seldom go erect. Almost every man we meet requires some civility-requires to be humoured; he has some fame some talent some whim of religion or philanthropy in his head that is not to be questioned and which spoils all conversation with him. (Friendship.)—Emerson.

समूह (मंडळ) आपणामानां घणांने मुखअने नेत्रनुं दर्शन आपतो नथी, पण पीठ अने पासांनुं ज दर्शन आपे छे. ढोंगी जमानाना समूहमां सरळ (सत्य) संसर्गनुं वर्तन ए एक दिवानापणानो ज आवेश गणाय, शुं एम नथी ? (समग्रपणे) सरळ आपणे भाग्ये ज चाली शकीए. संसर्गमां आवती व्यक्ति मात्र कोइ पण प्रकारनी सभ्यता मागे—(अथवा)—(प्रशंसा के लालनथी) खुश रहेवा इच्छे; व्यक्तिना मगजमां कीर्ति, बुद्धि, धर्म अथवा जीव दया एमानां कंइ कंइ फांका होय छे जे उपर आक्षेप न जोइए अने एम थतां तेनी साथनी सर्व कथा धूळ मळे छे—(स्नेह).—इमर्सन.

मातुस्तवन.

मातु विना कोण पाय, प्रेमरस मातु विना कोण पाय. ध्रुव.
अमृतकूप ए प्रेमी पीतां सहु जन मोटां थाय. मातु.
छाया शितळ एनी सेवे, ते शुं भूले आ काय ! मातु.
नयन आगळथी अळगो न कीधो, ए रस शुं भूलाय ? मातु.
छूटे धारा ज्यां प्रेम कणोनी, हृदय उभरो न शमाय. मातु.
भींजी भींजाइ तल्लीन थातो, शुं ज्ञानसुधारस पाय ? मातु.
कर्तव्यभावना खरी आपे तुं, अगवड वेठी काय. मातु.
नानेथी मोटो थातां थातां, शुं स्वरुप रुप पकटाय ? मातु.

PREFACE.

Though criticisms had been solicited from various persons and bodies taking interest in the cause of literature on the subject of Yogendra and its Appendix B treating the subject of Lekha, Lekhaka anh Lekhaka Vritti it seems none has deemed it desirable to offer any such. Yogendra as a body has its own philosophical base to give offshoots to various creative powers in many directions untrodden heretofore. Some have suggested the form ought not to have been as it is; others have dared express themselves to somebody against the infusion of egoistic spirit as felt to them in the work; some have confessed their ignorance to understand it; some over-pedantic thought themselves justified in declaring its uselessness as being not accessible to masses on account of its heavy price and an understandable matter (1) and many to whom the work had been distributed free, have had not the timo to go through it as it imposed upon them the cultivation of heart and thought power; and some observing a deep silence have shown a quiet disregard in the loftiness of their maintained ennoble spirit; while

(1) It is a pity that uncultivated powers of observation of Heart and Universal System cannot perceive the undeveloped faculties of Gujarat. Heart must have its way and faculties of Nations should try to come up to any noble growth

some of the learned having the sense of duty showed themselves quite apprehensive of the regard due to an author; but some regretted the want of time, some felt the burden of overhanging business at their back and some presumed themselves too busy with other works, engagements or matters. The author has nothing to say as regards these the latter but he simply draws a picture of the prevailing state in Gujarat. But it seems as regards some of the above heresay and personal criticisms, the author should tender his explanation and as regards the remaining explanation should be left to the time. It be generally suffice to say that they all lack the power of observation of the Supreme Universal System and the workings of their own conscience, heart, and mental power. They look every object from a stand point far below this. But that is neither the ideal nor the theory of the author. Every Creative power assumes its own suitable form. Incarnations of God and Appearances of Prophets assumed different

---

of enlightened Heart; if not, Nation shows its utter blindness, and sheer ignorance to comprehend its own Heart through want of perceiving faculties by misappreciation of Heart over which, except Nature, no body has any control. The consequence would be to mar the growth of various faculties as Nation is measured in the way they receive the sort of authors. (For fuller explanation see Yogendra Appendix B.)

and several forms as were best suitable to the time and genius of the renovating spirit. Poetical form suited the elements of Pope in expressing his philosophical dissertations in Essay on Man. To Clive and Shivaji the founders of empire suited the stratagical cunningness while to Washington and some others the manliness of noble spirit. Burke preached broad philosophical ethics in oratory not to be understood by a great many number emptying the oratorial hall and sometimes leaving it quite blank. Those priding upon their own superior intelligence and seeing or rather seeking egotism every where should be better left to their own ignorance of heart in the system of Universal Creation. The very want of inquisitive nature and power of observation gives darkness and egotism to their very nature moving around narrowed grooves and seeing darkness and egotism everywhere. The question of price should require a distinct treatment. And as regards those who have considered it below their dignity to acknowledge even a receipt of the work presented to them out of courtesy, let their heart be judged in the light of Natural Justice. Nature works its own ways and what is required of us, is to enlarge the scope of creative power and the field of observation as the time and circumstances of the case require; to cultivate broad principles of justice, to strengthen the force of heart as regards its moral world and creative fixtures and to ennoble the Universal System in the execution of its various branches. Some souls, considering themselves learned or being regarded as learned but poor

in heart, measure the importance of every object in proportion to its success or circulation. Pitiable Souls ! the case is not such. Neither the success nor the circulation has any place in the Universal Creative Force and its System but the strength of Heart that broadens itself at any time in any generation is something that requires our sincerest thanks and respect. The combined forces of observation and creative powers compel the author to go beyond his proper limits. What is required of a Reader is to measure the nobleness of purity, the force and the creative powers of heart of any author in respect of his ideals, his theories and creatures as produced in his work and not his personality as measured or limited by the time or circumstances.

Naturally every creation displays Art, Heart and Sentiments; and much more so the dramatic creations, as personages or figures in it are brought face to face to the observing eye. In the latter part of 1903 A. D. the author had the occasion to read before a just and learned critic Mr. Keshavlal Harshadrai Dhruva (Gujarati Exmaminer in M. A. Editor of the Sanskrit edition of Mudrarakshasa which as such proves his deeppenetration, the famous Gujarati translator of Git Govind with a peculiar taste and who has given a valuable addition besides other to the Gujarati Literature by a minute examination of Phonetic Process) the incomplete part of the first Act of Ram Viyoga. With due deference and with

tenderness of heart he diffidently suggested that the part read would perhaps transgress the rule that "The Action of the Play must be continuous, events should succeed one after another and the whole must be perfect and interesting." In respect of this the author desires to observe that the above rule is not complete. To it must be added "or either the Action of the Heart in a play, must be ennobling, successive, continuous, perfect, interesting and tending to raise the working elements of the Heart higher and higher having the vitality to strengthen the Heart in its ennoble workings." The first principle applies to actions of every day common place or occasionally bright creatures in any play, while the second principle applies to motions of Heart of exceptional creatures even as exception to creatures of occasionally bright routine in any generation. In noble persons we are led to look to his heart or rather to the workings of his heart while in common persons we are attracted to observe their actions, motives, emotions sentiments and successive events giving rise to such motives, emotions sentiments and actions. In case of noble personages we have so firm a faith in their deeds and actions that we are never led to look to their motives and emotions. Their personality engrosses us heart and soul and insures us that every thing done by them is the best and the noblest, and that it can never be executed in any other better way. As to this our faith is never shaken nor does our faith go to think otherwise. Hence our heart longs to interest itself in the

heart of such noble persons. The very sense of their duty eradicates emotions and sentiments and gives us only noble truths and lays down for us a straightforward path to rise to the highest pinnacle of life. We seek no actions, no motives, no emotions nor a succession of events but we are anxious to know how a noble personage worked up to a particular event what strengthened him in the actions of that particular event, what were the prominent working elements of the heart, what were the surroundings or surrounding elements and how such elements discharged themselves. These are the facts which we most keenly desire to know. If these are not clearly set forth before an observing eye, our heart feels that either a link is broken or missed or some ultra vires matter is introduced or in other words there is something unnatural. In common place creatures, the very nature of their having been trite—notwithstanding their activity and force of action-bringing about a substantial result in any system at any time—inspires in us not any such curiosity. We are satisfied with mere actions, long to hurry over a succession of events, emotions and sentiments, perspire at emotional behaviour or actions, and indulge or take a momentary pleasure in a lucid and pleasing course of conduct or in innumerable drawbacks, frailties, heroic spirit, cunning or clever contrivances, wickednesses, cruelties and such other various actions of human nature. This is our limit, this is our satisfaction and our nature accustomed to such craves

for nothing else. To anything higher beyond the qualities of homesphere, we ascribe a mere exaggeration, an impossibility, not worth bestowing our attention or thought. But this is not the case with those who look up to, practise and accustom themselves to a practice of highest ideals. Hence the second rule that the Heart or rather the actions of the Heart must be continuous, ennobling, successive perfect &c. Long discourses or a lengthy elimination of character otherwise tiresome and obnoxious to the smell of Beauty, attract our heart as a special study of its natural course. They open us many directions, give us much food to think upon and mark out for us an ever unchanging course or conduct of life. The first is to beautify us, the second to ennoble us. It is needless to say the works of the present author are on the second line. And how far he has succeeded in this new line, it is not his to discuss. No doubt to go through such plays requires patience and thought power.

The building up of the Soul into Universal Atman is the essentiality which an average Aryan would ever look to. But sentiments pervading such building up are the sentimentalities which the Westerners would always shun or try to rub out of the Heart. Thus do they certainly neglect the essential growth of the Natural Heart. And for such neglect they would plead the practical end. But the force that lies latent in Atman they cannot perceive. And here lies the difference in modes of thinking, ideals, social

etiquette and various other systems. It would be an interesting study to enter into the philosophy of differentiating the Western and Eastern Plays, their ethics, metaphysics, religious system, constructions of Heart and creative powers, society, politics, home ideas and ideals, sentiments, motive power, emotions mode of thinking, execution of work, activity, progress of nations, predominant spirit of each generation and their effects as regards the Universal System. The system of Universal philosophy can be easily unfathomed and a real looking glass can be laid open to the public.

Anjalav
10th May 1905.

L. N. Desai.

प्रस्तावना.

अनेक स्वरुपमां विलोकाता आवेल धर्मस्वरुप रामचंद्रजी हजी पण आर्यावर्ते त्रिस करोड हृदयमां अनेक रुपे विराजे छे. रात्री अने दिवस इश्वर स्वरुप रामनो याप आर्यावर्ते स्फुरी रहतां—शांति, धैर्य, विवेक, प्रेम अने धर्मनुं पोषण करतां—परम गतिदाता थइ पडे छे. अंत्यज ज्ञाति पण "रामला" अने "लखमणा"ना हीन ज्ञातिमां प्रचलित व्यवहारीक भावनानां हलकां स्वरुपमां पण गोपादिकना वेशथी एमनुं ज यशोगान करे छे. त्यारे अनेक काळथी तत्वज्ञो, भक्तो, महर्षिओ, लेखको, कविओ अने विद्वद्वरोए एमनां हृदयक्रियानी गतिनुं पोषण अवलोकतां एमनां इश्वरस्वरुप हृदयनी जुदी जुदी उन्नत गतिओ अवलोकी ए गतिओने अनेक स्वरुपमां चित्री छे. तेमां **आलेखक**नो आ अल्प प्रयास एक वधु उमेरो छे. एनी जरुर हो वा न हो, पण **आलेखकनां** हृदयगतिनुं ए शांति चित्र छे. हृदयरुपी कुदरतनो पडघो छे. पळपळे उद्भव थती अनेक बाळ चेष्टामांनी ए एक बाळ चेष्टा छे. एवी बाळ चेष्टा फळदाता नथी तेम ज हानीदाता पण नथी. उद्भवनी साथे ज लय ए एनो धर्म छे. अने एवा धर्मनुं अवलोकन ए पण एक अनुभव आनंद ज छे. अने एम हो वा न हो तोपण **आलेखकने** एवी चेष्टा फळ के हानी रहित आनंदरुप ज रहो !!!

अंजलाव

फाल्गुन वद १० गुरु १९६१.

३०–३–०५

विरहांजली.

हरिणी.

समय ! समये क्रिया जोतां प्रिया हरी आज हा ! ! !
हृदय ठरतुं शांतिस्थाने उडी गयुं वा, न, वा ?
रसभर डुली प्रौढा भावो पीधा शुं न, वा ? न, वा ?
समय ! विरहे जोतां जोतां हुं, ए,—रहुं को ?—न, वा ! ! ! १

"गृहिणी घरशुं आजे ना ह्यां" वहे जळ नेत्रशुं
समय ! समये स्तंभी हृदे पुछे "थयुं केम शुं ?"
हती न हती हा आर्या आजे ! "हवे गइ धाम क्यां ?"
रसभर दीधा प्रेमी भावो, "जुए शुंय बेसी त्यां ?" २

मलिन तन ज्यां दृष्टि ना दे, जुए—शुं हृदे—क्रिया ?
भ्रम रहित हा आर्ये !—जोतुं हृदे गति जे प्रिया.
निरमळ शुणे वाणी तारी दीधा दीन भाव ज्यां
हृदयभर त्यां शांति जोतां न व्यर्थ तुं हुं क्रिया ! ! ! ३

गृहिणीरस जे गर्जी गर्जी उरे खीली उठतो
विफळ वमळे जोके थातो हृदे क्रिया शुं भूलतो ?
हृदयरस जे उरे पीधो कादि नहि लुपतो
सुगति भरशे क्रिया कार्यो उरे न हुं झुरतो. ४

स्थिर हृदयना श्रद्धाभावो पति उर भाळती
स्थिर थइ जतां शांतिभावो क्रियाशुं न फाळती ?

शम हृदय तुं आर्ये आजे दृष्टि पथ कोक छे
श्रवण पडतां ग्रामे वाणी न हृदय शोक छे. ५

तनभर खीली प्रौढा शांति प्रकाश शुं अर्पती !
शितळ वपुए व्हेतां व्हेतां क्रिया सहु गर्जती !!
दुर समीप–ए भेदो, ना त्यां–अभेद हृदे भर्युं
निरमळ तुं हुं शांतिए, ए अखंड हृदे ठर्युं !!! ६

तन समीप ना तोए तारुं, हृदे शुं हुं भूलतो ?!!
समय समये पीधी शांती जइ तुं हुं डुलतो !
विरही तनथी आर्ये ! तोए अखंड हुं भाळतो
हृदयरसनी वर्षा धारा समो नहि खाळतो. ७

[1]वैशाख सत्तावन मृत्यु जोयुं
हृदे समे ते वळी शांति मोह्युं
जोई क्रिया जे कहुं स्वप्न मध्ये
मिथ्या न थातां, गति सृष्टि सत्ये ! ८

आर्ये ! हृदे ए शुचि भाव जाणुं
जोया हृदे भाव हुं सत्य मानु
स्वप्नो हृदे, चेष्टित अंग कूहेजे
भावि क्रिया सृष्टिनी सत्य लेजे ! ९

शांति सुपोषे वळी शांति जोतां
आर्ये तुं हुं भाव मिथ्या न होतां
कर्तव्य अंगे गृहस्थान राखे
आत्मागति नैत्र असत्य भाखे. १०

---

१ इंद्रवज्रा के उपजाती.

જોતાં પ્રદેશો હૃદયે વશ્યા જે
ખેંચે ગતિ કાળ ન આત્મ કે તે
પ્રભાવ આત્મા કહુ શાંતિ જોયે
વેશો ભિન્ના , ના, ગતિ ભિન્ન હોયે. ११

ક્રિયાગતિ એ સહુ શાંતિ પોષો
ભાવિક્રિયામાં ન જ હોય દોષો
હૃદે જહાં નિર્મળ ભાવિ કૂહેતું
ક્રિયાગતિના ઉચ્ચ ભાવ લે તું. १२

આર્યે વિનોદ તું હું હ્યાં સંભારું
"પત્ની મિત્રે કોણ અધિક વારુ"
જ્યાં મિત્ર હુતો મુજ ભાવ પોષે
આર્યે ! હતી દ્વિતીય, ના હું દોષો ! १३

હા મિત્ર ! શુદ્ધિ શુચિશું ઘવાયો
આર્યે ! તુ શાંતિશું હું તો છવાયો
હા મુગ્ધ હૃદે ન વિકાસ પામ્યું
વિશાળ—ના એ—અંધકાર વામ્યું !!! १४

સત્યે હતું મુગ્ધ હૃદે ખરું એ
શુદ્ધિ શુચિ અંગ કહું હું કો એ ?
હા સત્યનો ગ્રાહક એહ થાતાં
શાંતિ વ હર્ષો હું કદિ ન માતા ! १५

વાતી ગતિ જ્યાં હું હૃદેશું એવી
મિત્રે ગતિ આત્મદશા શું કૂહેવી !!!

हा मुग्धतामां व्यग्रता ज व्यापी
प्रौढा प्रदेशो सहु दीध कापी !!! १६

काळे गति एह संभारी जोतां
आर्ये! न विशाळ समग्र खोतां !!!
शुद्धि ज भावो सुसमग्र वातां
एकी कहे आपण क्यां न थातां ? १७

एकीतणा भाव हृदे हुं केशे
ज्यां मित्र नाहि, तुंय शांति पोषे
आचार विचार तुं प्रौढ भाळे
आर्ये ! गति प्रेम हुं कोण खाळे.? !!! १८

ऊठंती स्फुर्णा कृषिगृह वासे
योगो न आर्या मुज अंग पासे
ज्योतिष बोल्यो तम अंग खोशो
स्फुर्णा तुं आर्या सहु एज वेशो. १९

मिथ्या गणी व्हेम खरा ज काळे
डुल्यां हतां काळशुं शांति भाळे
त्रिकाळ स्वप्नो वदी काय भंगो
थायुं न तोए न तुं अंग संगो. २०

तु मौन्य शांतिशुं पीधा प्रभावो
प्रगल्भ विनोद! कहुं शुं भावो ?!!!
याच्या न लीधा बहु संग तोए
अर्पे तुं हृदे कहुं शांति कोए ? २१

क्रिया तुं व्हेती नहि संग विद्या
हदे क्रिया ज्यां—लहुं कोण विद्या?
शांतिप्रभावो न अज्ञात जोती!!
शांतिस्वरूपे उर स्वाद व्हेती!!! २२

उद्गार तारा नियमित थाता
निरीक्षणे बोध विना न जाता
तारे न कहेवुं, नहि हुंथी लेवुं
वाणी विना मास गया शुं कहेऊं?!!! २३

विनोद छेल्लो ज्वर काळ ज्यारे
"आनंदी नाचो"—"शिद हुंय राचो"
हास्ये कहे शांत हवे विरामुं
थाशे शुं? आनंद!—'विना'—तमारुं २४

काळे क्रिया—काळ वहे—तुं व्हेती
आनंद देशे शिद उर केती?
विनोद वाणी वदी हास्य देतां
आर्ये न संयोग फरी ज व्हेता!!! २५

शय्याशुं व्याधी, रही आठ दिनो
माया न जोतां रहु अंग भीनो
शांति व शुद्धि तुज प्रौढ जोये
योगो न झुरे हुंशुं शांति होये. २६

आर्ये, तुं, आर्ये नहि.कांइ इच्छा
सादाइ मोही न कहिंय मंछा!

विवेक सादुं रुप ज्यां हुं भाळुं
मिथ्या भमे शें जीव सृष्टि वारु ? !!! २७

खील्या हता भाव पितुगृहे जे
स्वामी समीपे रुप मुग्ध ले ते
उग्रा न कोदि दृढ भाव वाळी
काये न कांइ तुज कांति भाळी. २८

आलाप श्याणा उर क्यांय थाशे
क्षोभी हृदे पुछतुं नष्ट आशे !!!
आघात पामे मन तोय मारु
शांति अखंडा चित लेती चारु. २९

अखंड शांति तुंय एज पीजे
आनंद आनंद हृदेशुं लेजे
धारा अखंडित अभेद देजो
आत्मागति त्यां कुण भिन्न क्हेजो. ३०

आर्ये ! हजो एज गति तु संगे
आत्मा तणी ल्हेर खीलो उमंगे
देहो न देशे उर एज देशे
शांति सुशांति सहु अंग पीशे !!! ३१

इति कल्याण ॥

प्रशस्ति.

बंधु तारो विदेश गयो छे भाळ जाणी न जाणी
धर्म ए अवलंबी चाले गति दुर्गति शुंय आणी ? १

नाना एवुं कदिं न धरशो धर्म ज्यां वाप ले छे
आत्माकर्तव्यधर्म जोतां स्व तत्वो उन्नति ज दे छे. २

लक्ष्मी देह देश वियोगो ज्यांय ज्यांय झुरे को
भावे कुहेजो "कशुं न वळे" आत्मवियोग रहेजो. ३

[1]स्वरुप गणना पाताळ लेतुं देश दीनतामां डुले
गोथां खाता भ्रमणा सेवे आत्मरुप आज भूले !!! ४

दीनता तमारी देश डूबाडे देहनुं शुं ज कहीए
हीणां थातां हीणां करतां एम अधो पात दईए. ५

दीनता डूल्युं सर्व भूल्युं एम को ना विचारे
नृप रंक ने श्रीमंत जाय तणाया ल्हारे ल्हारे. ६

बाळ भावो बाळ वदता बाळनो वास जोये
क्रांति काळनी धारी धारी हास्य बहु बहु ज होये ७

नाचे सहुको वृत्ति रंगमां कोण तत्व विचारे ?
घेर्या काळे यद्वा तद्वा बोलता बिन सुमारे. ८

कार्य तो तुलना पामे काळे सहु मूल्य देशे
हृदय ज्यां क्षोभ न करतुं मूल्य ए शुं ज केशे ? ९

कार्य न एवां बाळ संगे कर्तव्य जो तुं जागी
ज्यारे ज्यारे हृदय स्फुरे प्रेम केजे तुं मागी. १०

---

१ आर्य स्वरुप.

मूढो कंइको मूढतामां मूढ जो भाव जोये
प्राणी बिचारां किचड काळनां यो क्रिया क्यांथी जोये?॥॥ ११

धीरे धीरे तोये तारे भाव भाविकशुं देवो
ए बिचारां तृषा धरतां शोकतां न योग एवो. १२

पूर्वनो उदय जोतां पश्चिमे तमस्प्रवेशे
व्हेवाकळा भूलो गोते मिथ्या गर्व को न कहेशे? १३

अंधकार उत्पत्ति शोधे फांफां बहुए मारतां
क्रिया सृष्टिनी उंचे मूके कार्य शुं ए सारतां? १४

काळ निद्रामां हिंद घोरे प्रकाश शुं ए पामतुं?—
मथी माथी प्रकाश अर्पे सहु ए व्यायामतुं. १५

काळनुं कार्य काळ करे छे आपणे स्वधर्म जोवो
उंघे जागे मूढ रहे एशुं संयोग न लेवो देवो. १६

ए संदेशो बंधु कहेतां नित्य आनंद लेजो
आनंदे रमतां रमतां काळ शुं काळ देजो. ॥॥ १७

॥ इति शिवम ॥

कल्याण.

रामवियोग.

ॐ

श्री

रामवियोग.

अंक १ लो.

शार्दूलविक्रीडित.

कै कै वाक्यशरो शुणी न जळतां, ऊर्मि रमे राम ! तुं
बांध्या मोह दशांग त्याग करतां, शांति वहे क्षेमशुं
त्यागे ना ज विवेक काय पडतां, सौ क्षुद्र आशा तजी
त्राहि त्राहि पुकार हा दशरथे, शुंगे शुं शुणे वळी ? !!!

नान्द्यन्ते.

सूत्रधार–(नेपथ्य तरफ दृष्टि करी) नटी ! नटी ! (जवाब न मळवाथी) मारिश ! मारिश !

पारिपार्श्वक–(प्रवेश करी) भाव, शी आज्ञा ?

नटी–(प्रवेश करी) आर्य पुत्र, जय ! जय !

सू०–प्रिये, केम आजे विवेक बहार मोटेथी साद करवानी जरुर पडी ?

न०–आर्य पुत्र, हुं कैकेयीनी भूमिकाना अभिनयनी आत्मपरीक्षाथी कसोटी करती हती. माटे अविनय क्षमा करशो.

सू०–हा दुर्दैव ! हा दुर्दैव ! रामभद्रने पण आम !!!

(नेपथ्ये)

इंद्रवज्रा.

रामे रमे आ दश अंग मारां
समर्पु भारो गुण उच्च तारा
आनंद योगी हु नचित लेउं
तेजो सुषेवे सुख शुं न कहेवुं ?

पा०—भाव, **रामवियोग** नाटकनी दशरथ भूमिका रंग भूमि उपर आववा तत्पर थइ रही छे, माटे हवे शी आज्ञा ?

सू०—त्यारे तो नटी अने तमो पण सौसौनुं कार्य चोकस संभाळो अने हुं पण काळगतिनां नश्वर चित्रोनी भूमिका उत्तम दर्शावाय ए जोवा इच्छुंछुं. तमो जाओ अने हुं पण रही सही व्यवस्था करी दउछुं.

(सर्वे जाय छे).

इति प्रस्तावना.

प्रवेश १ लो.

स्थळ—दशरथ प्रासाद.

दशरथ—(स्वगत).

मालिनी.

हृदय मुज दबातुं रात्री विकाळ घोरे
अवयव हीन अंगो क्रूर के श्याम, भे दे
सरित जळ न देखुं, खीण खावा शुं धाये
कळकळ रडी काको घोर कृतांत का दे ! !

हृदयने स्वस्थता नथी. भयना भणकारा वागे छे. मृत्यु डोळा घुरकावतुं होय एम जणाय छे. अने आज केटलोक समय थयां विनाकारणे हृदय बेसे छे. आवां आवां अशुभ चिन्हो रात्रीदिवस हुं अनुभवतो आवुंछुं. एनो प्रतिकार शुं? (विचार करी) प्रतिकार मात्र एटलो ज के रामने युवराजपदे स्थापित करी निश्चित थई रहेवुं. राम कुळभूषण छे. शौर्य अने शीलमां अद्वितीय छे. खरेखर राम! मारो प्रेम तारा तरफ उभाया करे छे. अवयव मात्रो एज प्रेमरसमां लद्बद रमी रहतां अखंड वहता शांतध्वनिनी धारा प्रसरावी रहे छे. अने संकल्प वारंवार आनंदरंगमां स्फुरी रहे छे के—

रामे रमे आ दश अंग मारां
समर्पुं भारो गुण उच्च तारा
आनंद योगो हुं नचिंत लेउं
तेजो सुषेवे सुख शुं न कहेवुं?

(विचारमां पडी जतां) उतावळ करवामां प्रेम, हद चूकावी जतो तो न होय? (पुनः विचार करी) ना ना एम न होय. पितुवत्सलता कदापि निर्मर्याद उभाय एम छतां पण

शिखरिणी.

नथी कोणे निरख्युं मंद मंद हसी जे मुख रह्युं
नथी कोणे पीधुं अमृत वहतुं जे मुख ठर्युं
नथी को वा मोह्युं झमकभर चाले नुर वहे
अहा सर्वे अंगो बळ वीरतणुं ने शील कहे!! ४

आवी रीते पण शुं करवा आगल वधी जवुं जोइये? रामने राज्याभिषेक संबंधी प्रथम मंत्री अने सभाजनोनो अभिप्राय जाणी लउं, केमके

गीति.

मंत्र रहित जे कार्यो निष्फळताए दूषण खचित देतां
सुमंत्रित ए थातां काळगति विपरीत एम सहु कहेतां. ९

(प्रकाश)—प्रतिहार.

प्रति०—(नमन करी) महाराजनो जय.

दश०—सुमंत्रादिक मंत्रीओ मारी समीप सत्वर आवे एम कर.

प्रति०—(नमन करी) जेवी महाराजनी आज्ञा.

(नमन करी जाय छे.)

(सुमंत्रादिक मंत्रीओ प्रवेश करे छे.)

सर्वे—(नमन करी) महाराजनो जय.

दश०—सुज्ञ मंत्रीओ, ठीक आवी पहोच्या. आसन लो (सर्वे बेसे छे) (बेठा पछी) महत् कार्यारंभ माटे मंत्र करवा तमने निमंत्रण करवानी जरुर पडी छे.

सुमंत्र—महाराजनुं निमंत्रण प्रयोजन रहित होय नहि.

दश०—मारी वृद्धावस्था अपरिचित नथी.

सु०—सर्वथा एने अनुकूळ थवा ज हमो विशेष उत्साही, आग्रही, अने खंती थवा प्रयास करता रहीए छीए.

दश०—एज कर्तव्य शीलताथी तमो मारा प्रेमनुं स्थान छो.

सु०—महाराज, आपना गुणानुरुप फळ माटे हमो महाराजना ज आभारी छीए.

दश०राजा अने मंत्रीनो एवो सहचारी धर्म सदा उत्कृष्ट कायम रहो.

सु०—एवी ज प्रार्थना हमो अहर्निश सर्वव्यापक आत्मस्वरुप प्रत्ये करता रहीए छीए. जेथी महाराज मंत्रकार्य संबंधी हमारी जीज्ञासा तृप्त करो.

दश०—शुद्धि अने निर्मळतानी असर हृदय उपर बहु उंडी होय छे. जेथी

एवा शुद्ध मंत्रीओ आगळ हुं मारुं हृदय खोलीश. सुमंत्र, वृद्धावस्था बहु अधीरी होय छे. जर्जरित अवस्थानी लालसा बहु तीव्र अने तीक्ष्ण होय छे. एवी स्थितिमां अशुभ चिन्होना हृदयमां पडघा पडतां मननी गतिनुं चित्र केवुं थई शके ए सहुकोने अपरीचित्त नथी. अगम्य भय, विना कारणनो क्लेश अने संशयात्मकवृत्ति ए मननी गतिना मंथन काळना स्वाभाविक अंग छे. तो एवा अंगनुं क्रियाचित्र केवुं होई शके ए कहेवुं निरर्थक छे.

सु०—नृपवर्य, शौर्य अने शांतिस्वरुपमां भय अस्थाने छे. एम छतां एनां चिन्ह दृष्टिगोचर थतां गमे तेवा भयथी अभय रहेवुं एज कर्तव्य छे.

दश०—सुमंत्र! हा. पण काळगतिनी आकस्मिक स्फुर्णाने कोई अटकावी शकतुं नथी.

सु०—एज स्फुर्णाने साधनभूत करतां शोधनथी अभय रहेवाना मार्ग योजी शकाय छे ए आपने पण कयां अपरिचित छे?

दश०—ए खरुं पण,

शार्दूलविक्रीडित.

व्यापी पृथत्रि अंतरिक्ष नभमां, उत्पाततो ज्यां थता
दु:स्वप्नो वळी रात्रिए हृदयने, घेरी भये पीडतां
झांखो धूम्र रवि जहां नभ चरे, व्याकूळ देहे थतां
हा जाणुं न सुमंत्र शुं ज बनशे, कोपे चढे काळ ज्यां!! ६

सु०—शार्दूलविक्रम, रामभद्र जेवा आपने पुत्र छतां आवी रीते विचारग्रस्त रहेवानुं शुं कारण?

दश०—रामभद्र एमां शुं करी शके?

सु०—रामभद्रनुं असीम शौर्य, एमना तरफ प्रजानो अपरिमित प्रेम, एमनी सरळता, एमना विवेक, एमना विनय, एमनुं औदार्य, एमनी विद्या, एमनुं ज्ञान विगेरे उत्कृष्ट गुणोनुं पृथक्करण शुं जरुरनुं छे?

दश०—सुमंत्र, हा, एनी खबर नथी. पण एथी विशेष शुं ?

सु०—महाराज, जो देहने भय होय तो रामभद्रने युवराजपदे स्थापित करी, सर्व प्रकारना भयने दूर करी अभय रहेवुं ए शिवाय बीजुं विशेष उचित शुं होय ?

दश०—ए खरुं पण रामभद्र हजी किशोर वयमां छे.

सु०—स्थूळ वृद्धिथी ज वयनु माप ए सर्व काळे न्याय नथी.

दश०पण बळ, शौर्य, अने भव्यतानुं स्थान स्थूळ छे.

सु०—तपोबळनो उग्र प्रकाश ए सर्वनो समावेश करे छे.

दश०—अल्प वयमां एवुं तपोबळ क्यांथी ?

सु०—स्थूळ दमन मात्र ज तप नथी. अनेक गुणोच्च समुदाय ए तपोबळप्रभाव फळ ज छे. एवा तपोबळप्रभाव आगळ सर्व तेज निस्तेज थाय छे, एवा तपोबळ प्रभावथी सर्वत्र प्रकाश व्यापी रहे छे अने एवा तपोबळप्रभाव आगळ सर्व प्रकारनां शक्तिबळस्वरुप दासत्व करवा तत्पर थई रहे छे.

वसंततिलका.

को दंडवाळी तप जे समये प्रकाश्यो
हा जोई तेज फरसी भय क्यां न व्याप्यो ?
निस्तेज कीध परशु सहु शांति आपी
आत्मा तपोबळ वहे भय राय! क्यांथी ? ७

ए बळ ज्ञानमां श्रद्धा होवाथी ज विश्वामित्रे आप दशरथरायने रामाश्रय माटे याचना करी ते प्रसंगे आपना दशांगनी भयान्वित हीनता क्यां

विस्मरो ? पण ज्ञान श्रेष्ठ वसिष्ठे ए तमारो भय केवो दूर कर्यो अने तेम थतां राम पराक्रम केवुं प्रकाशी नीकळ्युं ते तरफ तो जरा लक्ष्य करो.

गीति.

विश्वामित्रना यज्ञे मार्या बाळवयमां असुर दमता
राम उर प्रकाश जुओ, स्वरूप अहल्या शिला स्पर्श भरता. ८

वळी महाराज एज विश्वामित्रे, रामभद्रने दिव्य अस्त्र आपी एमना बळनो प्रकाश वधार्यो. एज विश्वामित्र कुळभूषण वधू सीता प्राप्त करवामां साधनभूत थया. अने एज विश्वामित्रना संसर्ग पछी रामभद्रनो उत्कर्ष वृद्धि पामतो रह्यो छे तो एवा रामभद्रनी योग्यता विषे हृदय शंकाशील शा माटे रहेवुं जोईए? जुओ के एमना तरफ दृष्टि जतां ज,

मालिनी.

मधुर फुटती धारा अंग शीतांशु भासे
नयन नुर उल्लासे तत्वना ताप नासे
अभिषिंचतुं हृदे ए, उर आनंद आपे
जय जय भणतां तो शांति पोषी सुस्थापे. ९

केमके

शार्दूलविक्रीडित.

आपृच्छा बहती जहां विनयथी ऊर्मि उभाई जतां
आशिषो धसता रहो अमर ए, आनंद दाता सदा
भाळे ज्यां ऋजुता वळी समपणे, शत्रु भूले शत्रुता
श्रद्धा सत्य स्वरुपमां दृढ भळी राजे खरी प्रौढता. १०

वळी अधिक

न्याये वाक्य प्रमाण सत्य वदतां, व्यापे ज गांभिर्य त्यां
वाधे तेज जहां सुप्रौढ गुणथी, खीली रहे भव्यता
युद्धे धैर्यथी शौर्य ज्यां झळकतुं, दंडे खरी दुष्टता
एवा निस्पृह धर्म शीयल व्रतो, जाणो दीपे दिव्यता! ११

तो

मालिनी.

शिद शिद मन झुरी? राय! आ खेद धारो!
प्रीति तन प्रसरे जे कोण लेवा न धाये?
मन तन फुली इच्छे, मुख श्री क्यार राजे?
कनकशिरसुछत्रे सूर्यशांतिप्रभा जे. १२

माटे नृपवर्य, निश्चित बनी रामभद्रने युवराजपदे स्थापित करवा दृढ संकल्प करो.

दश०—सुमंत्र, धन्य हुं! धन्य हुं! के आवा समय समीप थवा अवसर आव्यो छे.

शार्दूलविक्रीडित.

कीधा संकल्प जे बहु समयथी, पूरा थवा शुं हीसे?
के स्वप्नो लहु आवी भ्रांति करतां, शांति हृदे ना धसे
जाणे छे तुं सुमंत्र हा! तप कीधा प्राप्ति करे पुत्रनी
जोवा कोडीलुं जीर्ण थाय मन आ विश्रांति शांति तणी! १३

वळी क्यां नथी जाणतो के

मंदाक्रांता.

स्वाहा शब्दे घृतयजनथी, घोष पुत्रेष्टि यज्ञे
ज्वाळा ज्योति झळहळी रही, तेज रूपे उभी ते
तेजे विष्णुरुप प्रकटतां सूर्यकांति शुं व्यापी !
देतां प्रेमे चरुफळ मळे पुत्र क्षुधा हुं कापी !!! १४

अहा वळी फळ प्राप्तिनो आनंद केवा घेला घेला करी मूके छे.

चेष्टा अंगे नवनवी खीली स्थान गर्भे रही शुं ?
द्योक्रियाओ गतिफळ कहे बाळ सूर्ये रमे शुं ?
रक्तश्यामा रसधरभूमि नुरकुक्षि प्रदेशे
भावो गूढो उर धसमसी क्यांय शोधे न व्हेशे ? १५

लाडे गेली वळी वळी पुछी कंठ आश्लेष देतां
शुं शुं भावो तनगति कहे मुख उद्‌गंध ले ज्यां
"भाळो को आ शिशु शुं रमतुं" वाणी विनोद पीतां
उभे शांति लदबदी रमे, कोण ना बाळ हा त्यां !! १६

सु०—उत्तम फळप्राप्ति अर्थे बाळक्रियाथी भावोनुं पोषण ए उत्तम पुरुषोना रसनी वृद्धि करी आनंद फळदाता ज छे. एवां पोषणविना रामभद्रनेआदि लई भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्नरुपी पुत्ररत्ननो संभव क्यांथी होय ?

दश०—उन्नत फळ माटे दोहदभावोनुं सारी रीते पोषण करवुं ए अनुभव सिद्ध शास्त्र वचन प्रमाणे चालतां

हरिणी.

स्थिर ठरी उरे ऐक्ये भावे, वधी गति राम हा !
मधुर झरती क्रीडा बाळे रहे मची को न वा ?

निपुण करवा विद्याज्ञाने, श्रमो न भूली दीधा
नृपतिनयथी सत्ता स्थापे, प्रयास फळो सीधा !! १७

सु०—महाराज, हवे तो ए माटे आज्ञा अभियुक्त रहेवा इच्छीए छीए.

दश०—त्यारे तो वसिष्ठादिक महर्षि, अन्य राज्य पुरुषो अने प्रजा वर्गमांथी सभ्य गृहस्थोने आमंत्रण करी एवुं शुभ कार्य सर्वेनी संमतिथी थाय ए माटे सत्वर योजना करो. शुभ कार्यने अनेक विघ्न पीडे छे. माटे तात्काळ जेटली सवड अने व्यवस्था थाय तेटली ज करवी अने ए कार्य कालरोज शुभ चैत्र मासना पुष्ययोगमां ज निर्विघ्ने विलंबरहित थाय एम करो.

सु०—महाराज ! एमां शुं विशेष ?

शार्दूलविक्रीडित.

देतां आशिष स्त्री हृदे रमी रमी, प्रेमोर्मिए धावतां
देशे देश वही रहे गुण गुणो, तृप्ति न शुं आपता ?
वाती गंध त्रिलोकमां "अमर हो" क्यां प्रार्थना तो हमो ?
आयुर्वृद्धि ज पामता बळ गुणे, आनंद दाता रमो !!! १८

दश०—सुमंत्र, माटे तमो हवे शुभकार्य आरंभ करो.

इंद्रवंशा.

भावोक्रिया सृष्टिशुं गर्जती जहां
ऊडे न हृदे लहुं को सुमंत्र त्यां ?
बिंबे जहां पक्व प्रकाश वाधतो
उजास लेवा कहु को न धावतो ? १९

सुमंत्रादिक सर्वे—(नमन करी) महाराजने अभिवंदन करीए छीए.

(सर्वे जाय छे).

दश०—(स्वगत) हा ! खरेखर,

रामे रमे आ दश अंग मारां
समर्पु भारो गुण उच्च तारा
आनंद योगो हुं नचिंत लेउं
तेजो सुषेत्रे सुख शुं न कुहेवुं ? २०

इति प्रथम अंके प्रथम प्रवेश.

प्रवेश २ जो.

दशरथ अंतःपुर.

दश०—(सभामांथी अंतःपुर प्रवेश करतां स्वगत) हवे ज मारो मनोरथ सफळ थयो.

इंद्रवज्रा.

दीधी ऋषिए शुभ संमति हुं
गाया गुणो राम ! समो न को तुं !
क्षत्री वरो जेह हता वीराज्या
प्रेमे भींजाया; उर, ना ज लाज्यां ! २१

अहा खरेखर,

मालिनी.

फरी फरी मुख मुद्रा जोइ ना हुं विराम्यो
नीति नियम तजी हा ! वेश मारो उथाम्यो
प्रहीं कई झट वक्षे प्रेमनो रंग चाढ्यो
मणि भूषित स्थाने ते पछी एह थाप्यो. २२

हृदय एटलेथी ज धरायुं नहि पण

शार्दूलविक्रीडित.

धायुं होंसीलु प्रेम कोड पुरवा, सूर्ये प्रकाशो दउं
शोभे छे विनये छतां अधिक था, आशिष त्यां हुं कहुं,
मोहे जागती वृत्तिओ लय करी, मंत्रीशुं सुमंत्र के
चर्या देशधनादिके वळी करी राजाप्रजा रंग दे. २३

आटलाथी पण जाणे पर्याप्ति थई न होय तेम राम तरफ मारुं मन उभाया करे छे. हजी पण कहेवानुं रही गयुं होय, रही गयुं होय एम मनोभाव उंचकाया करे छे. अने रामभद्रने पाछा बोलावुं एम हृदय वेग तरस्या करे छे. आवो उभरो शमी शके एम नथी. चाल त्यारे बोलावुं ज.

(प्रकाश) प्रतिहार.

प्रतिहार–(नमन करी) महाराजनो जय.

दश०–सुमंत्रने बोलाव.

प्र०–(नमन करी) महाराजनी जेवी आज्ञा (जाय छे).

(सुमंत्र प्रवेश करे छे.)

सु०–(नमन करी) महाराजने अभिवंदन करुंछुं.

दश०–सुमंत्र, रामभद्रथी हजी मारुं मन तृप्त थतुं नथी माटे फरीथी तेमने अहिं तारी संगे निमंत्रण करी लाव.

सु०–जेवी महाराजनी आज्ञा (जाय छे.) (जतां मार्गमां स्वगत).

मालिनी.

अधीरुं अधीरुं लागे रायनुं मन आजे
नवीन बिफळ के शुं कार्यनुं रुप भासे
हृदयगति धसे जे भावि शुं दोडी कूहेती
निरमळ नदी व्हेतां पूरथी ताणी जेती. २४

वळी आ शुं! शुभ कार्यमां अशुभ चित्रना भणकारा! अरे मन! तारां जेवुं चोर कोई नथी पण तारी बाळचेष्टाने हवे अवकाश नथी. (एवे रामभद्र समीप आवी पहोंचतां) रामभद्रने महाराजना आशिर्वाद.

राम०–(उतावळ अने गभराटथी) केम प्रधानजी! तात समीपथी हवणां ज आव्योछुं. !! तात कुशळ तो छे?

सु०–हा. दशरथ महाराज क्षेमकुशळ छे पण आपने पुनः जोवा इच्छे छे.

राम०–एवुं शुं जरुरनुं कार्य निकळ्युं?

सु०–महाराजनी अधीरता शिवाय बीजुं कंइ होय एम मने तो लागतुं नथी.

राम०–चालो त्यारे. (साथे जाय छे).

(दशरथ अंतःपुर समीप आवतां)

प्रतिहार–(नमन करी) महाराज श्री युवराजनो जय!

राम०–महाराजने कहे के राम आव्या छे.

प्रति०–जेवी आज्ञा. (जायछे.) (जई आव्या पछी).

महाराजा श्री तमारी ज आतुरताथी राह जोता बेठा छे. (राम प्रवेश करे छे) (प्रवेश करतां दशरथराये हृदय साथे चांप्या पछी).

दश०–राम, आ आसन उपर बेस. (राम बेसे छे) (बेठा पछी) राम! तुं सर्वज्ञ छतां पुत्रस्नेहथी कंइ उणुं रही जतुं होय तेम वारंवार हृदय तने कहेवा प्रेराया करे छे. सभाजनो समक्ष जे में कंई कह्युं तेथी मन तृप्त थतु नथी माटे ज पुनः निमंत्रण कर्युं छे.

राम०–महाराजनां वचन सर्वथा न्याय आज्ञा ज छे. जेथी ए श्रवण करी एमने अमलमां मूकवा करतां बीजुं कयुं वधु हर्षनुं कारण होय?

दश०–माटे ज मारो मनोभाव तारा प्रत्ये लोभाया करे छे.

राम०–महाराज, सर्वथा हुं अवहित छुं.

दश०—पुत्र, सांभळ.

शिखरिणी.

थतां पितृ कार्यो तन जरजरी भूत ज थयुं
वळी पाळे लोको नीति नियमथी उँर ज खील्युं
अहाहा !! संतोष्या सुर समूह हेते करी करी
वधो हुं आनंदो मन विरमी इच्छे फरी फरी !! २५

मारां सुकोमळ अंग! राज्यधुरा अति गहन छे.

शार्दूलविक्रीडित.

स्वार्थे ये बुबडा करंत नीच जे आवर्तको ज्यां भमे
शांति ढोंग करंत मंडलिक जे, ज्वाळा विषे ज्यां रमे
भीरु, व्हेमी, कठोर, मंद गतिनुं, हैयुं वळी ज्यां वसे
तर्के तर्क वितर्क नष्ट करतां हा! राज्य धुरा घसे !!! २६

एम छतां पण

मालिनी.

समय सूचक रहेतां, प्यादुनो भोग आपे
सरळ गति सु जोवा उंटनुं द्वार राखे
हय बहु बहु उडे तर्क तैयार दाखे
अभय सचिव धैर्ये, शौर्य आनंद आपे ! २७

अने त्यारे ज हे राम!

इंद्रवज्रा.

निःसंगथी निशंक दृष्टि सेवे
राखे सहु राणी ज विवेक टेवे

ने धान्य लक्ष्मी भरपुर राखे
ए राज्य धुरा अति हर्ष आपे ! २८

केमके राम ! राज्यने अंगे ज आपणो देह छे; राज्य एज आपणुं सर्वस्व छे; राज्य एज आपणुं हृदय छे अने राज्य एज आपणो आत्मा छे. ए सूत्रमां ज आपणी सर्व प्रकारनी उन्नति अने आनंद समायलां छे तो एथी अधिक प्रिय कर्तव्य शुं होय ? माटे हे राम ! वधू सीतासंगे उपवास व्रत आचर, निर्मळता अने शुद्धिथी गुरु वसिष्ठनो उपदेश श्रवण कर, अने राज्याभिषेक रुपी कर्तव्य माटे सर्व प्रकारे तत्पर रहे. शुभ कार्यने अनेक विघ्न पीडे छे. अचळ मन पण चलित थई जाय छे माटे निर्विलंबे विघ्न न पीडे तेम कार्यनो आरंभ थाओ !!!

राम०—तो ए माटे महाराज, हवे आज्ञा दो.

दश०—सर्वथा क्षेम हो !!!

सु०—(नमन करी) महाराजने अभिवंदन करुंछुं.

(राम अने सुमंत्र बन्नो जाय छे).

दश०—(स्वगत).

रामे रमे आ दश अंग मारां
समर्पु भारो गुण उच्च तारा
आनंद योगो हु नचिंत लेउं
तेजो सुषेवे सुख शुं न कहेवुं ? २९

इति प्रथम अंके द्वितीय प्रवेश.

प्रवेश ३ जो.

राम अंतःपुर-राम अने सीता.

(कौशल्याना अंतःपुरथी आवी स्व अंतःपुर प्रवेश करतां).

राम—सुशोभने मातुश्री कौशल्यानुं महा उग्रव्रत छे!

सीता—हा, हृदयेश.

शार्दूलविक्रीडित.

कौशल्यासुत कुळभूषण बने, भावोर्मि, ए वाधतां
सुमित्राविरसुत, संग झळके, पुज्योर्मिए सेवतां
आमंत्रित हु प्रेम सेवन करे—मातुश्री ध्यानस्थ ज्यां
शुद्धि शुचि सहुज त्यां निरखतां, आनंदनी शी कथा! ३०

राम—जे राज्यधुरा हवे आपणने प्राप्त थवानी छे तेने उत्तम रीते वहन करवा केळववा जोईतां धैर्य, दृढता अने राज्यनिपुणताप्राप्ति अर्थे आपणने पण एथी वधु उग्रव्रत आचरवानी जरुर पडशे.

सीता—हा, स्वामिनाथ, पण ते माटे क्यां आपणे तत्पर नथी?

राम—ए सिद्ध थाय ते माटे संकल्प कराववा महाराजाश्रीनी विज्ञप्तिथी भगवान श्री वसिष्ठ आपणी समीप आवनार छे.

सीता—त्यारे तो खरेखर,

मत्तमयूर.

थाशे मुने देवश्री आनंद घणेरो
सेव्ये ऋषिसागर, शांतिरुप ल्हेरो
भावो ज्यारे निर्मळ, व्हेशे ज सुवेशे
आत्माज्योतिस्पर्शु, शांति शुं न कूहेशे? ३१

हवे तो ऋषिश्रेष्ठ वसिष्ठनां अर्घ्यपादादिकथी योग्य पूजन माटे व्यवस्था करुं.

राम—हा प्रिये, एटली व्यवस्था करी राख.

(व्यवस्था थइ रहेतां).

सीता—स्वामिनाथ, मुनिश्रीने योग्य सर्व साहित्य तैयार कर्युं छे. मुनिराज क्यारे पधारशे?

राम—सायंकाळ थवा आव्यो. तेओ आवता हशे माटे आपणे तत्पर रहो.

(प्रतिहार प्रवेश करे छे).

प्रतिहार—नमन करी रुषिवर्य, महाराज श्री वसिष्ठ पधारे छे.

राम—प्रिये, ऋषिना मानार्थे आगळ जई तेमने अहिं आमंत्रण करी लावुं.

सीता—शिघ्र पधारी ऋषिवर्यने आहिंयां लावो (राम जाय छे).

(राम वसिष्ठसहित आवे छे).

सीता—(हस्त जोडी नमस्कार पूर्वक वसिष्ठ प्रत्ये) भगवन् हुं नमस्कार करुंछुं.

वसिष्ठ—सुभगे! कुशळ हो.

सीता—ऋषिवर्य, आपना आवागमनथी हमारा आनंदनो पार नथी. स्वामी सहित हमारी पूजा ग्रहण करी हमने सार्थक करो.

वसिष्ठ—सुशिक्षिते, मन कामना सुखेथी तृप्त करो.

(विधिपूर्वक षोडसोपचार पूजन थइ रहेतां).

शार्दूलविक्रीडित.

सीताराम अभेद तेज मळतां, आनंद पी पी ठरुं
बाधे हर्ष अति घणो दशरथे, त्याल्या वळी शुं करुं?

व्यापो तेज अधिक ए भूमि विषे, आनंद देतां सहु
धाओ नष्ट ज कष्ट जे सुरतणां, इक्ष्वाकु भूति कहुं! २१

राम—तपोधन, इक्ष्वाकु कुळने योग्य थवा आपना आशिष सदा फळवता हो.

वसिष्ठ—रामभद्र, इक्ष्वाकु वंशना राज्यासन उपर तमने स्थापित करवा महाराजा श्री दशरथराय अति उत्सुक छे. अने सूर्योदये तमने राज्याभिषेक करवा इच्छे छे. जेथी करी रामभद्र, किशोरवय पछी प्राप्त थती प्रौढावस्थामां तमो प्रवेश करशो. तेम थतां प्रौढावस्थाने योग्य प्रौढगुणोनु ज रटण करवुं पडशे. ए माटे अनेक प्रकारनी मंथन क्रियाना विकट अनुभवमांथी शुद्ध तरी नीकळवा, धगधगता अग्निनी ज्वाळामांथी प्रसार थवा राखवा जोइतां धैर्य अने हिम्मतनी अनेक प्रकारनी श्रमयुक्त कसोटीमां, शांतिथी प्रसार थवुं पडशे, एवी शांति प्राप्त थाय ते माटे अनेक प्रकारनां साधन केळववां पडशे. एवां साधनथी प्रकाश आपवा आत्मतेजनी वृद्धि करवी पडशे. एवां आत्मतेजनुं मुख्य साधन, रामभद्र, विद्या संस्कार अने विद्यानुं ज्ञान ज छे. माटे रामभद्र! विद्यानी अवज्ञा करशो नहि; विद्यानी किम्मत आंकतां जमानाना प्रवाहने ताबे थई योग्य ने योग्य न्याय आपतां चूकशो के गफलत करशो नहि; तेमज कोईपण विकारने वश थशो नहि. विद्या एज सृष्टिनुं सत्व छे. विद्या एज राज्यनो स्थंभ छे. विद्या एज आत्मानो मित्र छे. विद्या एज आत्मानंद परिपाक साधन छे; विद्या एज प्रकाशनुं अंग छे; विद्या एज **स्वतंत्रता** के स्वतंत्र आत्मानी ज्योति छे. माटे विद्या तरफ लेशमात्र पण, रामभद्र बेदरकार रहेशो नहि; विद्या परीक्षक योजनामां भूल के गफलत करशो नहि; अमुक वृत्तिना चळकाटरुपी मोहना आघातथी क्षोभ पामशो नहि; विद्या-

नां समग्र अने विशाळ अंग तरफ लक्ष्य आपतां चूकशो नहि; एवां अंगने निज आत्मनिष्ठाथी ज झट ग्रहण करी अग्रस्थाने स्थापवामां विलंब करशो नहि. एम थवामां जेटलो विलंब जेटली ढील, जेटलुं आळस्य, जेटलो अहंभाव, जेटली सरळतानी खामी, जेटली असूया, जेटली बेदरकारी तेटली ज आत्मानी उर्ध्वगति तरफ खामी दृष्टिगोचर करावे; तेटली ज व्यवहार दक्षतामां गफलत प्राप्त करावे; तेटली ज न्याययुक्त सत्य प्रमाण स्थापित करवामां आवरणथी हीनता प्राप्त करावे; तेटला ज प्रमाणमां ए हीनतानां फळ व्हेम, संशय अने अनिश्चयतानां परिणाम अथडाट, डोळाट, भय क्लेश, गभराट, अकलामणना वमळमां गुंचवे; अने एवी गुंचवणना प्रमाणमां ज राज्य व्यवस्थानी रगेरग एवी वृत्तिओनी रेखा दृष्टि गोचर थई प्रजा समूहनी प्रकृतिमय प्रवृत्तिने पण घसडतां घसडतां कोण कही शके के क्यां ए फेंकीदे? रामभद्र एवीज स्थितिमां अनेक स्वार्थमय प्रवृत्ति सलाहकारना डोळमां आत्मामां आत्मानिष्ठाने अभावे नेता स्थान प्राप्त करवा मंथन करे. विविध प्रकारनां भय, विविध प्रकारनी लालसा विविध प्रकारनी आसक्ति, विविध प्रकारना भोग अने विविध प्रकारना तरंगी आनंदनां स्वरुप खडां करे. अने राज्यकर्ता पुरुषने पुतळांसम करी पोते ज राज्यनेता थई पडे. एम थतां राज्य पुरुषने अपकीर्ति, कलंक, अपवाद, जनसमूहना निश्वास अने श्राप उपर श्राप व्होरवा पडे. राज्यव्यवस्था अव्यवस्थित थई पडे. अने परिणामे राजकर्ता ज पोताना अने पोतानी प्रजारुपी पोताना ज अंगना तत्वोनो नाश कर्ता थइ पडे. ए करतां विद्याने अभावे बीजुं शुं विशेष अघोर परिणाम होई शके? रामभद्र, एज राज्यपुरुषमां अंतर.केळवणीनी खामीने लीधे निज अंतर तेमज बाह्य अधम तत्वोने वश परतंत्रता विनाशनुं कारण

छे. अंतर केळवणी कोई आपी शकतुं नथी, कोई एनुं भान करावी शकतुं नथी, ए माटे तो निज स्वाश्रय शिवाय हुं कोइपण बीजो मार्ग जोइ शकतो नथी. जेथी रामभद्र, बाह्यतत्वोके राज्यनां बाह्य अंगो के राज्यना साधनभूत अंगो उपर केटलो आधार राखवो तेमनी सलाह तेमनां अवलोकन फळ अने तेमनां अनुभव फळनी परीक्षा करी, ते सर्वेनी अमुक हद नक्की स्थापित करवी; अने तेमने केटले दरज्जे अने केवी रीते क्रियामार्गमां मुकवुं ए स्वाश्रयथी प्राप्त थती अंतर केळवणी शिवाय बीजी कोई पण अंतर के बाह्यशक्ति प्राप्त करावी शकतुं नथी. एवो स्वाश्रय राज्यपुरुष अने उन्नत कुळमां जन्मसाथे उद्भव थाय छे तो एनु रक्षण करी एने उन्नतमां उन्नत प्रकाश स्वरुप उपर चढाव्या करवुं ए कोईपण कर्तव्य बहार नथी. एवुं कर्तव्य अदान थाय, एवुं कर्तव्य अदा करवामां जेटली बेदरकारी रखाय, ए माटे स्वानुभवविना जेटलो परानुभव उपर आधार रखाय, एवा आधारमां पण, परानुभवचर्यामां जेटली शिथिलता, खामी के बेदरकारी रहे तेटली ज स्वाश्रयमां खामी समजवी; अने स्वाश्रयमां खामी एज विनाशना प्रवेश द्वार तरफ थता मार्गनी क्रिया; जेथी एवी क्रियाथी अज्ञात न रहेतां स्वाश्रयनी अभिवृद्धि करवा निरंतर चिंतन करता रहेशो; अने एने परिणामे निज अंतर शांति तेम ज बाह्यतत्वनी शांति राज्य तेमज राज्यना तत्वनी शांति अने ए सर्वेद्वारा अखंड अभेदमय शांति स्वरुपना प्रकाशनी वृद्धि करता रहो. अने एम थतां पहेलां अंतर वृत्तिनो अकळाट अंतर वृत्तिनी अधीराइ अंतर वृत्तिनो क्षोभ अने अंतर वृत्तिनी शिथिलताने शांत करशो. एवी शांति प्राप्त करवा संतोष वृत्तिने केळवशो. संतोष वृत्ति केळववा निस्पृहतानुं

स्वरुप समजवा प्रयत्न करशो, अने एवा प्रयत्नमां वृत्ति अने वृत्तिनी क्रियामात्रनुं पृथक्करण करी आत्माना सतत आनंद स्वरुपना निराकरणपर आवी एवां निराकरणमां ज अचळ श्रद्धान्वित थइ रहेशो. ए मारा आशिष, एवी मारी शुभेच्छा, अने एवुं मारुं संकल्प बळ ए सर्वदा फळवतां हो !!!

राम—अहो ! ज्ञानवर्य, आजे हुं मारुं अहोभाग्य समजुंछुं. आजे ज तपविना तपनुं फळ प्राप्त थयुं समजुंछुं. (हस्त जोडी) सुधास्वरुप! राज्य हुं निमित्तमात्र गणुंछुं. हुं राज्य माटे नथी के राज्य मारे माटे नथी. तो राज्यने अंगे राज्याभिषेकादिक यशो प्राप्त करावनार हर्षयोगो पण मारा मनोभाव बहार होई मने भेदी शकता नथी. सुधास्यन्दिनी शांतिना अखंडितधाराना निर्मळ पयस्नानमां एनुं सिंचन थतां थतां कर्तव्य अदा थतां थतां, भले एवी क्रिया प्राप्त थाओ वा न थाओ ते साथे मने कंइ ज संबंध नथी. पण हुं तो आपना अमृतरसथी ज विशेष तृप्त थतां थतां आनंद रंगमां स्नान करतां धरातो नथी. जेथी निर्मळ शुद्ध स्वरुपना आशिष अने संकल्पबळनां फळ शिवाय विशेष प्राप्त करवा योग्य शुं होय?

वसिष्ठ—रामभद्र, श्रद्धायुक्त दृढताथी परम हर्षित बनुंछुं. ग्रहण शक्तिनी शीघ्रताथी मन उल्लास पामे छे. अने शांतियुक्त स्वस्थताथी मारुं अंग पण शांतिनुं पान करतां आनंद निमग्न थइ रह्युं छे. एम छतां पण मन बोलवा लोभाय छे के एकदेशीय शांतिप्राप्तिमां सिद्धि नथी. स्वदेशीय अने विदेशीय अंगचर्चानी चर्या करवी. अंगे अंगनी योग्यता अयोग्यता विषे विचार करवो. अंग अयोग्य, आसक्तियुक्त के मोहवश लागतां बाह्यअंतर गमे तेवा (देह के राज्य

अने ए बन्नो) अंगथी वियोग अने वियोगनां भय क्लेशादिक सहवा दृढता, धैर्य, सत्यव्रत, विनय अने विवेकनो पण विद्याभ्यास करवो. एवी चर्या न थवाथी आसक्ति अने मोह अगम्य रीते वृद्धि पामतां रहे छे के केदी स्वरुपमां एकाद खूणे दबाइ रहे छे. जेथी एज केदी स्वरुप बंधन तोडी शांतिनो नाश करे छे. एज केदी स्वरुप रौरवी नर्क के दुःख प्राप्त करावनार रावण थई पडे छे. तो ए रावणस्वरुपने पलटाववा, जीतवा, वश करी तदन नाश करवा केटलां धैर्य, स्वाश्रय अने आत्मनिष्ठानी केळवणीमां अवलोकन, तर्कशक्ति अने व्यवहारमां वृत्तिओना पटो जोवावाळी शीघ्रतानी केळवणी पण रामभद्र, लक्ष्य बहार रहेवी न जोइये. स्पष्टिकरण तेजस्वरुपना अभियोगनी वृद्धि करे छे. माटे एवां तेज स्वरुपनो प्रकाश सदा वृद्धि पामतो रहो ! ! !

राम–बुद्धिसागर, वधता जता अनुग्रहथी मनोभाव विशेष उंडाणमां उतरतो जाय छे अने शांतिरुप समुद्रनी चलनक्रियाना अवलोकनथी आनंद वृत्ति पर्याप्ति मानती नथी. एवी चलनक्रियानुं भान करावनार तमारो बोध यथास्थित छे. केमके एज सदा दृष्टि मर्यादामां तरी रहेतां आनंद मार्ग हवेथी विघ्नरहित सुलभ अने प्रकाशमय थशे.

वसिष्ठ–(हर्षयुक्त).

धन्यो अहम् धन्यत्वाम्, अहो तुं प्रेम दाता
धन्य एवी पात्रता, धन्य अहो प्रेम भोक्ता
धन्य ए दशरथने, अहो धन्य ते राज्य अंग
पाळी पोषीने जे प्रेम डुबावे सर्व संग !!!

हवे तो रामभद्र, सीता साथे अपवास करी संयमादिकथी ब्रह्मचर्यव्रत पाळी एवां ऐश्वर्ययुक्त शांतितेजस्वरुपने पोषनार योग्य दृढता साध्य करो अने ते माटे मारा संकल्पनुं श्रद्धान्वित थई चिंतन करो.

राम–(हस्त जोडी) क्षेमस्वरुप, बहु उपकृत कर्यो.

वसिष्ठ–रामभद्र, हवे रजा लउंछुं. उदय काळे सावध रहेशो. एज प्रसंगे हवे आपणो समागम समयोचित छे. हुं जाउंछुं अने तमो कल्याण मय हो. !!!

राम–योगस्वरुप, (नमन करी) हुं नमस्कार करुंछुं.

सीता–(नमन करतां) भगवन्, आपना चरणने अभिवंदन करुंछुं.

वसिष्ठ–(करतल उंचा करी) कल्याण! कल्याण!! कल्याण!!!

(जायछे).

राम–(वसिष्ठना गया पछी) अहो प्रिये ऋषिवर्यनो शुं प्रभाव! खरेखर विश्वामित्रनुं तपोबळप्रभावतेज पण एनी आगळ शांत थइ विलीन थई जाय तेमां शुं आश्चर्य!!!

सीता–हा स्वामिनाथ, सत्य कह्युं.

राम–त्यारे तो आपणे पण आपणां व्रतकार्यमां तत्पर थइए.

सीता–हा स्वामिनाथ. (व्रतकार्यनी तैयारी करवा जाय छे).

राम–(स्वगत).

शार्दूलविक्रीडित.

इक्ष्वाकुकुळकीर्ति सुर वदता, वीरो थयां ज्यां अरे
रक्षे कामदुघा वसिष्ठ तपथी, देही थयो त्यां खरे

देवी ज्यां वळी जाह्नवी अनुकूळा, तार्या सहु पितृने
एवां कुळ दिपाववा समय आ, आज्ञा थइ छे मुने !!! ३३

(विचारमां) रघुकुळने दिपाववानुं कर्तव्य आवी पड्युं छे, (विचारमां ज) हवे शुं करवुं योग्य छे ? खरेखर,

इन्द्रवज्रा,

उद्धारी धारुं भूमि आ समे हुं
आनंद पामे जनदेव चारु
सुसिद्धि अर्थे सहु देव देवा
जाणो करुं हुं सहु कार्य सेवा !!! ३४

(एज संकल्प बळना विचारमां अने विचारमां ज जाय छे.)

इति **रामवियोग** नाम नाटके रामगुणोद्दिपन नाम प्रथमो अंक.

अंक २ जो.

प्रवेश १ लो.

कैकेयी प्रासाद.

मंथरा–(श्रवण उपर कंइ पडघा पड्या होय एम) आ कोलाहल शानो हशे? (विचार करी) चाल अगासी उपर जई जोउं. (प्रासाद तळ उपर चढे छे, (चढीने जोतां) आतो कंई उत्सव होय एम जणाय छे. लोको आनंदमां आमतेम दोडादोड करी रह्याछे. कौसल्याना महेल आगळ पण भीड घणी जणाय छे. (एवे कौशल्यानी एक दासीने जोतां) अली धात्री! आज आ शुं छे?

धात्री–केम अली मंथरा! तने खबर नथी?

मंथ०–शेनी?

धात्री–आ श्रेष्ठ चैत्र मासना पुष्य नक्षत्रमां महाराजा श्री दशरथ काले रामभद्रने युवराजपदनो अभिषेक करनार छे तेनी वधामणीमां देवी श्री कौसल्या धर्मदान करे छे.

मंथ०–(करमायले मुखे) अली, तमारुं तो भाग्य फळ्युं!!

धात्री–अली मंथरा! आम केम बोले?

मंथ–०एतो हुं हसी. चाल अली मारे तो हवे काम छे. (एम कही चालवानुं डोळ करे छे).

धात्री–हुं पण जाउंछुं. (जाय छे).

मंथ०–(प्रासाद तळ उपरथी उतरतां उतरतां स्वगत) आ राडनुं नसीब तो फळ्युं. राम राजा थवाना एटले कौसल्याना माननो तो पार

नहि. एटले एनी रांड दासीओ आगळ हुं तो कंई लेखामां ज नहि तो ?!!! हवे मारो भाव पण शुं ? (विचार सुझी आवतां) रांडोनां पेट बळे ! एमनो घाट घडुं ! ए रामे पण मने कठोर वचन कही संतापी हती. अने कौसल्या तो देवी कैकेयीनी शोक्य एटले अमारापर इतराजी वधवानी. ए बधां सुखमां म्हालवानां अने हुं अने देवी कैकेयी बेठां बेठां जोवानां ! ए केम बने ? (विचार करी) एमनो घाट घडुं. देवी कैकेयी उपर ज्यांसुधी महाराजा श्री दशरथनी महेरबानी छे त्यांसुधी सघळुं बने पछी कंई नहि. माटे इलाज तो तरत शोधवो जोइए. (विचारमां) हवे शुं करुं ? (एवे मार्ग सुझतां) हा ! हा ! हवे भान आव्युं. महाराजा श्री दशरथे शंबासुरना युद्ध वखते देवी कैकेयीने महाराजाश्रीनुं रक्षण करवा माटे बे वरदान आप्यां हतां. देवीए ए वरदाननो उपयोग कर्यो नथी. लाग तो ठीक छे. (क्रोधमां) रांडो भोगवो तमे सुख! हुं तो जोउं! तमने रंजाडुं त्यारे मारुं नाम मथरा !!! (एवा हृदय आवेशमां मंथरा कैकेयी पासे धमधमती आवे छे) (मंथराने आवा विचित्र वेशमां जोई)

कैकेयी—अली मंथरा ! आजे तने शुं थयुं छे? तारुं मुख क्रोधान्वित केम? तने कोणे दुभवी ? तारुं शरीर आटलुं बधुं उग्र केम?

मंथ०—एमां तमारे शुं? हमो दासी मनीखनी फीकर तमारे शुं करवा जोइए ?

कैके०—मंथरा ! तुं आम केम बोले छे ?

मंथ०—एम नहि बोलुं तो केम बोलुं ?

कैके—तने दुभवनारने सजा नथी थइ ?

मं०—त्यारे तेतो देवी ज जाणतां हशे तो !

कै०—एवी तने कोणे दुभवी के जेने शोषवुं पडयुं नथी ?

मं०—ते दिवसे रामने शुं कीधुं हतुं ?

कै०—राम मने घणो प्रिय छे. वळी राम अविवेकी के अन्यायी नथी तो अविचारी होई केम शके ?

मं०—बळ्युं ए डहापण. राम सत्यानास वाळवा बेठो छे ते राम व्हालो !!!

कै०—(रोषयुक्त) मंथरा ! मंथरा ! ए तुं शुं बके छे ?

मं०—(रोषयुक्त तोरमां) हुं बकी ! बकी !

कै०—रामे शुं सत्यानाश वाळ्युं ?

मं०—हजी तो अजाण्या थइ पूछेछे !

कै०—तारा सम ! मने कंइ खब्बर नथी !

मं०—समने सगरा जवा दो ए तो जगजाहेर छे.

कै०—मंथरा ! हुं सत्य कहुंछुं के मने कंइपण खबर नथी. फरी पण तारा सम लइने कहुंछुं के झट कही दे.

मं०—जेने पोताना स्वार्थनी काळजी नथी तेने कहेवानुं शुं ?

कै०—मंथरा ! हुं भरतना सोगन आपीने कहुंछुं के झट बोलीदे.

मं०—नगर बधुंय जाणे अने तमने खबर नहि ए पण नवाइनी वात !

कै०—एवुं शुं होय के जे नगर लोक जाणे अने हुं न जाणुं ! महाराजाश्री माराथी कंइपण छानुं राखे नहि.

मं०—त्यारे तो जाणतां हशो. नाहक मने बकावोछो शुं करवा ?

कै०—(हृदय लेवाय छे) मंथरा ! हुं कंई ज जाणती नथी. खरेखर मने कही दे. महाराजा पासे एनो बदलो हुं लइश.

मं०—जे मुख बोले छे ते दुर्मुख नहि थाय !

कै०—(अकळाइने) हुं प्रतिज्ञा उपर कहुंछुं के एमां लेश पण तफावत नहि पडे.

मं०—एवी प्रतिज्ञा तो केटलीए गाडीने पैंडे अवटाया करे.

कै०—हुं भरतना कसम लइने कहुंछुं के महाराजा पासे एनो बदलो लईश. आ सृष्टिमां भरत करतां मने कोई अन्य प्रिय नथी.

मं०—जो जो हं !!

कै०—शुं हजीए विश्वास नहि ?

मं०—भरतनां ज हितमां तमारुं हित के नहि ?

कै०—एमां वळी प्रश्न शुं ? भरतथी ज बधां रुडां वानां.

मं०—त्यारे भरतनुं दुर्भाग्य ए शुं भरतनुं अहित नहि ?

कै०—भरतनुं दुर्भाग्य केवी रीते होइ शके ?

मं०—देवी ! महाराजा श्री दशरथ तमारा उपर आटलो बधो प्रीतिनो ढोंग करतां छता काल स्हवारे रामने युवराजपदनो अभिषेक करवा तेयार थया छे.

कै०—(उत्साहयुक्त) अहो मंथरा ! आतो तें घणा शुभ समाचार कह्या एमां महाराजाए अयोग्य शुं विचार्युं !

मं०—(क्रोधथी) मुइ हुं वातनी करती !! हुं जाणती हती के देवीने पोताना लाभ गेरलाभनुं भान नथी !!!

कै०—(उमंगयुक्त) अरे मंथरा ! तने आवो बुद्धि विभ्रम क्यांथी ? अज्ञानता त्याग अने ए वधाइमां आ कंठाभरण ले. (गळामांथी काढी आपे छे) हवी तारुं बीजुं शुं प्रिय करुं ? झट बोलीदे.

मं०—(आभरण फेंकी दइ) अरे मूढ ! मारी बुद्धि गई नथी. हुं खरुं हित

वचन ज कहुंछुं. पण तारी बुद्धि विपरीत थती जोइ खरे हुं विस्मय पामुंछुं !!!

कै०–(रोषयुक्त) मंथरा ! एवां हित वचननी मारे जरुर नथी !!!

मं०–अरे मूर्ख ! झोळीमांथी हुं तारुं हित साचवती आवीछुं. रात ने दहाडो तारुं रक्षण करती आवीछुं. बाळपणथी तारी सेवा करतां करतां मारुं अंग घसाइ गयुं छे; अने अनेक प्रकारे तारुं हित जाळवती आवीछुं. बाळपणमां पण तने रडवा सरखी न दइ स्तनपान करावी तारो आनंद वधारती आवीछुं. मानी माफक तारा लाड पाळती आवीछुं. ते आजे हुं नकामी !! तारुं हित समजुं नहि !! ए पण नवाईनी ज वात !! अरे मूढ, हुं जो एवी तारुं हित साचवती न होत, मारो जो तारा उपर प्रेम न होत, तारां सुख माटे मारुं जो हृदय चीरातुं न होत, तो तने तारां माबाप मने शुं करवा सोंपत? तारुं रक्षण करवानुं मने शुं करवा कहेत? खरेखर मने ज धीक्कार छे के आवां अज्ञानने हित वचन कहेवा मति सुझी !!!

कै०–(दृढताथी) अरे मंथरा ! राम अने भरतमां हुं कंइपण भेद जोई शकती नथी. राम मने निज मातुश्री कौशल्या करतां पण अधिक चाहे छे. वळी भरतनो पण राम उपर अपरिमित प्रेम छे त्यारे रामने युवराजपदाभिषेक करतां आजे मने बीजुं विशेष प्रिय शुं होय?

मं०–अरे बुद्धिहीन ! तुं तारो नाश जोई शकती नथी. शोक्यरुपी इंधनथी कोण बळी भस्म थयुं नथी? राज्यनीतिनी रीतभात तुं समजती नथी. दूध पाइने साप उछेरे छे. ए साप विषरुपी ज्वाळाथी तने विंटी देशे ते जोई शकती नथी. महाराजा श्री दशरथ तारी साथे केवो दगो रम्या छे तेनो ख्याल तने आवी शकतो नथी. अरे कमसमज ! आटलो बधो तुं प्रेमनो दावो

करेछे छतां दशरथराये तने खबर सरखी पण आपी नथी. उलटां भरतने मोसाळ वळावी खीली कंटक काढी नाखी रामनुं हित करवा तत्पर थया छे. अने एमां ज तुं तारुं हित समजे छे तो तारा करतां बीजुं मूढ कोण होय ? दशरथ राम अने कौसल्या ए तारां स्नेहि नहि पण शत्रु ज छे एम जाण. रामना हाथमां राज्य लगाम आवतां शोक्य तारा उपर शुं शुं विटंबणां पडावशे तेनुं तने लेश पण भान छे ? अरे भाग्यहीन! भरतथी तारे छुटां पडवुं पडशे; भरतने रामना एक दास माफक ज रहेवुं पडशे; गाम गाम के जंगले जंगल भटकवुं पडशे. रामने माटे ज लढाईओ लढवी पडशे अने सर्व बळ रामनुं ज पुरुं करवामां वापरवुं पडशे. एथी भरतनी तारी अने मारी केवी बुरी दशा थशे ए शुं तुं जोई शके छे ? तुं जे एक पटराणी, महाराजा श्री दशरथनी मानिती, तेना पुत्रनी एक चाकर करतां पण खराबमां खराब अवदशा थशे तेनुं तने कंइपण भान थाय छे ? अरे मूढमति कैकेयी ! तुं एम ज समज के तारो सघळो वैभव नाश पाम्यो, तारा चाकर नफ्फर ओछा थया, अने तारा खरचमां कापकूप थई. एवी रीते तारी साहेबी घटती जवाथी तें के जेणे एकवार पटराणीनुं पद भोगवेलुं ते तुं मानभंग, प्रतिष्ठा भंग, तेजहीन जीवन केम धारण करी शकशे ? पळपळे तारो वैभव याद आवशे, पळपळे तारी जरुरीआतो नजर आगळ तरी रहेशे, अने ए सर्वे तृप्त करवानुं साधन तारी पासे न रहेवाथी इर्ष्या संताप क्लेश अने कष्टरुपी इंधननी पळपळनी झळळ करती ज्वाळाथी तारो देह रातदिवस बळी बळी तारुं रुप, तारुं शौर्य अने तारा आनंद ए सर्व नष्ट थतां तुं जीवती छतां तारी जातने मृत्यु पामेली ज समज! आवा आवा विचारथी ज्यारे हुं भय अने शोकरुपी दावानळथी बळ्या करुंछु त्यारे हे भाग्यहीन! तुं आनंद पामे छे ए

पण आश्चर्यनी ज वात! भाग्यना नाशसमये भाग्यनो उदय समजे ए पण मूढतानी अवधी! ओ कैकेयी हजी पण कंई समज अने तारुं भाग्य खोळी खोळीने तपासी जो. विश्वास न करवा योग्य वस्तुमां विश्वास करी जे संतुष्ट रहे छे तेना करतां पोताना नाशनुं जलदी तेडुं करनार बीजुं मूर्ख कोण होय? शोक्य अने शोक्य ए स्वभावथी ज एक बीजाना सहज शत्रु छे तेथी ज्यारे एक बीजाना स्वार्थ अथडाय त्यारे पोतानो स्वार्थ छोडे एवो मूढ कोण होय? त्यारे हे कैकेयी! तारुं, तारा भरतनुं अने मारु हित, राम अने कौसल्याना हित आगळ क्यां रह्युं ए तुं बारीकाइथी विचारी जो अने कंइक भविष्यना भयनो ख्याल कर! में तो मारी फरज बजावी छे. हवे तारी मरजीमां आवे तेम कर. हुं तो हवे तारी पासे निर्भय रही शकुं एम नथी.

(कैकेयी विचारग्रस्त थइ जाय छे)

कै०—(स्वगत) मंथरानुं कहेवुं सत्य लागे छे. व्यवहारीक राज्यनीति एज नियम स्थापित करे छे. शोक्यनो भय तो खरो! पाछळथी भरुंसे पस्ताववुं ते करतां आगळथी सावध रहेवुं वधु सारुं, (प्रकाश) अयी मंथरा! तारो उपकार भूली शकाय एवो नथी. खरेखर आजे तें मने मोटा भयमांथी उगारी मारुं परम हित जाळव्युं. मने कंइ सुझतुं नथी. मारी बुद्धि नष्ट थई छे. हुं गुंचवाउंछुं माटे हवे मारे शुं करवुं ते कहे. खरेखर तारा करतां आजे मने बीजुं कंइ प्रिय नथी.

मं०—कैकेयी! हजी तारुं सुभाग्य. गभराईश नहि. उपाय सहज छे. सुभगे ते तारा हाथमां ज छे.

कै०—शो उपाय?

मं०—दंडक देशनी राजधानी वैजयंती ज्यारे इंद्रनी मददे महाराश्री दशरथ गया हता त्यारे देवी तमो पण संगे गयां हतां. ते प्रसंगे शंबासुरनामे प्रसिद्ध थयेला तिमिध्वजना युद्धमां महाराजाश्रीने मुर्छा वळतां महाराजाश्रीनुं आश्वासन करी तमे रक्षण कर्युं. तेथी महाराजाश्रीए प्रसन्न थई तमने बे वरदान मागवा जणाव्युं. पण तमे प्रसंग आवे तेनो लाभ लेवा जणाव्युं हतुं. तो ते बे वरदान आज मागी लो.

कै०—ए वरदानमां शुं मागवु ?

मं०—एकथी भरतने राज्य अने बीजाथी रामने चौद वरस वनवास. एटले तो भरत प्रजानुं प्रेमपात्र थई राज्यमां स्थायी थइ जशे अने रामनुं पाछळथी कंइपण चालशे नहि.

कै०—खरेखर उपाय तो उत्तम !

मं०—देवी ! हवे ढील करवानी नथी. महाराजा हवणां आवशे. तमो क्रोधागारमां जाओ. अने मनमान्या वरदान मागी काल ने काल स्हवारे रामने वन मोकली नचिंत थई भरत साथे सुख भोगवो. क्रोधागारमां काम केम कढाववुं ए तो जाणोछो. महाराजाश्री तमोमां लुब्ध छे, एटले तमने रोषवाळां जोवुं तेमनाथी सहन थशे नहि. तमारां दुःखथी तेओ मुकाइ जशे एटले तमारुं काम थयुं जाणवुं.

कै०—आ हवणां ज चाली. (जाय छे).

मं०—(स्वगत) हु मंथरा खरी के धार्युं करुं.

इति द्वितीय अंके प्रथम प्रवेश.

प्रवेश २ जो.

कैकेयी क्रोधागार.

दशरथ–(स्व अंत:पुरमांथी नीकळतां स्वगत).

इंद्रवज्रा.

जाऊंछुं कैकेयी हुं प्रेम पावा
रामे रुडा आज कईशुं ल्हावा
छे राम प्रत्ये बहु व्हाल एने
आपी वधाई दउं हर्ष तेने. १

(चालतां चालतां) आ रह्यो कैकेयीनो महेल. (महेलनां आंगणां अने अंदरना भाग जोई) आज आम केम ? महेलने हजी रात्रीनो शणगार आप्यो नथी ! शुं प्रिया नथी ? शुं प्रिया अने दासजनो बीजां अगत्यनां कार्यमां रोकाई गयां छे ? (एवा विचारमां महेल प्रवेश करतां) महेल तो उज्जड जणाय छे ! कोई अंदर होय एम लागतुं नथी. नथी कैकेयी के नथी खबर करनार दासजन ! (मोटेथी) प्रतिहारी ! प्रतिहारी !

प्रतिहारी–(दीनमुखे हस्त जोडी) महाराजनो जय !

दश०–महाराणी क्यां छे ?

प्रति०–(हस्त जोडी) महाराज, महाराणी कैकेयी क्रोधागारमां छे.

दश०–महेलनी आजे आवी स्थिति केम ?

प्रति०–महाराज, मने विशेष खबर नथी. (दशरथ क्रोधागारमां जाय छे).

दश०—(स्वगत) आजे ज एणे क्रोधागारनुं सेवन केम कर्युं? एणे कोई दिवस मने ओछुं आववा दीधुं नथी. निरंतर म्हारा आनंद माटे ए तत्पर रहे छे. एम छतां आजना जेवा उत्सवना समये आवी विपरीत व्यवस्था केम? गमे ते हो. सत्वर जई एने मनावी लावुं. (एवा विचारमां महाराजाश्री दशरथ क्रोधागारमां प्रवेश करे छे) (प्रवेशतां ज कैकेयीनी विचित्र दशा जोई स्वगत)

शिखरिणी.

खरे आ शुं दिसे? अनल प्रकटे कुसुम वने!
थतां ढीलां गात्रो विषम विषज्वाळा तन भमे!
भूमि ए आळोटे कवण उर दाहे धगधगे!
वहे अश्रुधारा सरित सुकी तापे तन गळे!!! २

(समीप जई आलिंगन दई प्रकाश)

प्रिये! आटलो बधो रोष शो? नथी वस्त्रनुं ठेकाणुं, नथी तन उपर अलङ्कार के नथी सौभाग्य शणगार! प्रिये! तने कोणे दुभवी? तारुं कोई नाम लई शके एम नथी एम छतां आटला बधा रोषनुं कारण शुं? (कैकेयीना नमेलां मुखारविंदपरथी अधिक अश्रु गळे छे) (करतल उपर मुख उंचु राखी गद्गद कंठे) प्रिये! आज केम तुं प्रत्युत्तर आपती नथी? रोज तुं सन्मुख आवती, मने वधावी लेती, मारी सेवामां तत्पर रही मारा आनदनी वृद्धि करती ते तुं आवी दशाने केम पामी? आ रुषणुं शा माटे? राम के जे तने घणो प्रिय छे तेने युवराज्यपदाभिषेक रुपी शुभ समाचार जाते ज कहेवा हुं अति त्वरा अने हर्षथी तारी समीप आव्यो त्यारे आवा महोत्सवना समये तारो आवो विपरीत वेश केम? (तेम तेम अश्रुप्रवाह

वेगथी वधे छे) शुं शरीरे ठीक नथी? तन उष्ण थई रह्युं छे, उर उंडा निश्वास मुके छे अने हृदय ध्रुस्के ध्रुस्के रुए छे ए सहु शा माटे? तारो कोणे पराभव कर्यो? तने शुं ओछुं आव्युं के जे तुं आम मुखसरखुं पण आपती नथी? एकवार तो कंठआस्वाद चखाड. तारा उपर अपरिमित ममताने लीधे मारुं हृदय चिराय छे. मारुं हृदय पण तारां दुःखथी शोकमय थइ रह्युं छे. प्रिये! प्रिये! तारुं शुं प्रिय करुं? कोने शिक्षा करुं? कोना उपर उपकार करुं? तारे माटे कंइपण असाध्य नथी. तुंज मारुं जीवन छे. प्रिये, रोष छोडी दई गमे ते माग. हुं आपवा तत्परछुं.

कै०—(निश्वास नाखतां) महाराजा! आपने एटलो बधो श्रम लेवानी जरुर नथी. आप शिवाय मारुं कोई अप्रिय करी शके एम नथी. आज सुधी म्हारा लाड पाळ्या ते बस छे.

दश०—(पुनः आलिंगन दई) व्हाली! तुं आम केम बोले छे? तने कंइपण उणु आववा दीधुं छे?

कै०—(दीन मुखे) सत्यवादी महाराजा! आजसुधी गमे तेम हतुं पण हवे समय पलटायो जोउंछुं.

दश०—प्रिये, एम बोल मा. हुं म्हारा शपथ लईने कहुंछुं के तारे माटे गमे तेने गमे ते शिक्षा करवा तत्परछुं. गमे तेने गमे ते उपकार करवा सदा उत्सुकछुं. तारा मनोरथ पूरा पाडवा शिवाय मने बीजो आनंद नथी.

कै०—शीलपुंगव! ए सत्य छे पण आज तो ए सर्व विफळ जोउंछुं.

दश०—मारा प्राण! ज्यां सुधी तारी जीज्ञासा जणाय नहि त्यां सुधी ते विफळ छे एम आगळथी केम कही शके? राम करतां मने कोई

अधिक प्रिय नथी. ते राम तेमज मारां सुकृतना शपथ लई कहुंछुं के तारी सर्व मनकामना तृप्त करीश.

कै०—धर्मपरायण स्वामिनाथ! त्यारे तो इंद्रादिक समग्र देवने समक्ष राखी हुं मागुं ते आपो.

दश०—प्रिये! अवश्य आप्युं. सुखेथी मागी ले.

कै०—(आकाश तरफ जोई) हे देवो! महाराजाश्री पोतानी प्रतिज्ञा पाळवा तत्पर थया छे तेना तमो सर्व अखिल ब्रह्मांडसह साक्षीभूत हो.

दश०—प्रिये एटलीबधी अधीराइनुं लेश पण कारण नथी.

कै०—स्वामिनाथ ए खरुं. पण स्त्रीस्वभाव प्रकृतिथीज अधीर होय छे. शंका अने अविश्वास एना स्वाभाविक लक्षण छे.

दश०—त्यारे भले प्रकृतिने तृप्त करी ले.

कै०—महाराजा ! दंडकाअरण्यमां शंबासुरना युद्ध प्रसंगे मने बे वरदान मागी लेवा कह्युं हतुं; पण में कोईक प्रसंग माटे ते रहेवा दीधां हतां. ए बन्नो वरदान आज सर्व देव समक्ष हुं मागी लउंछुं तो ते आपी आपनुं व्रत सफळ करी अमर रहो.

दश०—प्रिये, ए वरदान सुखेथी आप्यां.

कै०—रघुकुलोत्तम! ए वरदान जो निष्फळ जशे तो एवुं अपमान माराथी सहन न थतां अवश्य हुं आपने हत्या आपीश.

दश०—घेली ! तुं आम केम बोले? एकवार नहि पण अनेकवार हुं आपी चूकोछुं.

कै०—सत्य व्रतचारी ! त्यारे साँभळो. रामने माटे तैयार करेली सामग्रीथी भरतने युवराजपदाभिषेक करी, महाराज, आपनी प्रथम प्रतिज्ञा स-

फळ करो. अने भरत निर्भय राज्य करे माटे बीजी प्रतिज्ञाथी आपो के चीर तथा मृगचर्म धारण करी चौदवर्ष पर्यंत मुनि वेषे जटा सहित राम दंडकारण्यनो आश्रय करी तपस्वी थाओ. मारे जे वरदान मागवां हतां ते मागी लीधां. (दशरथ मुख म्लान थई जाय छे हृदय स्तब्ध बने छे; अने सर्व शून्यकार थई रहे छे) (फरीथी) नृपुंगव! वारंवार वर मागवानो आग्रह करवाथी सर्व देवोनी समक्ष बे वर में मागी लीधा छे अने हवे ज तमारा प्रेमनी परीक्षा जोवाय छे.

दश०–(क्रोधावेशमां) अरे दुष्ट! आ तुं शुं करे?

कै०–कपटचारी राजा! खोटा प्रेममां लुब्ध करी भरतने मोसाळ वळावी खरेखर म्हारुं अहित ज धार्युं छे. ज्यारे मारा प्रत्ये प्रेम छे तो आवा ढोंग अने छळ शुं करवा जोईए?

दश०–(खिन्न थतां स्वगत) हा! धिक्! हा धिक्! (प्रकाश) प्रिये हजी पण तुं नहि समजे? रामे तारुं शुं बिगाडयुं? (एकी नजरे दीनमुखे कैकेयी सन्मुख जोई रहे छे.) (कैकेयीए प्रत्युत्तर न आपवाथी) भले भरत राज्य करे पण मारो सुकोमळ राम वनवासनां दुःख केम सहन करी शके? तुं आटलीबधी क्रूर केम थाय? राम उपरनो तारो मातृभाव क्यां लोप थइ गयो? राम उपरनी तारी लालसा तारी मागणीनी आडे केम न आवी? प्रिये हजी पण तुं कंई विचार कर.

कै०–धर्मस्वरुप! जे छे ते ए. क्यांतो प्रतिज्ञा पाळो के प्रतिज्ञानो भंग करो.

दश०–(शोकग्रस्त हृदये स्वगत)

जाउं हुं क्यांय ज हवे, नारी वचन संतापतां!

(विचारग्रस्त) खरेखर मारां दुर्दैवे आज कैकेयीने विपरीत मति

सूझी छे. दुराग्रह छोडती नथी. हे प्रभु हवे शुं करुं.

विपरीत गतिए उरदाह तीव्र दाझता
विफळ जाय देह हुं जनशुं मुख लाजतां
जाउं हुं क्यांय ज हवे नारी वचन संतापतां!!! ३

(छेल्ली कडी बे त्रणवार बोलतां बोलतां शोकग्रस्त विचारमां शून्य थई पडी जाय छे) (जागृत थतां फरीथी) प्रिये—

कै०—नृपुगंव! वधु सतावो नहि. कहो के भरतने राज्य अने रामने वन.

दश०—आम वेळी क्यां थाय?

कै०—मारे एवा लाड जोईता नथी.

दश०—शुं मारी दया नथी आवती? राम उपर आटलो बधो कोप शा कारणे?

कै०—राजन्! दया म्हारी के तमारी?

क्यांय भूलो राजन्? संग कर्या संग्रामे
रही साथने साथ विस्मृत थाय शुं आमे?! ४
घोर कटाकट युद्ध संगे रही साचवती
ते नारीपर आज दया क्यां लेश नव पडती?! ५
हा! हा!! काळ विषम समय समये भूलावे!!
धर्म दया ने दान आम शुं झट विसरावे?? ६

दश०—(एकाएक वच्चे) हा! हा! आटलीबधी निष्ठुर! रामे हजी गृह बहार पगसरखो पण काढ्यो नथी ते वनवासमां शुं समजे? तेने वळी तापस वेश शो?

कै०—प्रतिज्ञा पाळवामां आटलो बधो क्षोभ व्रतचारीने केम घटे?

दश०—(दीनमुखे) घेली ?

कै०—प्रतिज्ञा पाळवतां आटलीबधी दीनता शूर पुरुषमां क्यांथी होय ?

शिद लडाव्या लाड हृदय हतुं जो काचुं
कहो कोईपण वार कंईए छे में याच्युं ? ७
भरत करे कंई राज्य राम रमत रमी आवे
माना एवा कोड शिदने आम गभरावे ? ८
चौदवर्षनो काळ जोतजोतामां जाय
आवी करशे राज्य शिदने जीव अटवाये ? ९

दश०—जोती नथी के एवां वेण श्रवण करतां ज मारां गात्र शिथिल थाय छे. हजी राम क्यां ? अने एने वळी वनवास शो ?

कै०— इन्द्र साहाय्य होई प्रतिज्ञा पाळतां आटली बधी भीरुता ए पण आश्चर्यनी ज वात !

वाळी राक्षस घाण देव रक्षण कर्युं पोते
शौर्य छे तेह क्यांय झुरो आ जोते जोते ! १०
समरने करो याद भीरुता त्यागी त्यागी
राखे क्षत्री टेक कर्तव्य जुओ जागी ! ११

दश०—हा ! दैव !! हा ! दैव !!

कै०—शूरपुरुष थई प्रतिज्ञा पाळवामां दैवनी मदद मागवी ए केवी कायरता !

कायर क्षत्री वीर नहि कदि थाता जोया !
दशरथ देव सरदार नहि सांभळ्या वळी रोया ! १२
जाणत एवुं धैर्य मुख बिगाडत नहि म्हारुं
वळ्यो शुं क्षत्री घाण ? बेठी बेठी विचारुं !!! १३

दश०–प्राण प्राणनो भेद केम जोई शके नहि ?

कै०–प्राण सर्वत्र छे!!

रामने जेह प्राण, प्राण भरते पण ते छे
ल्हावो ले कंई राज्य अभेद शुं नहि ए कहे छे? १४
दृष्टि दृष्टिमां दोष शुं न्यायनी ए रीति
भरतने आपी राज्य बतावो तमारी प्रीति!! १५

दश०–रामसरखा प्राणीना प्राण माटे दया न होय?

कै०– कार्य दयानो भेद राय भूली क्यां गुंचवाओ
शोभती ए स्थाने कर्तव्ये दया न लावो. १६
चूकतां निज कर्तव्य नरो अधोगति जाता
ए ज्ञानीनी रीत क्यां भुली अज्ञान थाता! १७

राजन्! कर्तव्य साथे दयाने केवी रीते योजी शको?

दश०–हा दैव!! हा दैव!!

राम सरीखुं रत्न गुमावे प्राण मुज केम रहेशे?
घडी पळ हुं ए नहि देखुं तो हृदय दुःख शुं देशे?! १८
शरीर सुकाशे प्राण मुकाशे त्राहि त्राहि भये कांपी!
प्राणविनानी देह आ नारी जुए शून्यता व्यापी!!! १९

कै०–भरतना प्राण नहि.? वळी क्यां भरतने राज्य खुंचवी लेवुं छे.?

दश०–राम युवराज होई शौर्य अने शीलमां कुलभूषण छे.

कै०–महाराजा! ए सत्य छे पण,

प्रतिज्ञा भंगनुं शल्य लागे छे मुजने मोटुं.
पामो भरत ज राज्य वा, न, वा ए सहुए खोटुं २०
दशरथरायनुं वेण अफळ थयुं कहेवातां
भले सेवुं पाताळ अपमान नहि सहेवातां २१

मानभंग जे काय धिक् गाळवी व्यथा ए,
प्राण छतें निष्प्राण दुःख बहु बहु थाये !!! २२
जाणो देह न एक दुनिया छे अनुगामी
काळे काळ कलंक वेणभंगनुं रहे झामी ! २३
रहेशे केम विश्वास वचन आगळ पुत्र थातां
हा! हा! मरवुं बेश धिक् जीवन ए जीवातां! २४
पाळो तमारुं वेण वा छोडी राज्य चलावो
लागे छे बहु शल्य कह्युं थाओ वा न थाओ !!! २५

दश०—धिक्! धिक्! हा दैव! हा दैव! (एम बोलतां बोलतां भूमि उपर पडी मूर्छागत थई जाय छे अने एज स्थितिमां रात्री प्रसार थाय छे).

इति द्वितीय अंके द्वितीय प्रवेश.

प्रवेश ३ जो.

कैकेयी क्रोधागार—प्रभात समय.

(स्हवार थवाथी महाराजाश्री दशरथ हजी बहार आव्या नथी तेथी सुमन्त्र सामग्री तैयार होवानुं विदित करवा आवे छे).

सुमन्त्र—(द्वार आगळ उभो रही). महाराज !

इन्द्रवज्रा.

जाणो थयुं छे सुप्रभात आजे
हाँसे हींडे छे सहु राम काजे
आज्ञा शी? उभो हुं सुमन्त्र द्वारे
मुहूर्त वेळा थई राय! ज्यारे !! २६

पुरजननयनांबुज !

हरिणी.

नगरजन सौ होंसे उभा सजी शणगारने
ऋषिवर वदे मंत्रो वेदे नभे रवि शोभतां
कुळगुरु करी सामग्री सौ जुए भूप क्यांय छे
हय खणखणे हस्ती झुले रसे रस धाय छे ! २७

दश०—(सुमन्त्रवचन श्रवण करे हृदय भराई आवतां गद्गद् कंठे) सुमन्त्र ! मारी स्थिति तने अपरिचित छे. तारां शुभ अने मधुर वचन पण आज वज्र समान थई पड्यां छे !!! (दशरथराय वधु बोली शकता नथी).

सु०—(चमकी उठतां स्वगत.)

दोहरो.

राय केम वदता नथी शुंज हशे आवार
गद्गद् वाणी नीकळी शुं विपरीत समाचार !!! २८

(प्रकाश) महाराज ! मने शी आज्ञा ?

कै०—सुमन्त्र! महाराजने रात्रीनुं जाग्रण छे तेथी वधु बोली शकता नथी. रामभद्रने अहिं लाव त्यारे ज महाराज जागृत थई स्वस्थ थशे.

सु०—महाराजनी आज्ञा शिवाय केम जई शकुं ?

दश०—(गद्गद्) हा सुमन्त्र! रघुवीरनुं दर्शन इच्छुंछुं. तेने शीघ्र लाव,

सु०—जेवी महाराजनी आज्ञा. (जाय छे.)

(राम सुमंत्र अने पाछळ लक्ष्मण आवी पहोंचतां)

राम०—(दशरथ समीप जई पगे पडी) पिताश्री हुं अभिवंदन करुंछुं.

(कैकेयीने पण पगे पडी) मातुश्री आपना चरणारविंदने अभिवंदन करुंछुं.

दश०–(भरायले हृदये) राम—(वधु बोली शकातुं नथी, अश्रुप्रवाह वह्यो जाय छे अने हृदय दबातुं जाय छे.)

राम०–(स्वगत).

रोळा.

शुं कोप्यो छे काळ, राय दशरथ आम झुरे
न दीसे उत्सव तान, हृदय निश्वास बहु पुरे !!!
दडदड अश्रुधार हृदय डीबो उभराई
करे छे वाणी बंध प्रेम हृदय शून्य दबाई !!! १९.

(दीनताथी प्रकाश) पिताश्री आज तमने शुं थयुं छे? शरीरने ठीक नथी? माराथी कंई अपराध थयो छे? पिताश्री! कोईए अपमान आप्युं छे? आटला बधा शोकग्रस्त आज केमं दीसोछो ? (राम जेम जेम बोलता जाय तेम तेम दशरथरायनो अश्रुप्रवाह वधतो जतां) (स्वगत) अरेरे !! मारां वचन शांति आपवाने बदले शल्य रुप थई पडे छे. शोक घटवाने बदले उलटो वधे छे. आज आम केमं? मारा तरफ दृष्टि सरखी पण करता नथी! (कैकेयी प्रत्ये प्रकाश) मातुश्री! आज पिताश्रीने शुं थयुं छे? केम प्रत्युत्तर आपता नथी? मारो कंई अपराध होय तो कहो. मारा प्रत्ये एमनो अपरिमित प्रेम छतां दृष्टि सरखी पण करता नथी! मातुश्री! आटला बधा शोकावेशनुं शुं कारण ?

कै०–रामभद्र! महाराजा एक अनिवार्य शल्यथी पीडाय छे,

राम–मातुश्री! एवुं ते शुं छे?

कै०—ते तारा अर्थनी विरुद्ध जाय एम छे.

राम—मातुश्री! पिताश्रीने अर्थे गमे तेवो अर्थ त्याग करवा हुं संकल्प करुंछुं.

कै०—महाराजना तारा प्रत्ये अतुल प्रेमने लीधे महाराजथी वदी शकातुं नथी.

राम—मातुश्री! पिताश्रीनी अनुज्ञा तमो जणावो अने तेनो हुं यथार्थ अमल करीश.

कै०—अमल न थाय तो मानभंगने लीधे महाराजा हवणां ज प्राण त्याग करशे.

राम०—मातुश्री! मारां सत्य व्रतना शपथ लईने कहुंछुं के गमे तेवुं अनिष्ट परिणाम हशे तोपण पिताश्रीनी अनुज्ञा सर्वथा सफळ करीश.

कै०—राम! तारा बोलवा उपर विचार कर.

राम—मातुश्री! सर्वथा निर्भय रहो. पिताश्रीना सुख माटे आत्मभोग देवा पण तत्परछुं.

कै०—त्यारे सांभळ.

राम—मातुश्री! कहो श्रद्धापूर्वक सांभळुंछुं.

कै०—दंडका अरण्यमां शंबासुरना युद्धसमये महाराजाश्रीए मने बे वरदान मागवा कह्युं हतुं पण ते में मुलतवी राख्यां हतां. आजे महाराजाश्री पासे ए वरदान में माग्यां छे. जेथी प्रतिज्ञाभंगना भयने लीधे महाराजाश्री आवी रीते मुझवणमां पडी दुःखी थाय छे.

राम—मातुश्री ए प्रतिज्ञा पाळी पिताश्रीनुं दुःख मुक्त करवा हुं तत्पर छुं. माटे ए वरदान शुं छे ते सत्वर कहो.

कै०—राम! सावध थईने श्रवण कर.

राम—मातुश्री! सर्वथा हुं सावध ज छुं.

कै०—पहेलां वरदानथी तारे माटे तैयार करेली सामग्रीथी में भरतने माटे युवराजपदाभिषेक माग्यो छे. अने बीजां वरदानथी ए माग्युं छे के तुं वल्कलचीर अने जटा धारण करी चौद वर्ष पर्यंत दंडका अरण्यनो वास करे. माटे हे राम ! हवे तुं प्रतिज्ञा पाळी महाराजाश्रीनुं जीवन सार्थक कर !

दश०—अरे दुष्ट ! अरे दुष्ट ! (हृदय विशेष भरवाथी अश्रुप्रवाह वध्यो जाय छे अने बोली शकातुं नथी.)

राम—मातुश्री ! मारा भरतने राज्य प्राप्त थाय एथी अधिक आनंद मने शुं होय ? राज्य में त्याग कर्युं छे अने सर्वथा हुं वन सेवीश. ! !

लक्ष्मण—(स्वगत अश्रु पडतां) आ कैकेयीए शुं डाट वाळ्यो !!! रामचंद्रजी जो न होत तो हवणां ज एनी दुष्टतानुं फळ चखाडत.

सुमंत्र—(स्वगत) अरे प्रभु ! गजब ! गजब !

कै०—राम हवे तारे विलंब करवानो नथी. वनप्रयाणनी अत्यारे ज तैयारी कर. पाछळथी तारी मति फरी जाय ए विचारथी महाराजाश्रीने विशेष दुःख उत्पन्न थतुं देखाय छे.

राम—मातुश्री ! मने विलंब नथी. पिताश्रीनुं आश्वासन करी लउं एज मात्र विलंब. अने मातुश्री कौशल्यादिकने मळी आवुं ए करतां हवे वधु समय जाय एम नथी. (दशरथ प्रत्ये) पिताश्री तमारी आज्ञा पाळवामां मने लेशमात्र पण क्लेश नथी. पिताश्रीनी अनुज्ञा साचवतां मने अधिक आनंद प्राप्त थाय छे. मारुं जीवन सार्थक थाय छे, अने पिताश्री आपनी प्रतिज्ञा सफळ थाय छे तो पिताश्री हवे तमो केम दुःखी थाओ छो ? शोक त्याग करो. मने आशिष आपो. अने भरतने राज्याभिषेक करी मातुश्रीने संतुष्ट करो. पिताश्री ! आपनी दुःखी अवस्था

जोई मारुं हृदय भेदाय छे. भरत विनयी, विवेकी अने ज्ञानी छे. वळी ते पण सदा आज्ञामां तत्पर रहे एवो छे. पिताश्री ! आपने कंईपण ओछुं आववा दे एम नथी. (दशरथराय कंईपण बोलता न होवाथी) हुं मातुश्री कौशल्यानी आज्ञा लई पुनः आवुंछुं अने पिताश्री तमो सर्वथा शोकनो त्याग करो. (एम कही चरणारविंदने नमन करी कैकेयी प्रत्ये) मातुश्री पिताश्रीनुं आश्वासन करी एमनो शोक त्याग करावो एटले हुं आवुंछुं. (जाय छे) (जतां जतां मार्गमां स्वगत) पिताश्रीनी स्थिति बहु दयाजनक थई पडी छे. प्राप्त कर्तव्य आगळ विशेष शुं करी शकाय ? खरेखर,

गीति.

वदायुं नहि कंई वेण शोकानळे हृदयद्वार न उघडतां
"हे राम" एकज वार, "हा धिक् !" फीटकार हृदय स्फुरतां. ३०

एम छतां पण

मालिनी.

दशरथ जीव शांति आज होजो घणेरी
तन मन फळ देजो चित्त शुद्धि अनेरी

पण अरे !

विपरीत फळ जोतां मातु दुःभाई रोशे
हृदय दीन गति, ए, केम उगारी लेशे ?! ३१

एवा विचारमां दीन थता राम कौशल्या समीप जाय छे.

इति रामवियोग नाम नाटके दशरथ हृदयशल्य नाम द्वितीय अंक समाप्त.

अंक ३ जो.

प्रवेश १ लो.

कौशल्या प्रासाद.

(राम लक्ष्मणसहित कौशल्यानी आज्ञा लेवा जाय छे तेवे महेलमां प्रवेश करतां)

द्वारपाळ–(नमन करी) युवराजश्रीनो जय !

अन्यसमूह–(मोटेथी) जय ! जय ! जय ! (राम एवी वधामणीनो चिन्ह मात्रथी सत्कार करतां आगळ जाय छे एटले) वृद्ध ब्राह्मणो–

शार्दूलविक्रीडित.

उगे जे रवि आज सूर्य क्रममां, शांति भरो सर्वदा
इक्ष्वाकुकुळतेज वृद्धि करतां, पाळो प्रजा हर्षमां
कौशल्याभूमिमात सेवन करो, आशिष लेतां खरा
आपो हर्ष सदा पितु दशरथे, आशिष विश्वंभरा. ! १

(नमन करी राम आगळ चाले छे एटले).

स्त्री अने बाळकवर्ग–श्रीकौशल्या कुमारनो जय ! जय ! जय !

(कौशल्याना अंतर भुवनमां प्रवेश करी कौशल्याने जोतां)

राम–(स्वगत) **इंद्रवज्रा.**

घृते करी होम पूजा करे छे
सामग्री देवे सहु हर्ष दे छे

आनंद मातुश्री उरे सुवाधे
जाणे न भावी फळ शुंज साधे ? २

(कौशल्याने खबर थतां एकदम उठी आवी रामने हृदयसरसा चांपी).

कौ०—पुत्र, कल्याण थाओ ! युवराजपदाभिषेक मुहूर्तबेळा थई छे. हुं पण देवार्चनना कार्यथी परवारीछुं. पुष्ययोग थयो छे. माटे महाराजाश्री समीप जई राज्यश्रीने पाम. कुळभूषण थई रहे. धर्मथी प्रजानुं सेवन कर. अने राज्यकार्यमां सदा तत्पर रही आनंददाता थई रहे. (राम बोलता नथी) व्हाला ! कालना अपवासने लीधे तने ग्लानि जणाय छे माटे आ कनकासन उपर बेस. अने क्षुधा तृप्त करी मंगळ कार्य माटे सत्वर थई महाराजाश्री राह जोता हशे तेनी सन्मुख था.

राम—(गद्गद कंठे) मातुश्री, महाराजाश्रीनी समीप थई आव्योछुं. मारे माटे हवे कनकासन नथी. भोजन पण माराथी लई शकाय एम नथी. मुनिओना कंदमूळ आहार एज मारे माटे निर्माण छे.

कौ०—(बेबाकळी थई) पुत्र ! तुं शुं बोले छे ? आज युवराजपदाभिषेकप्रसंग समये मुनिवेशनी कथा शी ?

राम—(अति दीन थई) महाराजाश्री दशरथरायनी आज्ञा छे के वल्कलचीर अने जटीलवेशे चौद वर्ष मारे दंडकारण्यनो वास करवो. अने तेटलो समय आपणो भरत राज्य करे.

कौ०—(स्तब्ध थई मुर्छागत थई जाय छे) (जागृत थतां) मारा व्हाला ! आ तुं शुं कहे छे ? हुं जागृतछुं के निद्रितछुं ?

राम—मातुश्री एज सत्य छे. स्वप्न नथी.

कौ०—अरे दुर्दैव ! महाराजनी मति केम फरी गई ! राम ! ताराविना हुं

केम जीवीश! मारा व्हाला, मने कहे के महाराजे आम विपरीत आज्ञा शा माटे करी?

राम—मातुश्री कैकेयीए दंडकारण्यमां शंबासुरना युद्ध प्रसंगे बे वरदान माग्यां हतां. ए वरदाननो अमल थयो न हतो. जेथी प्रथम वरदानथी मातुश्री कैकेयीए आज रोज भरतने माटे राज्य अने बीजां वरदानथी मारे माटे चौदवर्ष पर्यंत जटीलवेश सहित वनवास मागी लीधो तो मातुश्री पिताश्रीनी प्रतिज्ञा पाळवी ए पुत्रनो धर्म छे; अने ए धर्मने अनुसरी हु वन जवा तत्पर थयोछुं; तो तमारे शोक शा माटे करवो जोईए?

कौ०—पुत्र, हु केम शोक नहि करुं? मारुं हृदय दग्ध थाय छे, शरीर कंपे छे, अने प्राणवायु निश्वासपर निश्वासना दम ले छे तो पुत्रवियोग करतां बीजुं शल्य कयुं होय? मारा उपर तारा पितानो प्रेम नथी. तारां दर्शनमात्रथी ज मारा दिवस आनंदमां गुजरे छे तो हवे मारुं जीवन केम टकशे? मारी गणना दासीसमान होवाथी शोक्यरूपी प्रबळ दावानळ आगळ मारी केवी दुर्दशा थशे—पुत्र—तेनी तने खबर होय एम जणातुं नथी. नहि तो आवो वनवासवेश शा माटे ग्रहण करे?

राम—मातुश्री ए सर्व मने विदित छे. एम छतां पण पितुधर्मतो सर्वथी ज श्रेष्ठ छे. वळी भरत रघुकुळने शोभा आपे एवो विनयी, विवेकी अने सर्व माताने समान गणी सर्व उपर एकसरखो प्रेम राखनारो छे. एटले मातुश्री कैकेयी तरफथी शोक्यना भयनुं कारण हु जोतो नथी. अने ए कारण होय एम छतां पण एनुं स्थानतो पितु धर्म पछी ज आवे छे.

कौ०—अरे मारा व्हाला, शुं धर्मनो आवो अर्थ करी शास्त्रदृष्टा ऋषिए माताने तो रीबावावाने ज आज्ञा करी छे?

राम—मातुश्री, मारुं कहेवुं एम नथी. पण ज्यां बे सम्यक् धर्म एकाएक एक ज समये प्राप्त थाय त्यां अग्रस्थान कोने आपवुं ए विचारवुं ए प्रथम कर्तव्य छे. एवा कर्तव्यानुसारे समग्र धर्मना अभेद स्वरुपमां पण भेद स्वरुप एक स्वाभाविक क्रिया होई, भेद दर्शावनार छतां पण अभेदनुं ज पोषण कर्ता छे. एज धर्मनुं आगळना सुज्ञ पुरुषोए अनुकरण कर्युं छे. अने हुं पण तेमने पगले चाली, मातुश्री, तमारा तरफ भेद के अभाव बतावतो नथी. पण मारो धर्म जोवानी जे फरज आवी पडी छे तेज अदा करुंछुं.

कौ०—पुत्र, त्यारे शुं सुज्ञ पुरुषोए मातुप्रेमने अग्रस्थान नथी आप्युं ?

राम—मातुश्री, मातुप्रेम सर्वथा मान्य छे.

कौ०—ज्यारे मातुप्रेम सर्वत्र मान्य छे त्यारे पुत्र, माता करतां सेवाने योग्य बीजुं कयुं स्थान होयं ?

राम—मातुश्री, आवा भ्रममां तमो केम गुंचवाओ छो ? कर्तव्य आगळ प्रेमने स्थान नथी. सर्व व्यापक स्वरुपनी कर्तव्य भावनामां प्रेमनो समावेश थई जाय छे. जेथी करी प्रेमनी भावनानो उद्भव केवी रीते होई शके! अहो मातुश्री, एवी समग्र कर्तव्यभावनामां प्रेमनो उद्भव ए तो अभेदमां भेद छे. निश्चयात्मक वृत्तिमां संशयात्मक वृत्तिनी कल्पना छे. तो "तुं कोण"? "हुं कोण ?" एवी कल्पनामां शीद मुंझाओ? "तमो अने हुं शा माटे" ए निश्चय उपर केम स्थिर थई शको नहि! कर्तव्य अने समग्र कर्तव्य एज तमारो अने मारो उद्देश होवो जोईए. अने एम ज छे तो आवी दशा व्होरवाने अवकाश क्यांथी ? अने ज्यारे अवकाश नथी तो एवी दशा व्होरी लई खाली भ्रम शिदने उत्पन्न करो ? पिताश्रीना हितार्थे आज्ञाव्रत ए शुं शांति शिवाय कादि पण बीजुं फळ आपनार छे ? अंतरायभूत दीसतां विघ्नो कोइपण काळे शुं

शांतिनो भंग करी शके छे? अने ज्यारे एम नथी ज तो भ्रममां पडी तमारे तमारा, मारा, तेम ज पिताश्रीना आत्मानी उन्नतिमां विघ्न करता थइ पडवुं ए शुं कोईपण रुची के नियमने अनुसरतुं गणोछो ? हे मातुश्री भ्रमनो त्याग करो अने शांतिथी आज्ञा आपो.

कौ०—पुत्र, तारां धैर्य अने दृढ संकल्पव्रत आगळ माराथी कंइपण वदी शकाय एम नथी.

राम—मातुश्री एज खरुं कर्तव्य छे.

कौ०—मारा व्हाला, भले एम हो. पण वन जवाथी शुं? भले भरत राज्य करे. अने कोइने पण खबर न पडे तेवी रीते चौद वर्षपर्यंत तने हुं गुप्त राखीश. एवी रीते तारां दर्शनमात्रथी पण मारा आत्माने तो शांति ज मळशे.

राम—मातुश्री, आ वळी तमो बीजो भ्रम उत्पन्न करो छो. राज्यपुत्र घरमां संताइ रहेवा सर्ज्यो नथी. विशाळ कर्तव्य एज एनुं क्षेत्र छे, तो कर्तव्य अंगे क्यां राज्य के क्यां वन ए बन्नो समान ज छे. उभय स्थळे कर्तव्यने विशाळ अवकाश छे तो क्षात्र धर्मथी विरुद्ध आचरण केवी रीते मान्य करी शकाय ?

लक्ष्मण—अहो तात, क्षात्रधर्म निर्बळथी के कोईना कपट कार्यथी लोपाय ए पण एक महत् दूषण ज छे. मातुश्री कौशल्या कहे तेम संताई रहेवानी जरुर नथी. तेम ज दुष्ट कैकेयी कहे तेम वनमां जवानी पण जरुर नथी. प्राप्त थयेल राज्यश्रीने ग्रहण करवी एज क्षात्रधर्म छे. अने तेम थतां विघ्नोने विडारवां एज महत् कर्तव्य छे. माटे मातुश्री कौशल्याना आत्माने क्लेश आपवो ए तो हुं कोईपण प्रकारे धर्म होये एम मानतो नथी. वडिल बंधुनी सेवा ए परम धर्म छे माटे आज्ञानी राह जोउंछुं.

राम—तात लक्ष्मण, तुं हजी बाळक छे. महत्पुरुषोना धर्म तने अज्ञात छे.

लक्ष्मण—त्यारे शुं पापिनी कैकेयीनी आज्ञा ए धर्म के न्याय छे? कामांध राजाने वश्य करी गमे तेवी अन्याययुक्त मागणी मागी बीजाने रंजाडी क्लेश आपवो ए शुं कर्तव्य छे? एवी मूर्ख, मूढ अने दुष्ट स्त्रीने वश्यवर्ती रही गमे तेवी आज्ञा करवी ए शुं नृपवरोनुं भूषण छे? खेरखर मने तो बहु लागी आवे छे. तमो हवणां जो सहज आज्ञा आपो तो सर्व सृष्टिनो संहार करवा समर्थ छुं.

राम—लक्ष्मण, तुं आटलोबधो तातो केम थाय! कर्तव्य धर्म विचारवो ए अवश्य जरुरनुं छे.

लक्ष्मण—पण आवां कर्मने तो कर्तव्य धर्म कही शकाय नहि. प्रभु तमारा सरखा सत्यशील, दृढ प्रतिज्ञावाळा, जनने प्रिय, सदा नम्र, उदार, विवेक अने विनययुक्त, धनुर्विद्यामां निपुण, शौर्यमां अद्वितीय, शत्रु मात्रने दमनार वसिष्ठादिक ऋषीश्वरोने माननीय होई, महाराजाश्री दशरथरायना ज्येष्ठ पुत्र होवाथी धर्मानुसारे राज्यभृति स्थान तमो ज छो. एम छतां महाराजाश्री दशरथ अने कैकेयीनी आज्ञा शुं धर्मानुसारीणी छे? ए आज्ञा शु कोईपण प्रकारे राजा के प्रजाहित कर्ता छे? ए तो न भूतो न भविष्याति जेवुं छे. क्षत्रीमां श्रेष्ठ एवा रघुकुळ धर्मनो शुं एथी लोप थतो नथी? प्रभु, हुं विस्मय पामुंछुं के आवां महत् अधर्मनां कार्यने तमो धर्म मानी, एने ज अनुसरवा तत्पर थया छो. क्षत्रीनां बळ अने शील धर्मने स्थापन करवा माटे ज छे. के नहि के धर्मनुं उत्थापन करवा. हे प्रभु, हुं तो मात्र आज्ञांकित ज छुं. मारुं जीवन तमने ज अर्पण छे. एम छतां पण क्षात्रधर्मनो लोप असह्य ज होय!!!

कौं०—मारा व्हाला, तुं सत्य कहे छे. पण रामने तो कोण जाणे शाथी

एवो क्षत्री धर्म मान्य नथी. वृद्ध माता पितानी सेवा तजी वनवासनो ज धर्म एने केम उत्तम लाग्यो ए समजी शकाय एवुं नथी.

लक्ष्मण—हा मातुश्री, ऋषिओथी सेवायलो अने तपने आपनारो मातुपितुसेवाधर्म वळी अति गहन अने उत्तम फळ आपनारो छे.

राम—तात लक्ष्मण, राज्यपुत्रना धर्मनी हद गृहमां ज समाप्त थती नथी. ऋषिवरो अने अन्य सामान्यजनोना धर्मनी हद करतां क्षत्रीवरोना धर्मनी हद अति विशाळ छे. तेमां वळी उत्तम क्षात्र धर्मनो दावो करनार क्षत्री श्रेष्ठना धर्मनी दिशा तो सर्वव्यापक आत्माना समग्रपणाने मानी लई समग्र सृष्टिपर्यंत होय छे, एवां उन्नत बिंदुनो धर्म पोषनार क्षत्री ज अजय अने अमर होय छे. युगांत पर्यंत प्राणीमात्रने पूज्य होई पळपळनां तेमनां हृदयकार्यनो नेता थाय छे. प्राणी मात्रनी व्यवहार व्यवस्थामां आनंद मात्रनुं पोषण करे छे अने सृष्टि क्रियाने शांति आपनार होई एक शांतिस्वरुप ज थई रहे छे. एवां शांतिस्वरुपनां तेज अने प्रकाश अमाप छे. एवां स्वरुपनी गणना काळ गणनामां होती नथी. ए तो प्रेमथी भरपूर अद्वितीय ज होय छे. तो तात लक्ष्मण, एवां स्वरुपना धर्म अने ताराथी वर्णवायला सामान्य क्षात्र धर्म स्वरुपना धर्मना भेद उपर विचार करवानी अवश्य जरुर छे. एमनी वच्चे अतुल भेदने लीधे ए दरेकनी क्रिया पण गुंचवनारी अने नहि समजी शकाय एवी थइ पडे छे. माटे तारा अल्प क्षात्रधर्मथी गुंचवाई मातुश्री कौशल्याने पुनः भ्रम उत्पन्न मा कर. एमनी शांत थयेल वृत्तिओने चलायमान करी पुनः डोळाटवाळी मा कर. अने मारामांज श्रद्धा राखी माराथी सेवाता धर्मने अनुसर. तारां मारा उपर अनन्य पूज्यभाव, प्रेम, अने भक्ति होवाथी तारे तो मने अनुसरवुं एज योग्य अने उत्कृष्ट धर्म छे. विशाळ धर्मनी गहनगति समजवा

पुरतो विकास हजी तारां हृदयने थयो नथी. माटे तारे तो हृदयनो विकास करवा प्रयत्नशील रहेवुं एज कर्तव्य छे. (कौशल्या प्रत्ये) मातुश्री, मारो निश्चय अनिश्चय नथी. सृष्टिना दरेक धर्मनु संस्थाचित्र मारा हृदय उपर स्पष्ट ज अंकित थयेलुं होय छे. जेथी करी मारुं कोईपण कृत्य सृष्टिना स्थापित धर्मनुं उल्लंघन होइने होतु नथी. अने एटला ज माटे संशय के विभ्रम उत्पन्न थवा लेशमात्र पण अवकाश नथी. मातुश्री हवे विलंब थाय छे. माटे शांति अने हर्षथी स्वस्ति वाचन करो. चौद वर्षनो काळ व्यतीत थये हुं आपनी पिताश्री दशरथनी तेमज अन्य मातुश्रीनी सम्यक् रीते शुश्रूषा करीश. एमां तमारे संशय करवो नहि. व्रतनो काळ व्यतीत थतो जाय छे. आजे सूर्यास्त पहेलां अयोध्यानी सीम छोडी जवुं जोइए. माटे आनंद उत्साह अने हर्षथी मांगलिक प्रयाण शुभ आशिषसह करावो.

कौ०—पुत्र, ज्यारे तारुं मन आटलुं बधुं निश्चयपूर्वक छे त्यारे हुं तारा दृढ संकल्पने खुशीथी संमति आपुंछुं. पुत्र, तारो वियोग छतां पण तारां उत्कृष्ठ धर्माचरण माटे आनंदित बनुंछुं. अने मारुं अहो भाग्य समजुंछुं के आवुं पुत्र रत्न सांपडयुं. दैव इच्छाने हुं आनंदथी ताबे थइश. मारुं धर्माचरण अने मारुं धर्म व्रत मारा दिवसो निर्गमन करवामां मने सहायभूत थशे. माटे पुत्र, पितुकार्य करवामां मारा तरफना लेश पण विचार विना सदा निश्चिंत रहेशो. वनवास सेवन अति गहन छे. व्रतचारी ऋषिओ अने दुष्ट राक्षसोनुं ज ए निवास स्थान छे. पुत्र, त्यां राज्य वैभव नथी; शय्या नथी; नियमित नित्य भोजन नथी; तेम ज सेवा उठावनार दासजन पण त्यां नथी. एम छतां पण पुत्र सावध रहेजे, धैर्य छोडतो मा, अपवास अने एक भुक्ता व्रतनुं सेवन करजे, अने तारा दिन सदा आनंदमां जाय ए-

वीज रीतनुं वर्तन राखजे. तुं शौर्यशील छे एटले राक्षसनो भय नथी. तारुं विवेक बळ ऋषिवरोना आशिष सर्वदा खेंची लावी रक्षण करशे. पुत्र ऋषिवरोनी परिचर्या करजे अने तेमना आशिष लेवा नित्य प्रयत्नशील रहेजे. तेओ निर्मळ शुद्ध अने तपस्प्रभाववाळा होय छे माटे तेमनी शुश्रूषा करवा चूकीश नहि. तेमना हृदयगत आनंद उद्गार सर्वदा अवर्ण्य फळदाता ज छे. तारा गमनथी तेमने पण राक्षसनो भय पीडशे नहि. तेमनां तपस्कार्य निर्विघ्ने थतां रहेशे. जेथी करी तारुं गमन तो खरेखर तेमने एक महत् आनंदनुं कारण ज थइ पडशे, ए विचारथी मारो आनंद शमतो नथी. खरेखर पुत्र तें पितु आज्ञा माथे चढाववामां घणुं शुभ विचार्युं. तारुं ज जीवन अहो भाग्य छे. ए जीवन वनवास नथी पण आनंदवास ज छे. पुत्र वळी नगर नगरनी चर्चा अने देशांतर ज्ञान राज्यकार्यमां तने घणां मददगार थई पडशे. एथी देश अने प्रजाने कंई थोडो लाभ नथी. खरेखर आ तारुं कृत्य वनवास नथी पण महत् राज्यकारभार वहन करवा माटे सर्व प्रकारनी संपूर्ण सामग्री छे. एवा एवा विचारोथी मारा आनंदनो पार नथी. माटे पुत्र, तुं कहे तेम समग्र सृष्टिनो अनुभवसह पाछा फरी हमने तेमज प्रजाने सदा आनंददातां चिरकाळपर्यंत राज्य करतो रहे.!!!

राम—मातुश्री जनकतनया अने अन्य मातुश्रीओने मळी हजी मारे महाराजाश्री दशरथ समीप जवुं छे माटे हवे आज्ञा आपो.

कौ०—पुत्र, त्यारे आनंदथी प्रयाण कर. पण प्रथम आ गृहवेदिनी पूजा करी प्रदक्षिणा फर अने आशिष लई प्रयाण शरु कर. (रामचंद्रजी तेम करे छे) (प्रदक्षिणा करी रहेतां) गृहदेव, ग्राम्यदेव, वनदेव, स्वर्गदेव, तेमज समग्र सृष्टिना देवो, पुत्र, तारुं अहोनिश र-

क्षण करो. तारां कार्यमां सहायभूत थाओ. अने पुनः आणी आपी मारां नयनने आनंद पमाडो. पुत्र, आ मारुं रक्षाबंधन ग्रहण कर. (नमनसह ग्रहण करे छे) एथी तुं क्षेमकुशळ हो. आ मारुं स्वस्तिवाचन ग्रहण कर. (नमनसह ग्रहण करे छे) ए सदा सहाय थजो. पुत्र हवे सुखेथी प्रयाण कर. (रामचंद्रजी धीमे धीमे चालवुं शरु करे छे) यज्ञदेव तारुं रक्षण करो! कुळदेव तारुं रक्षण करो! सर्व पितृओ तारुं रक्षण करो! अग्निदेव, वरुणदेव, इंद्रदेव, वनदेव सर्व अने समग्र देवो तारुं रक्षण करो! शिव, ब्रह्मा अने विष्णु तने नित्य आनंद आपो! पुत्र, आनंद आणी प्रयाण करी!

राम—मातुश्री जाउंछुं.

कौ०—पुत्र जय करो! (रामचंद्रजी जाय छे). (स्वगत हृदयवेग)

शार्दूलविक्रीडित.

जाये छे मुज राम ह्यां, वन विषे, पितुगति सारवा
थाजो स्हाय भूतत्व जे गति करे, प्रेमे करी पाळवा
आपी हर्ष अधिक ए सुख करो, ज्यां ज्यां वसे राम हुं
ज्यां ज्यां धर्म करे गति भुवनमां, आशिष होजो सहु!!! ३

इति तृतीय अंके प्रथम प्रवेश.

प्रवेश २ जो.

रामअंतःपुर.

सीता–(स्वगत) देवकार्य थई रह्युं छे. प्रधानजी सुमंत्र हृदयेशने निमंत्रण करी गया छे. समय घणो थयोछे. तेओ आवता हशे. (उल्लासमां) आज ज पिताश्री जनकनुं जीवन सार्थक थयुं गणाशे, आजेज माता हर्षथी उभाई रहशे. पुत्रीना सुखनो आनंद कोणने न होय ?

हरिणी.

नयन रसथी लेतां ल्हावो शिशुं वय जाय ज्यां
ललित वचने पुत्री भे दे–"हशे शुंय कर्ममां ?"
श्रम लइ पति अर्पे तोये–"शुं पुत्री सुखे सुए ?"
श्रवण पडतां सुखो ज्यारे कहे कुण हर्ष ए ? !!! ४

इंद्रवंशा.

दीधा पितु आशिष आज फाळशे
स्वामी सुसंगे मुज धर्म ज्ञामशे
देवो पितृ ज्यां सहु तृप्ति पामशे
आनंद स्वामी गृहराज्य आपशे !! ५

चाल हवे तो मारे तत्पर रहेवुं जोईए. जनक जामात आवता हशे. "स्वामीने आनंद आपजे" ए मातुश्रीनी शिक्षामां केवो गंभीर अर्थ रह्यो छे !!! त्यारे तो ए शब्दमात्र ज लाग्या हता. खरो अनुभव तो आज ज करुंछुं. (विचारमां पडी जागृत थइ होय तेम) हवे मारे शुं करवुं जोईए ? राज्यमुगटने केवी रीते वधावी लइश ? अत्यार सुधी तो हुं एकली ज स्वा-

मीपणानो दावो करती हती. हवे तो श्रेयकर राज्यविभूति पण स्वामिपणाना दावामां आनंदनो भाग पडावशे. खरेखर मारे पण ए बन्नोने एमना कार्यमां उत्साह अने उमंगथी सहाय थवा तत्पर रहेवुं जोईए. त्यारे राज्यविभूति योग्य शिरोमणीस्वरुपने शुं कहिश ?

गीति.

नथी वचन कंई जडतुं हृदयेशे स्नेह अर्चनशुं शमवा
अधीरुं हृदय आ नाचे, प्राणशुं प्राण बनी नित्य सुख भरवा ६.

(एवे रामचंद्रजीने आवता जोई एकाएक चमकी उठतां)

प्राणेश तो आवता जणाय छे! शुं समाचार हशे? मनना मनोरथ मनमां रही गया! उत्सवने योग्य आ वेश होय नहि !!! (हृदय थरथर कंपतां) हे हृदय धैर्य धर! धैर्य धर!! प्राणेश सहु निवेदन करशे. (एवे रामचंद्रजी आवी रहे छे) (अकस्मात कंठालिंगन थतां प्रकाश) प्राणेश आज आम केम ?

इंद्रवज्रा.

क्यां छे तमारो नृपवेश आजे
पाळा फरो संग न कोई राजे
वाजींत्रनो शोर गयो दीसे क्यां? !!!
आशिषमंत्रो प्रभु बंध छे ह्यां !!!? ७

राम—(गद्‌गद) प्रिये, ए सहु काळनुं कार्य छे. आज रात्रीना बनावनी तने खबर नथी.

सीता—प्राणेश शुं?

राम—आपणे हवे संयोगमां रहेवा सर्ज्या नथी.

सीता–प्राणेश एवुं शुं बन्युं? संयोग थयेल प्राण वियोगी केवी रीते होई शके?

राम–काळनो कोई रोध करी शके नहि. चौद वर्ष पर्यंत अवश्य आपणो वियोग छे.

सीता–प्राणेश शुं बोलो?!! हुं वियोगी नहि रहुं!!!

राम–ए खरुं, पण एवो धर्म प्राप्त थतां आपणे धर्मने अवश्य अनुसरवुं जोइए.

सीता–हा स्वामिनाथ, पण एवो शुं धर्म प्राप्त थयो के वियोगी ज रहेवुं पडे?

राम–चारुशीले, महाराजाश्री दशरथनी आज्ञा छे के मारे चौद वर्ष पर्यंत वल्कलचीरमां वनवास सेववो. अने तेटलो समय भरत राज्य करे.

सीता–प्रभु, आपना तरफथी अविवेकनो संभव नथी.

राम–प्रिये, कर्मसंस्कार गमे त्यां फळ आपवा उन्मुख थई जाय. एमां आपणे ज कारणभूत होवुं जोइए नहि. दंडकारण्यमां शंबासुरना युद्ध प्रसंगे मातुश्री कैकेयीनी सेवाना फळमां महाराजाश्री दशरथराये बे वरदान मागवा कह्युं हतुं. मातुश्रीए ते कोई समयने माटे राख्यां हतां. ते बे वरदान आजरोज मागी लीधां. एकथी मारे माटे वन अने बीजांथी भरतने राज्य.

सीता–प्राप्त धर्मने अनुसरवुं ए आपणुं कर्तव्य छे. पण स्वामिनाथ, एमां वियोगनुं कारण तो हुं कंइए जोती नथी?

राम–प्रिये, पिताश्रीए कंई तने वनवास आप्यो नथी.

सीता–प्रभु, एमां महाराजाश्रीनी आज्ञानी जरुर नथी. तमने वनवास एनी संगे मने पण वनवास ज छे. हुं तमारुं अर्ध अंगछुं. जेथी एक अंगनी संगे ज बीजुं अंग पण होय. एथी महाराजाश्रीनी आज्ञानुं नि-

मित्त व्यर्थ छे. तमो विना एक पळपण हुं रही शकीश नहि.

राम–प्रिये, नारीरत्नने वनवास होय?

सीता–स्वामिनाथ, नारी ए रसनुं धाम छे. अने आत्मा ए रसनुं बिंदु छे. तो आत्मा विना रस केवी रीते रही शके? ज्यां ज्यां आत्मा होय त्यां त्यां रस संगे ज होय.

राम–प्रिये, प्राप्त धर्म आत्मवादने प्रतिकूळ छे. भेद प्राप्त थतां संयम अने निग्रह एज कर्तव्य के धर्म छे, ए धर्मनुं सेवन न थतां वनवास संग तो उलटो क्लेश अने भय कर्ता होई रसनी वृद्धि न करतां क्षीणताज करे. केमके–

शार्दूलविक्रीडित.

घोरे घोर विकाळ ज्यां वन कहुं व्याघ्रादिको वासथी
प्राणी क्रूर असुर नित्य मळतां कंपी उठो त्रासथी
नारी! निर्मळ वारी ए न मळतां क्षुधा तृषा पीडशे
क्लेशे काय झुरे जहां वन विषे, आत्मा गति शुं थशे? !!!

सीता–आत्मस्वरुप, आत्मा अने रसनो भेद एतो जडता के कायरता ज सिद्ध करे. तो स्वामिनाथ आपमां जडता के कायरतानो संभव नथी. एतो दीन, अज्ञ, हीन अने अधम पुरुषोनुं ज स्थान छे. जेथी शौर्यस्वरुपनो संग करतां भय अने क्लेशादिकनी भावनानो संभव क्यांथी? मारी संगे आवा विपरीत वादथी शुं? एवुं ज जाणत तो जनकराय मने आपने शुं करवा अर्पण करत?

राम–प्रिये आ ज्ञानगोष्ठिनो प्रसंग होय एम हुं धारतो नथी. व्यवहारधर्म पण जोवो जोईए.

सीता–स्वामिनाथ, आगळ एक प्रसंगे तमे ज कह्युं छे के आत्मामां व्यवहार अने ज्ञान एवा भेद नथी. अहिंयां तो समग्र आत्मानुं कर्तव्य शुं ए जोवुं एज धर्म छे तो मने आवी रीते भोळववाथी शुं ?

राम–प्रिये हुं सत्य कहुंछुं के तारी हठथी व्यवहारधर्मनो लोप थाय छे. मातुश्री कौशल्याने तो आनंद स्थान आपण ज छीए. मारो वियोग छतां तारां समीपपणाने लीधे मातुश्रीने वियोग शल्य पीडशे नहि. पण तारी शुश्रूषाथी मातुश्रीनो आनंद तो कायम ज रहेशे. माटे प्रिये हवे तारो तो एज धर्म छे के गृह आगळ रही मातुश्री कौशल्यानी शुश्रूषा करवी अने भ्रात भरतनी आज्ञामां रहेवुं. भरत हवेथी कुळ तेमज देशनो राजा छे माटे तेनुं लेश पण अप्रिय करीश नहि. वियोग धर्मने अनुसरी व्रत उपवासादिकनुं सेवन करतां ब्राह्ममुहूर्ते उठी मातुश्री कौशल्यानी सेवामां तत्पर रहेवुं. अन्य माताओ तरफ पण समभाव अने समान प्रेमनो ज प्रवाह प्रसरावतां रहेवुं. एम करी मारा तरफनो तेमज कुटुंब तरफनो धर्म अदा करवो. केमके हवे तो एज धर्म तने प्राप्त छे. मातुश्रीनी सेवा माटे मारा प्रतिनिधिरुप योग्य पात्र तुं ज छे. माटे प्रिये हवे विलंब न करतां मारा कहेला धर्मने ज अनुसर. अने मने वनगमनप्रयाण माटे आज्ञा आपी मांगलिक फळद प्रयाण कराव.

सीता–स्वामिनाथ, मातुश्री श्रीकौशल्या अने कुटुंब सेवा माटे तमोए कुळने घटे एवो श्रेष्ठ अने योग्य धर्म ज कह्यो छे. मातुश्री श्रीकौशल्यानी सेवा करवी ए आपणो परम धर्म छे. एम छतां पण आपद् धर्म अने आत्मधर्मनां कर्तव्य जोवां ए शुं आपणुं कर्तव्य के कार्य नथी ?

राम–(विचारग्रस्त मुखे) प्रिये, तुं शुं कहे छे ?

सीता–हुं एज कहुंछुं के आत्मधर्म एज सर्वोपरी छे. आत्मधर्ममां आपदधर्म प्राप्त थतां व्यवहार धर्म ए गौणधर्म छे. नहि तो व्यवहार धर्म एज सर्वोपरी धर्म छे.

राम–एक ज समये प्राप्त थता प्रतिकूळ धर्मोमां अनुकूळता केवी रीते संभवे ?

सीता–ए विषे तमे ज मने कह्युं हतुं एम छतां पूछोछो तो कहुं. आत्माना समग्र स्वरुपमां प्रतिकूळतानो भाव होय ज नहि. सर्व कार्य आत्माप्रत्येना धर्मअंगे ज होय, एवो धर्म सर्वत्र सर्व काळे समग्र प्रेम, शौर्य, आनंद अने धीरता प्रवर्तावनामां ज रहेल छे. एम थतां आत्मानुं स्वतंत्र स्वरुप समानताळुं होई प्रकाश उपर चढे छे, अने एवुं प्रकाशतेज दृढ थइ सिद्ध थतां सर्वत्र अनुकूळता ज वर्ती रहे छे. प्रतिकूळतानो भाव कहिंए रहेतो नथी. प्रसंगे खडुं थतुं प्रतिकूळतानुं स्वरुप ए प्रतिकूळता न होतां प्रतिकूळताआभास मात्र ज छे. जेथी स्वामिनाथ, एम केम कहो के प्रतिकूळतामां अनुकूळता केम संभवे ?

राम–पण प्रिये, मातादिकना शोक आपणां हृदयने दग्ध करे छे तो एने प्रतिकूळताआभास केम कही शकाय ? एवे समये तारुं सहगमन खरेखर प्रतिकूळ धर्म ज छे. एनेज अनुकूळ धर्म कहेवो एतो व्यवहार अने अनुभवथी तदन विपरीत ज छे.

सीता–स्वामिनाथ, एम कहेतां उत्थानकाळना हृदयधर्मनो हुं लोप थतो जोउंछूं. एवा उत्थान धर्ममां हृदयने भले व्यग्रता संभवे पण ए व्यग्रता नथी. केमके एवी व्यग्रता अने एनो लय तो आत्मतेज तरफ क्रियानुं कार्य छे. ए व्यग्रता नष्ट थतां आत्मतेज सिद्ध थाय छे. जेथी नाशवंत वस्तुने सत्य वस्तु केवी रीते कही शकाय ? शौर्य, धीरता अने दृढताने अभावे व्यग्रतानो अभाव कोईने अनुभवसिद्ध

न होय तेटला उपरथी ज सत्य स्वरुपनो त्याग करी असत्य स्वरुप ग्रहण करवुं एतो हुं कोईपण काळे न्यायधर्म जोती नथी. व्यवहारमां सर्व काळे समूहमां आत्मतेज तरफ शौर्य, धीरता अने दृढतानो लोप जोवामां आवे छे. जेथी व्यवहारनो अनुभव एज सत्य धर्म केम कही शकाय? माटे ज प्रतिकूळ धर्मनी भावना ए आभास मात्र ज छे.

राम—एमछतां पण प्रिये, मातुश्रीनो क्लेशनाश अने मातुश्रीना आत्मतेजनी वृद्धि ए द्विकार्य केवी रीते साध्य करी शकाय?

सीता—मातुश्रीने छोडी जतां आपनुं हृदय व्यग्रताने पामे छे तेवी ज रीते मारो पण त्याग थतां तमारुं हृदय व्यग्रताने पामशे. केमके—

हरिणी.

हृदय हृदये शांति पीधी वने शुंय भाळशो?
तरुवर भूमि संगे र्‌हेतां कहो मन वाळशो?
हृदयरस तो गृहे छोडो वने शुंय सारशो?
तन तप तपी कांति नासे हृदे शुंय आपशो! ८

एम छतां पण वळी,

इंद्रवज्रा.

ऊभा थशे गृह संयोग ज्यारे
पामो परिताप हृदेथी त्यारे
हा मित्र आत्मा कहुं कोण थाशे?
शांति सुशांति वळी कोण पाशे? ९

उत्थानकाळमां शांतिद्वारा रसनुं पोषण एज धर्म छे. तो प्रिय, हुं रसनुं स्थानछुं जेथी करी मारो वियोग केवी रीते होई शके ? शांति ए आत्मतेजनी वृद्धि करे छे. तो हुं पण आत्मतेज वृद्धिकार्यमां सहभागी केम न होउं ? एवी रीतनो अन्योअन्य धर्म भिन्नताते पामी जडता केवी रीते व्होरी ले ? माटे ज स्वामिनाथ, हुं वियोगी नहि रहुं. जे धर्म मने बळ आपे छे तेज धर्म मातुश्रीने पण बळ आपतां मातुश्रीना क्लेशनो नाश करशे. केमके अन्यनुं हृदयबळ जोई आपणुं हृदय पण उन्नतभावने पामे छे, ए अनुभव सिद्ध छे. जेथी मातुश्रीना संबंधमां प्रतिकूळ धर्मनो भय के मातुश्रीना हृदय क्लेशनुं कारण ए संशय निरर्थक छे. उलटुं मातुश्रीने आनंदनुं कारण मळशे के आपद समये पुत्रनी शांतिनुं पोषण करनार वधु पुत्रसंगे छे. अने एज तेमनां हृदयक्लेशनाशनुं कारण छे. केमके तमो एज मातुश्रीनुं जीवन छो. अने तमारी शांतिवृद्धिनुं साधन एज मातुश्रीने आनंदनुं कारण छे. माटे ज मारां सहगमनथी मातुश्रीनो क्लेशनाश अने मातुश्रीना आत्मतेजनी वृद्धि एद्धिकार्य सिद्ध थाय. हवे कंईपण प्रश्न न करतां मने संगे लई जवा संकल्प करो. एज तमारो धर्म छे. पाणीग्रहणसमये एज तमारी प्रतिज्ञा छे. पिताश्री जनकरायने पाणीग्रहण करतां एज तमारुं अभय वचन छे. वळी सामुद्रिक अने ज्योतिषना चिन्ह उपरथी स्वामीसह वनगमन एज मारुं भावि छे. ए विषे अनेकवार में आगळ तमने कह्युं हतुं. माटे संशय रहित पाणीग्रहण समये करेली प्रतिज्ञा सफळ करो. एवी प्रतिज्ञानो भंग थतां तमोमां कायरपणुं क्यांथी संभवे ? पिताश्री जनकराये कायर जामात नहि शोधवा ज धनुष्यनुं पण कर्युं हतुं. एम छतां जो तमोमां आवी कायरता छे एम जो पिताश्री जाणत तो मारुं दान तमने करत ज नहि. अहिंया पण व्यवहारधर्मनो ज प्रश्न छे. माटे हवे स्वामिनाथ, विलंब रहित सहगमननी आज्ञा करो. तमो सरखा शौर्यस्वरुपना संगमां मने कोईपण प्रकारनो भय वन-

वासमां पीडे एम नथी. तेमज तमारा संगमां मने कोईपण प्रकारनो परिताप पण नडे एम नथी. केमके तमो एज मने सर्व आनंदनुं कारणछो तो क्षुधा, तृषा, अपवासादिक व्रत, भूमिशयन, पदगमन, कंटकादिक पीडा, क्रूरप्राणीनो भय अने अन्य क्लेशो मने केवी रीते भेदी शके ? ज्यां मनोवृत्ति एकज वस्तुमां रसनिमग्न थई रही होय त्यां अन्य क्रियानो संभव क्यांथी होय ? (रामचंद्रजी तरफ एक दृष्टिथी जोई रहतां) हवे मने शी आज्ञा ?

लक्ष्मण–(जे अत्यारसुधी सर्व श्रवण करतो हतो ते स्वगत) महाराज मने शुं कहेशे ? ज्यारे धर्मपत्नीने पण लई जवा ना कहे छे तो मने केवी रीते संगे लेशे ? (" हवे शुं करुं" "मारे शुं कहेवुं" एवा विचारमां विचारग्रस्त थई रहेछे.)

राम–प्रिये हुं कायर नथी. तेमज करेली प्रतिज्ञा भंग करुं एवो पण नथी. पण सहगमन माटे तारी योग्यता अने दृढतानी परीक्षा माटे ज आटलो वाद कर्यो. खरेखर तारां व्रतथी मने आनंद थाय छे. तने प्राप्त करवामां हुं मारुं अहोभाग्य समजुंछुं. प्रिये हवे सत्वर था. अलंकारादिकनो संग हवे निरर्थक छे. ए सर्वस्वनो त्याग करी दान करी दे. गुरु आश्रितजन वृद्ध ब्राह्मण अने पात्रने सर्वस्व दानमां अत्यारे अने अने अत्यारे ज अर्पण करी दई संगे चालवा सत्वर था.

सीता–स्वामिनाथ! सहगमननी आज्ञा थतां मारुं हृदय हर्ष अने उत्सुकताथी उभाई जाय छे. हवे हुं विलंब नहि करुं.

लक्ष्मण–(हस्त जोडी राम प्रत्ये) महाराज, हुं तमारे शरणेछुं. मने शी आज्ञा ?

राम–भ्रात तारे गृह आगळ रही मातुश्री कौशल्या तेमज पिताश्री दशरथनी सेवा करवी. अने हमारो वियोग तेमने पीडे नहि तेम करवुं.

लक्ष्मण–प्रभु हुं तमोथी वियोगी रही शक्यो नथी अने स्वर्ग सुखना लाभे पण वियोगी रही शकीश नहि.

राम—भ्रात सुमित्रानंदन, ए खरुं. पण हमारी संगे तारुं गमन हमने दोषरुप छे. वळी पिताश्रीनी कंई एवी आज्ञा पण नथी. तारा वियोगथी मातुश्री सुमित्रानां हृदयने क्लेशनुं कारण शुं करवा आपवुं जोइए? तारे गृह आगळ ज रहेवुं. मातुश्री कौशल्या अने सुमित्राने आनंद आपवो, पिताश्रीनी शुश्रूषा करवी, अने भरतने राज्यकार्यभारमां सहायभूत थई भ्रातृधर्म अदा करवो एज तारुं कर्तव्य छे. भ्रात लक्ष्मण हवेथी एज आनंद मान अने हमारा वियोगथी मातापिता अने भ्रातादिकने उत्पन्न थतुं हृदयशल्य दूर कर.

लक्ष्मण—महान् प्रभु ए सत्य छे. वडिल बंधुनी शुश्रूषा कोईपण प्रकारे दोषरुप नथी. प्राप्त समये भ्रातश्री भरत करतां आपनी शुश्रूषा एज मारुं महत् कर्तव्य छे. ऐक्ष्वाकुनी एज धर्म गति छे. मातुश्री सुमित्राना आनंद माटे भ्रात शत्रुघ्न छे. अने पिताश्रीनी शुश्रूषा माटे भ्रातश्री भरत छे. पुत्र वियोगना कारणथी पिताश्री मातुश्री कौशल्याने ओछुं आववा देशे नहि. भ्रात शत्रुघ्न पण मातुश्री कौशल्या प्रत्येनुं निज कर्तव्य चूके एम नथी. अने आपना प्रताप आगळ भ्रातश्री भरत पण अन्य प्रकारे वर्ती शके एम नथी. एथी करी मारो गृहवास तदन अर्थ रहित छे. प्रभु तमो अरण्य सेवो अने हुं गृह सेवुं ए कल्पना हुं केम करी शकुं? ऐश्वर्य अने शीळमां आप देवना पण देव छो. आप पोते ज सर्वव्यापक सर्व शक्तिमान् ईश्वर स्वरुप ज छो. हुं आपनुं भक्तिरुप कनिष्ठ बाळक छुं. जेथी मने तो आपनी ज शुश्रूषा घटे. कनिष्ठ बंधुनी ए जीज्ञासा शुं तृप्त नहि करो? तमो वनवासनां संकट वेठो ए शुं हुं जोई शकुं? आप तेम ज मातुवत् श्री सीताजीनी शुश्रूषाअर्थे मारुं सहगमन हुं जरुरनुं समजुंछुं. वनवास असूरोथी वेष्टित छे. अन्न फळ तेमज मृगयादिकना कारणे सीताजीने एकलां केवी रीते

छोडी शकशो ? सीताजी एकलां केवी रीत निर्भय रही शकशे ? एमने हृदयकंप मुक्त कोण करशे ? गृह आगळ जे सर्व सामग्री सेवकजन हाजर करतां तेनो वनवासमां मुद्‌ले संभव नथी तो प्रभु हुं संगे आवी ए सर्व खोट पुरीश. अने आप तो श्रीसीताजी संगे वनवासमां पण आनंदमय ज रहो ए मारो संकल्प कोईपण काळे दुर थई शके एम नथी. (जिज्ञासु दृष्टिथी जोई रहतां) हवे कनिष्ठने शी आज्ञा ?

राम—तात लक्ष्मण, ज्यारे तारी एम ज इच्छा छे तो भले तुं संगे आव. अने तारुं जे सर्वस्व होय तेनो त्याग करी धर्ममां अर्पण करी दे के जेथी करी निस्पृहतानां बळे वनवासमां कोईपण वैभवभावना पीडे नहि.

लक्ष्मण—अवश्य, महाराज. (नमन करी हर्षमां जाय छे).

सीता—स्वामिनाथ, हुं पण जाउंछुं.

राम—हा प्रिये. (सीता जाय छे).

(सीता गया पछी स्वगत) मारे पण एज कार्य समाप्त करी पिताश्री सन्मुख शीघ्र जवुं जोइए. खेरखर, सर्वस्व त्याग अने दानधर्म पण अति गहन छे !

शार्दूलविक्रीडित.

आवे स्वर्ग सुखो मने फरी फरी, आशा धरे कैक ए,
आपे मान सहु मने गणी गणी मोहे फसे हीन जे
इच्छे ना कदि एक ए, मन वसी, आत्मा गति जेहशुं
सेवे **निस्पृहता** अति उलटथी, शक्ति दीपे तेहशुं !!

(एवी उलटमां राम पण जाय छे).

इति **रामवियोग** नाम नाटके वनगमन कार्य नाम तृतिय अंक समाप्त.

अंक ४ थो.

राजमार्ग.

१ वटेमार्गु–(बिजा वटेमार्गुने) भाई, आम लोकोनी भीड शामाटे हशे?

२ जो–केम भाई तने खबर नथी! राज्यशिरोमणी महाराज श्रीरामचद्रजी-ने आज शुभ मुहूर्तमां महाराजाश्री दशरथ राज्याभिषेक करे छे. ए उत्सवमां नगरजन सहु उभाई जाय छे.

१ लो–आम राज्याभिषेकनी तैयारी एकाएक स्वप्नवत् उभी थई होय एम लागे छे. कोईने आगळथी खबर पण नहि!

३ जो–(शोकान्वित हृदये) भाईओ तमो तो राज्याभिषेकनी वात करो छो पण सकळ गुणसंपन्न महान् प्रभु श्रीरामचंद्रजी तो आज वन जाय छे.

२ जो–(एकाएक चमकी उठतां सखेद) अरे! वळी आ शुं?!!! आवो एकाएक फेरफार शाथी? ए समाचार क्यांथी लाव्या?

१ लो–शु आपणे जागीए छीए के उंघीए छीए? स्वप्नना जेवा आ फेर-फार शा?

३ जो–ए खरुं छे. हुं हवणा ज महाराज श्रीरामचंद्रजी अने महाराजाश्री दशरथना प्रासाद तरफथी आवुंछुं. शुभोत्सवमां सारी दक्षिणानी आशाथी गयो हतो. पण रणवास अने नगरजननां रुदन अने आ-क्रंद सहन न थवाथी पाछो फरुंछुं.

२ जो–(१ लाने) आवशो? खरी हकीकत शुं छे तेनी खबर लावीए.

१ लो–हा, अवश्य. (बन्नो जाय छे).

(कैकेयीना प्रासाद समीप आवी पहोंचतां).

२ जो–(धीरे धीरे) भाई, वात असत्य नथी. सहु कोई उदासीन स्तब्ध थइ उभां रह्यां छे. शब्द सरखोए मुख बहार पडतो नथी. खरेखर आ शुं जोईए ? !!! को कोनी आंखमांथी तो अश्रु गळ्यां जायछे ! को कोना हृदय उंडा निश्वास पूरे छे–अहा काळ शुं विपरीत !!! महाराज श्री रामचंद्रजीने पण आज फळ ? !!!

१ लो–(धीरेथी) भाई आपणां हृदय पण दूरथी ज मुकाई गयां छे. वाणी पण गळगळी ज नीकळे छे. आ चूपकीमां रणवासनुं आक्रंद तो सांभळो। (किंचित् समय सांभळ्या पछी).

२ जो–हा, धैर्य रही न शके एवी महाराजा श्री दशरथनी राणी के दासीओनुं आक्रंद अति विषम छे. ए आपणां हृदयने दग्ध करे छे !

१ लो–हजी आपणे सांभळीए. (सांभळता सांभळतां) एओ तो एम रुदन करती जणाय छे के "हा कैकेयी, हा कैकेयी आ तें शुं कर्युं ? !!!" अरे दुष्ट तने बीजुं कशुंए न सुझ्युं ? "हमारुं जीवन केम लूंटे ?" "हमो केम टकीशुं ?" "हमारां हृदय केम बाळे ?" "हमारो रस शीदने ढोळ्यो ?" " रामे शुं बिगाड्युं ?"

२ जो–आ सघळुं कारस्तान कैकेयीनुं होय एम जणाय छे.

१ लो–राखो हजु वधु सांभळीए (सांभळे छे) (सांभळी चमकी उठतां) अरे ! आते केवी रंडा !!!" भरतने राज्य रामने वन आमते मगाय ? !!!

२ जो–आ तो महाराजाश्री दशरथने ज अपशुकन गणाय.

१ लो–(सपश्चाताप) अरे हुं भूल्यो ! पण ए शंखणी माटे माराथी एम बोलाई गया वगर रह्युं नहि. जो ए ते केवी डाकण !! पोताना स्वार्थ खातर आपणा महाराज श्रीरामचंद्रजीने ज खाई बेठी !!

एओ खरुं रडे छे के भरतने राज्य तो राज्य पण महात्मा श्रीरामचंद्रजीने वन शुं करवा ? एमने जोई सहुको ठाढां पडत. पण ए शंखणीए तो एमने वन कढाव्या !! अरे प्रभु आ शुं थाय !!! आम केम करे !!! हमने केम रंजाडे !!! रामचंद्रजीविना हमो शुं करीशुं ? दशरथराय केम देह धारण करी रहेशे ? !!!

एक प्रेक्षक—भाई, आपण सर्वनां हृदय कळकळे छे ! (एवे कोलाहल तरफ नजर जतां) पण सांभळो, सांभळो, रामचंद्रजी आवे एवो शोर मची रह्यो छे.

२ जो प्रेक्षक—(पडोसीनो हस्त पकडी) जोनी सहु आवा पाछा थई जाय छे.

१ लो वटेमार्गु—अरे एओ तो अडवण पगे ज आवे छे.

२ जो वटेमार्गु—अरे दैव ! एमने जोतां ज आपणी अने सहुकोनी आंखमांथी अश्रु धडधड वह्यां जाय छे.

१ लो—(अश्रु लुछी) भाई एओ केवा गंभीर आवे छे ! नीचेथी उंचु जोता नथी ! सेवकजन आगळ धनुष्य लई चाले छे. लक्ष्मणजी अने सीताजी पण संगे ज आवे छे !!!

ग्राम्य प्रेक्षक—एमनां लख्खण जोतां एमने पण वनवाह ज आइपो हु ?!!!

२ प्रेक्षक—एमने तो वनवास नथी आप्यो. पण पूज्यमूर्ति सीताजी पति धर्मने अनुसरी संगे तैयार थयां छे अने लक्ष्मणजी बंधु धर्मने अनुसरी संगे जाय छे.

१ लो वटे०—खरेखर ऐक्ष्वाकुने एज शोभे !!!

१ ब्राह्मण—हवणांज ए त्रण मूर्तिए सुवर्ण रत्न, शणगार, रत्नजडित शैया,

सुवर्णमय भोजनपात्र, हस्ती, घोडा, रथ विगेरे सर्वस्वनुं दान करी दीधुं छे. कंईए गळे वळगाडयुं नथी !!!

२ जो ब्राह्मण–बळ्योए बामणनो अवतार के आवा प्रसंगे पण दान लेवा हर्य्यु.

३ जो ब्राह्मण–(खिन्न मुखे) हा ! ए खरुं ! पण करीए शुं ? भेमणनो धरम पडयो आपणे बीजुं शुं करीए ? रामचंदरजी अने सीताजी काज लागे तो बाउए ! पण कंई एलाज ? आ- पण तो ईश्वर पाषे माजी शुटीए की इमनुं कल्याण करे !!!

४ थो ब्राह्मण–हा भाई, में पण एम ज कीधुंतुं बीजुं शुं करीए ?

(एवे रामचंद्रजी आवी पहोंचे छे).

कोई प्रेक्षक–भाईओ, आपणे ज शोक करीए छीए एटलुं ज नहि पण म- हाराज श्रीरामचंद्रजी सर्वस्व दान करवा लाग्या के हस्ती, अश्व, गौ, बलीवर्दादिक गृह प्राणिओ, काक बिलाडादिक प्राणिओ ने पशुओ कठोर शब्दथी हाहाकार वर्तावी रह्यां !! प्रासाद अने प्रासादभूमि शोक भागी थई रह्यां ! अने आकाश पण धुम्रताथी शोकनाद पूरी रह्यां !!

एक ब्राह्मण–भाई, एमां शुं ? होय, काळने एम पण भावे !!! एम छतां महाराज श्रीरामचंद्रजीनुं गौरव जोयुं ? जुओ ए महात्मा आप- णी समीप आवी पहोंच्या छे. एमनां हृदयने तो क्लेश होय एम मुदले जणातुं नथी ! (रामचंद्रजी, सीताजी अने लक्ष्मण सहित गया पछी).

२ जो ब्राह्मण–अरे ! आ ते केवुं ?!!! जे रामचंद्रजी आगळ अनेक हस्ती सैन्यादिक विराजतां, ते रामचंद्रजी एकला अडव-

ण पगे छे! अने एथी पण अधिक जेने अनेक दासी वींटी रहती एवां सीताजी आज राजमार्ग उपर पगे चाली एकलां ज जाय छे !!!

शार्दूलविक्रीडित.

सेवे भू निज धर्मथी जनक ज्यां सीता मळी एहने
दीपे गौरव शौर्य शील गुणथी सोंपी प्रभु तेहने
कांति झांखी सहस्र चंद्र नुरशुं, दृष्टि न को पामतुं
सीता एज जुओ जतां रसवडे सेवा ग्रही रामशुं !!! १

एक संत– इंद्रवज्रा.

भो–सत्य पुरुषशुं–शांति! धाजे
आनंद रंगो सहु एशुं पाजे !!
दे जे सहु धर्मशुं कार्य दृष्टि
लोपे न लेपे रीत दिव्य सृष्टि !!! २

२ जो वटेमार्गु–एवा नृपरत्नसंगे आपणे पण वन ज सेववुं जोईए.

१ लो वटे०–ज्यां एवा धर्मात्मा होय त्यां सर्वत्र आनंद ज होय माटे आपण सहु ए पण वननो ज आश्रय करीशुं.

समूह–(मोटेथी) हा! हा ! आपणने पण एज घटे.

(एवे रामचंद्रजी कैकेयी प्रासाद लगभग जई पहोंचे छे).

(स्थळ–प्रासाद.)

एक दासी–(बीजीने) अली, माराथी तो राणीओनो शोक नहि खमाववाथी हुं तो आम आवी रही.

२ जी दासी–अली, हुं पण एथी ज आवी रही.

१ ली—सहु कोई खरुं कहे छे के रामचंद्रजी सहु मातानां कार्य करता महाराणी श्री कौशल्याना करतां पण अधिक प्रेम, मर्यादा अने विवेक जाळववा चूकता नहि. अने रखेने माताओने ओछुं आवे एवी सदा संभाळ राखता.

२ जी—ए बधी वात खरी; पण रांडे खानुं खराब कर्युं एनुं शुं? रामचंद्रजीने लीधे आपणने पण कंई थोडुं सुख न हतुं. रांड केकइनी दासीओ आपणने पजवी शकती नहि. केकइ व्हाली होवाथी ए रांडो कंई थोडी पजवती?!!!

१ ली—ए खरुं. पण महाराजाश्री दशरथने भूंडुं शुं करवा कहीए? रामचंद्रजी तो सहुनुं रक्षण करता, सर्वपर दया राखता, अने कोईपण वार एमनामां क्रोध जोवायो नथी. खरेखर केवा सकळगुण संपन्न!!! एवा निरपराधीने पण देशवटो!!! अने वनवास!!! अरे ईश्वर! तारी शुं गति!!!

२ जी—ए रांड तो एवी नीकळी पण महाराजाश्री दशरथने शी मति सुझी!!! आथी तो आपणो ज नहि पण सर्व प्रजानो ज नाश थवानो मने तो एवुं ज जणाय छे!!!

१ ली—दैवयोगे एम पण बने! पण महाराजाश्री दशरथनुं भूंडुं शुं करवा बोलीए?

२ जी—बीजी सहु राणीओ ज महाराजाश्रीनो वांक काढे छे के एओ रांडनामां लोभाया त्यारे रामचंद्रजी सरखां रत्नने वनवास के नहि? ए रांड तो गमे ते मागे पण महाराजा एनुं नाक कापी काढी न मूके? सहु माग्युं माग्युं ज आप्या करे? माथे चढावी त्यारे ज आटलीबधी फाटी केनी?!!!

१ स्त्री—महाराजाश्रीना शोकनो पार नथी. रात बधी आंसु सुकायां नथी. पण एओ शुं करे?

२ जी—केम अली ! शुं करे? मारी मारीने ए रांडने ढीली कीधी होय तो बधा लाड भूली नहि जाय के? एने माटे रामचंद्रजी सरखा महापुरुषने वन मोकले के? ए महाराजा शांभळी पण केम शके? हमारी सरखीना भायडा आगळ तो चेंचू थाय ज नहि. अहिंयां तो ले बूधू ने कर सुधं तो शुं महाराजा स्त्री जातने लायक कबेद वेद नहि जाणे? एम न मळे त्यारे ज आज बधांने संताप केनी!

१ ली—बेन तुं तो घेली छे. महाराजा कंई एवुं हलकुं प्राणी नथी के मार फाड करे. महाराजा तो एक धर्मनी मूर्ति छे. एमने तो सर्व काळे सत्य ज प्रिय छे तो एओ पोतानां वचननो मिथ्या लोप केम करे?

२ जी—त्यारे तो आम पुत्रनो लोप थाय ते ?

१ ली—बेन होय! तेटला माटे महापुरुष शुं कोईपण काळे सत्य चूके? (एटले कंईक श्रवणपर पडतां) अली महाराज श्रीरामचंद्रजी अवता होय एम जणाय छे चाल त्यां जइए अने शुं थाय ते जोईए.

२ जी—चाल अली, हजी पण महाराजा श्री दशरथ कंई समजे के नहि ते जोईए. महाराजा जो समजे तोज रांडनुं काळुं थाय.

१ ली—बेन एम नहि बोलीए.

२ जी—(खेद धरतां) बेन मने तो बहु लागी आवे छे ते शुं करुं?

१ ली—बेन धीरज धरीए.

२ जी—केटलीक ?

१ ली—सर्वदा. (बन्नो जाय छे).

इति विष्कंभक समाप्त.

प्रवेश १ लो.

स्थळ—कैकेयी प्रासाद.

सुमंत्र—(अति खिन्न हृदये स्वगत) रामभद्र तो अतित्वराथी वनवासनी तैयारी करी आवी रह्या छे. अने मने महाराजाश्री दशरथने एमनुं आवागमन निवेदन करवा मोकले छे. हुं पण निष्ठुर के आ सहु क्रिया मारे स्वहस्ते ज करवी !!!

शालिनी.

उमंगे हा राम उत्कर्ष जोयो
हाँसे हींड्यो रामशुं रंगे बोळ्यो
विदेशे ह्यां जाय तो कार्य देतो
कंपे हृदे धर्म सेवा हुं कुहेतो !

(एम विचारतो सुमंत्र महाराजाश्री दशरथ समीप आवी पहोंचतां) महाराजाश्रीनो जय ! (हस्त जोडी) महाराज अभिवंदन करुंछुं.

दश०—सुमंत्र कंई कहेवुं छे ?

सुमंत्र—रामभद्र वनगमननी तैयारी करी आव्या छे अने आपने ए समाचार निवेदन करवा मने मोकल्यो छे. शी आज्ञा ?

दश—(निश्वास नाखतां) सुमंत्र दैवगति विचित्र छे !!! आपणे अति विषम प्रसंगमांथी प्रसार थइए छीए, तो दैवकार्यने अनुसरी कौशल्यादिक सर्व राणीओ अहिं आवे एम कर, अने पछी रामभद्रने प्रवेश कराव. केमके हवे हुं एमने सर्व कुटुंब सन्मुख जोवा इच्छुंछुं.

सु०—(नमन करी) महाराज, जेवी आज्ञा. (जायछे).

(कौशल्यादिक सर्व राणीओ आवी रह्या पछी रामचंद्रजी प्रवेश करतां महाराजाश्री दशरथ शोकमय हृदये थर्थरता पगे रामचंद्रजीने भेटवा जाय छे; चालतां पडी जाय छे; अने पडतां पडतां निश्वास नाखता नाखता स्तब्ध थई जाय छे, रामचंद्रजी आश्वासन करे छे. अने आश्वासन करतां करतां).

राम—पिताश्री, धैर्य धरो, धैर्य धरो. आटलो बधो शोक तमने घटे नहि. ऐक्ष्वाकुने तो धर्म ज प्रिय छे. जेथी धर्मनुं ज अवलंबन करी स्वस्थताने पामो. अने शांतिथी भ्रात लक्ष्मण अने जनकतनयासह मने वन गमननुं प्रस्थान करावो. पिताश्री तमारे तो सहुने धैर्य आपवुं जोईए. तमारा कष्टने लीधे मातुश्री कौशल्यादिक अधिकाधिक रुदन करे छे तो ए सहुने शांति आपवी एज हवे तो धर्म छे. पिताश्री जागृत थाओ अने शोक त्याग करो. भ्रात लक्ष्मण अने जनकतनयाने अनेक रीते समजावी, बहुए वार्या छतां धर्मने अनुसरी संगे ज आववा तत्पर थयां छे तो हवे ब्रह्मपुत्र सनकादिकसम हमने आज्ञा आपो.

सु०—(शोकाकुळ स्वगत) अरे आते केवी दैवगति !!!

शार्दूलविक्रीडित.

धूजे काय भये भरी लथडतां, मूर्छा डुले राय ज्यां
आनंदे बहु घोर शोर पडता, शोके झुरे काय त्यां
कूटे मस्तक तीव्र को विलपतां, आश्वासने को रहे
हा ! हा ! शोक पुरी रुए भवन आ, धर्मे गति शुं वहे ? !!

दश०—(जागृत थई निश्वासयुक्त हृदये) राम ! मारा जेवो कोई दुःखी

हशे ? !!! मारा जेवो बीजो कोण पापभाक् होय के गुणशील पुत्रने वनवास आपे !!!

राम–पिताश्री एमां आपनो कशोए दोष नथी. सर्वथा काळज बळवान छे.

दश–(शोकावेशमां) अरे भाई तुं आम केम बोले? हुं तेमज दुष्ट केकय तनयाने बंधन करी तुं तारुं रक्षण केम करतो नथी? धर्मवशात् माराथी कंई थइ शके एम नथी. नहि तो ए दुष्टा अत्यार सुधी अयोध्यानो वास करी शके ज नहि. पुत्र, मातपिता जो दोष करे तो पुत्रे न्याय जाळववो ए धर्म छे तो ए धर्मने अनुसरी हमने शिक्षा करी इक्ष्वाकुकुळने न्याय आप.

राम–पिताश्री, स्वर्गना सुख खातर पण हुं तमारी तेम ज मारी प्रतिज्ञा निष्फळ करवा तत्पर थाउं नहि तो हवे एवा आग्रहथी शुं? पिताश्री धर्मभोगे राज्येच्छा स्वप्ने पण मा हो !!! केमके राज्यपुत्रादिक जीवन पर्यंत तेमज मरण पछी पण आत्मगतिने कोईपण काळे धर्मविना श्रेयकर नथी. ए मारी श्रद्धा अचळ छे. जेथी करी पिताश्री, आपनां शोक वचन हुं केवी रीते मान्य करी शकुं ? अवश्य हुं धर्म खातर चौद वर्ष वन सेवीश अने त्यार पछी आपना चरणारविंदनुं नित्य सेवन करी आपने जरुर आनंद आपीश. वळी मातुश्री कैकेयीए पुछयुं के "राघव तुं वन जईश ?" त्यारे में कह्युं के "हुं अवश्य वन जईश ?" पिताश्री ए वचन मिथ्या करी धर्मनुं उल्लंघन केवी रीते करी शकुं ?

दश–पुत्र तुं धर्मात्मा होई तमे सत्य ज प्रिय छे. जेथी अन्यथा तुं केम विचरे ? !!! निडरताथी धर्मनुं सेवन एज भाग्योदय, लक्ष्मी अने यशनुं, त्रणे लोक अने त्रणे काळमां, साधनभूत कारण छे. मने अति विषम

शोक छतां तारां धर्मज्ञपणाने लीधे मारुं अंतर आनंदे छे. खरेखर केकय तनयाना वचन पाशमां हुं सपडायोछुं. अन्यथा वदी शकतो नथी. जेथी भले तुं वन पधार अने चौद वर्षनो काळ गाळी शीघ्र पधारी अयोध्याने आनंद आप. तने अने मने सर्व लोकमां तारनार मारां परम कल्याणार्थे तारुं वनगमन ए अति अद्भूत अने अति दुष्कर कार्य छे. पण मने भय रहे छे के एटलो बधो समय मारुं जीवन टकी रहशे नहि. जेथी हवे मारी एटली ज इच्छा छे जे आजनी रात्री मुज संगे गाळी आ लोक अने परलोकमां धर्मरुपी यश प्राप्त करवा माटे काल प्रात:काळे तुं वन जईश. एटलो समय तो पुत्रसुखनो ल्हावो रहेशे. पुत्र मारी ए जीज्ञासा तृप्त करवामां हुं कंईपण दोष जोतो नथी.

राम—पिताश्री, आज अने काल एमां काळभेद शीवाय अन्य भेद नथी. जे हृदय आज झुरे छे ते काल पण झुरशे. काळनां व्यतीतपणांथी हृदयनी स्वाभाविक गतिमां भेद पडतो नथी. जेथी पिताश्री, हुं काल जईश के आज जईश एनो आपनी हृदयगतिपरत्वे सरखुं ज छे. एक रात्री वधु रहेवाथी, मारा वियोग पछी, पुत्र स्नेह वधु पीडशे. माटे मने हवणां ज आज्ञा आपो. वळी हुं मातुश्री कैकेयीने कही चूक्योछुं के " हुं आज ज वन जईश " जेथी करी आजनी रात्री अत्र निर्गमन करी मातुश्रीने आपेलां अभय वचनमां संशय उत्पन्न करी मातुश्रीनां हृदयने श्रद्धा अश्रद्धानी क्रियागति उपर मुकी मारे माटे अविश्वास केवी रीते उत्पन्न करावी शकुं? पिताश्री सत्यधर्म ज आपने प्रिय छे तो आपने असत्यभाषी थवा दई राज्य पृथ्वी, व्यवहारकामना के अयोनिजा जनकतनयादिक सर्व वस्तुनो संग्रह केवी रीते करी शकुं? भोगादिक सर्व वासनाओ के इच्छाओ धर्म आगळ

त्याज्य छे तो पिताश्री हवे मारी एटली ज ईच्छा छे के अत्यारे ज मने वनगमननुं प्रस्थान करावी मातुश्री कैकेयीने आपेली प्रतिज्ञा फळीभूत थतां आपनुं सत्यव्रत प्रकाशने पामो. पिताश्री जेटली मने आपनी आज्ञा प्रिय छे तेटलु त्रणभुवनमां मने कशुंए प्रिय नथी ! केमके पिता एज पुरुषनुं दैवत छे. पिता एज सर्व देवोमां देव छे. अने पिता एज सर्व श्रेयमां श्रेय छे. तो आपनी आज्ञा पाळवामां मने कशो क्लेश, संताप के दुःख नथी. उलटो मने तो आनंद थाय छे के पिताश्रीनी आज्ञा पाळवारुप आवो प्रसंग मने प्राप्त थयो. माटे पिताश्री तमो पण शोकनो त्याग करो; सर्व कोइनां विकळ हृदयने स्थिर करो; अने धर्मशील भ्रात भरतने राज्याभिषेक करी, प्रजानुं सुखेथी पालन करो. पिताश्री हवे एज धर्म छे, एज कर्तव्य छे, अने एज आनंद होवो जोईए. माटे धैर्यनुं ज अवलंबन करी पिताश्री हवे आज्ञा आपी त्रणेकाळमां अने त्रणे लोकमां सुखकर एवुं प्रस्थान स्वहस्ते शीघ्र करावो. (रामचंद्रजीनां आवां वाक्य श्रवण करतां महाराजा श्री दशरथ निश्वास नाखता नाखता मूर्छांगत थई जाय छे).

सुमंत्र—(आकळो थइ कैकेयी प्रत्ये) अरे मूढमति कैकेयी, तारुं कृत्य विवेक त्याग करावे छे. तुं स्वामिघातिनी केम निवडी ? !!! कोटी पुत्र करतां पण स्वामि अधिक छे. रामभद्र सरखा पुत्रने वनवास आपी इंद्रसमान अजय अने अकंप नृप श्रेष्ठ महाराजाश्री दशरथ के जे तारा स्वामी थाय तेने संतापतां तुं जराए लजवाती नथी ? देव अने मनुष्य एम सर्व स्थळे तारुं कृत्य केटलुंबधुं निष्ठुर अने दुष्ट गवाय ए शुं तुं श्रवण करती नथी ? एम श्रवण करतां तारां हृदयने शुं लेशमात्र पण क्षोभ थतो नथी ? अहा हा !! काळे मनुष्यरुपमां तने खरे एक पिशाचिका ज सर्जी छे !!! पतिने संतापवाथी नर्क-

वासनो पण, अरे हीनमति, तने भय नथी ? !!! नहि तो धर्मने जाणनार महाराजाश्री दशरथ अने धर्ममूर्ति श्री रामभद्र सरखां रत्न उपर तुं घा करवा केम तत्पर थाय ? ते पण स्वामि अने पुत्र !!! रामभद्रविना महाराज जीवी शकशे नहि अने तेथी प्राप्त थतुं वैधव्य पण, अरे नीच, अरे दुष्ट, अधम बुद्धिने वश थई व्होरी लेतां लेश पण अचकाती नथी ? ! खरेखर तारां जेवुं काळभक्षी बीजुं कोण होय ? ! तारुं कृत्य एटले ज अटकतुं नथी. पण नगरजनने विना कारणे आक्रंद, निश्वास, संताप अने क्लेशनुं कारण आपतां तारुं हृदय सहज पण कंपतुं नथी ? !! अहो ए केवुं कठोर छे !!! पाषाणसम केवुं निष्ठुर छे !!! वज्रसमान केवुं तीव्र छे!!! अने काळसम केवुं घातक छे !!! (कैकेयी कंईपण प्रत्युत्तर आपती नथी) (विशेष रोषमां) अरे निर्लज्ज ! भरतजी कंई तारा जेवा मूढ नथी. रामभद्रनी त्याग करेल अयोध्या भरतजी कोईपण काळे ग्रहण करे एम नथी. हमो सर्व पण रामभद्रनी संगे ज जईशुं. तो शून्य अयोध्याने तुं शुं करीश ? (हजी पण कैकेयी कंई उचरती नथी) अरे पिशाचिका ! मनुष्यमात्रे त्याग करेल शून्य गृहवास ज तारे योग्य छे. भले तुं उजड राज्यमार्ग, गलीओ, शेरीओ अने पोळोमां खंडीयर थतां गृहोमां ज आनंद पाम ! भले काक, घुवड, गृध, सर्पादिक क्रूर अने विक्राळ प्राणिओ ज तारां संगी थाओ !! खरेखर तने एज योग्य छे एमां आश्चर्य नथी !!! तारी मातानी एवी स्वामिभक्षक वृत्तिने लीधे ज तारा पिता केकये तेनो त्याग करेल हमारा जाणवामा छे तो एवी मातानी पुत्री पोताना स्वामी अने पुत्रने विनाश आप्याविना केम रहे ? !!! (किंचित्काळ विराम लइ) अरे कैकेयी हजी पण तुं कंई समज !!! जरा तो विचार के तुं केवा कुळमां केवा पुरुषनी धर्मपत्नी छे !! केवा पुत्रनी माता छे !! अने केवी

तारी गणना छे!!! (कैकेयीना मुख उपर लेश पण असर न ज-णातां) खरेखर विधाता ज दोषरुप छे के आवो संयोग थवा पामे !!! धर्मस्वरुपने घातक हस्तक ज अर्पण करे अने सहुको नि-रुपाय बनतां दडदड वहता अश्रुप्रवाहसह शरीरमांथी नीचोवातां रुधीर अने मांसनुं—हीनस्वार्थरुपी यज्ञनी घातकवृत्तिनी स्वाहारुपी ज्वालामां—बळीदान थतुं टगटग जुए !! अरे काळ ! तुं पण अति विषम ज छे !!! के आवां दुष्टने हस्त सर्वनो संहार ए पण तारी गति !!! (एम बोलतां बोलतां सुमंत्रनुं हृदय पण स्तब्ध थई जाय छे) (एवे महाराजाश्री दशरथ जागृत थाय छे).

दश०—(अति विषम शोकाकुळ हृदये) अरे मारा व्हाला सुमंत्र तुं कहे तेम अयोध्या उजड थाओ !!! ए दुष्टा समजे एम नथी. मारी सेना, हस्ती, अश्व, रथ अने राज्य चिन्हादिक सर्व वस्तुओ धन धान्य सुवर्णादिकसह मारा प्राणसमान राम संगे जवा तैयार करावं. पछी भले भरत एनी मातासाथे उजड अयोध्यानुं पालन करे !!!

कैकेयी—(निराश मुखे) धर्मात्मा, आप तेमज धर्मने जाणनार रामनी एवी प्रतिज्ञा नथी. उजड अने रसहीन अयोध्यानुं भरत कोईपण काळे ग्रहण करशे नहि. एवां राज्य माटे में कंई वरदान माग्यां नथी. भले आपनुं वचन मिथ्या थाओ !! भले राम सत्यहीन ग-णाओ !!! पण मारे ए अयोध्या जोईती नथी !!!

दश०—(अति क्रोधावेशमां) अरे दुष्ट ! अरे पापिणी ! ओ स्वामि घातिनी ! तें कंई एवुं माग्युं नथी.

कै०—(क्रोधमां) महाराजा, तमने जो धर्म प्रिय होय तो पूर्वे तमारा ज कुळमां सगर राजाए पोताना ज्येष्ठ पुत्र असमंजने जेम राज्यथी भ्रष्ट

करी वनवास आप्यो हतो तेवीज रीते रामने पण वनवास आपो.

दश०–(अति खिन्न थतां) हा! धिक् !! हा ! धिक् !!!

समूह–(स्वगत) अरे दुष्ट ! अरे निर्लज्ज ! आ तुं शुं करे ? !!! तारी जीभ केम कपाइ जती नथी ? !!! तुं मृत्युवश केम थई नहि ? !!! शुं महाराजाश्री दशरथने आ थोडुं कष्ट ? !!!

वृद्धमंत्री सिद्धार्थ–अरे मूर्ख, राज्ञीपदने पामेली छतां तुं आवा तिरस्कारने ज पात्र छे. तारी बुद्धि केम नष्ट थई के बाळघाती असमंज अने धर्मस्वरुप रामचंद्रजी बन्नेनो भेद जोई शकती नथी !!! असंमज तो नगरनां बाळकोनो घात करतो हतो, तेथी धर्मने जाणनार सगररायनो प्रजापालन अर्थे पुत्रप्रत्ये एज धर्म हतो. क्यां असंमज अने क्यां धर्मात्मा रामचंद्रजी !!! रामचंद्रजीनुं शील चंद्रसमान उज्ज्वळ छे. अने एमनो प्रकाश तो सूर्यथी पण अधिक छे. तो आवी सरखामणी करतां तारी जीव्हा जरा पण अटकी नहि? !!! तारुं ते केवुं शिलासम हृदय !!! गमे ते अन्य हृदयने विना कारणे क्लेश आपवो एज अनिष्टदाता छे तो महाराजाश्री दशरथ सरखा धर्मशील अने रामचंद्रजी सरखां कोमळ, निर्मळ अने सरळ हृदयने अनिच्छित आपवाथी तें अनिष्ट एवां कयां फळनी ईच्छा करी छे?!!! तारा सरखो अधर्म इंद्रनी कांतिने पण बाळीने भस्म करवा समर्थ छे तो राम सरखा पुत्रने वनवास आपी अने महाराजाश्री दशरथ सरखा स्वामीने मृत्युसम घा आपतां तने कयुं श्रेय प्राप्त थशे? अरे कैकेयी, तारोज

पुत्र तारां कृत्यने संमति आपशे एनो तें शराए विचार कर्यो छे? महात्मा भरत एवां कार्यने कोईपण काळे अनुमोदन आपे ज नहि. तो तारा एवा सहुकोने संतापजनक परिश्रमथी शुं? माटे हजी पण कंई समज!! अने तारां कृत्यनो फरीथी विचार करी त्रणेलोकमां विनाशने आपनारी अपकीर्तिथी तारां जीवननुं रक्षण कर!!! (कैकेयी प्रत्युत्तर आपती नथी).

दश—अरे दुष्ट! आवा सद्पुरुषोनो बोध पण तने भेदी शकतो नथी तो भले आ अयोध्यापुरीनुं तुं राज्य कर. अने एम थतां निश्चे तारुं अकल्याण ज थशे. हुं तो राज्य अने सुखसंपतिनो त्याग करी, जरुर रामसंग ज सेवीश, अने भले तुं भरतसाथे राज्य कर!!!

राम—पिताश्री, आपनां हृदयने आटलोबधो क्लेश आपवानुं कारण नथी. हस्ती, अश्व, रथ, लक्ष्मी विगेरे जे मने संगे आपवा कहोछो ते में भ्रात भरतने ज अर्पण कर्युं छे. एटले ए सर्व वस्तु तो मने अग्राह्य ज छे. मने तो वनने योग्य वल्कलचीरादिक मुनीवेश ज योग्य छे. आपनी प्रतिज्ञा खातर में सर्वस्व त्याग कर्युं छे तो पिताश्री हवे आवी रीते जीवने कष्ट आपवाथी शुं? आ मारुं कृत्य मातुश्री कैकेयीनी प्रसन्नता ज खातर छे तो सेनादिकनुं हवे मारे शुं प्रयोजन? अकिंचन वनवास ज मने तो प्रिय छे. अने तेज हुं सेवीश. अने ए सर्व हुं भ्रात भरतने ज अर्पण करुंछुं. (कैकेयीनी दासी प्रत्ये) मारे माटे हवे तो वनने योग्य वल्कलादिक लावो. तेमज वनमां फळाहार योग्य जे जे साधन जरुरनां होय ते पण लावो. (कैकेयी हर्षमां आवी जई वल्कल वस्त्रो आणी आप्या पछी).

कै०—हे राम, वनने योग्य फळाहार माटे शस्त्र तथा टोपली दासीओ लावे

एटले आ वल्कल परिधान कर.

(कैकेयीनुं आ कृत्य जोई सहुको स्तब्ध थइ जाय छे, रामचंद्रजी तरत वल्कल ग्रहण करे छे अने लक्ष्मण सहित वल्कल पहेरी रहेछे) (एवे).

सीता–(शरमातां) प्रभु, मुनिपत्नीओ आ वस्त्र केवी रीते परीधान करतां हशे ? (रामचंद्रजी ज्यमत्यम वल्कल प्हेरावे छे).

समूह–(दडदड अश्रु गळतां) हा कष्ट ! हा धिक् !! हा धिक् !!! आते केवुं दुष्ट कृत्य !!! बिचारी सीताजीने आ कष्ट ?!! ओ ईश्वर ! आ सहु तुं केम सहन करे !!!

अंतःपुरनो स्त्रीओ–(खेदयुक्त) सीताजी शुं वल्कल चीर प्हेरवा सर्ज्यां छे? के स्वामीसह राज्यमुगट ग्रहण करवा सर्ज्यां छे ? आ त्रास हमो केम जोई शकीए ? शुं सीताजीने पण वनवास आप्यो छे ? हे राम भले तुं पितानी आज्ञा माटे वननुं सेवन कर. पण कोमळ, पवित्र अने धर्मने जाणनार सीताने तो तुं अहिंयां ज मूकी जा. हमो एने लेश पण ओछुं आववा दइशुं नहि. अने एतो हमारी संगे नित्य आनंदमां ज रहेशे. माटे हे राम हमो पण तारी मातुश्री होवाथी हमारुं एटलुं वचन मान्य राख !!!

वसिष्ठ–(गद्गद थतां सजळ नेत्र) अरे कैकेयी, तें मर्यादानो त्याग कर्यो छे. खरे तुं इक्ष्वाकुकुळने कलंक आपवा ज जन्मी छे. नहि तो आवा अधर्ममां प्रवृत्त थाय नहि. तुं एटलुं पण विचारती नथी के सीताजी माटे तें वनवासनुं वरदान माग्युं नथी ?!!! तो सीताजी माटे वल्कलचीर आणी आपतां जराए कज्जाए तने घेरी नहि ?!!!

हा खरे तने श्वीकार ज छे. पण तुं एटलुं नक्की समज के कंई सीताजीने वनवास नथी. सीताजी रामचंद्रजीनुं अर्धु अंग छे. जेथी करी रामचंद्रजी पितु आज्ञाने अनुसरी वन सेवन करतां छतां पण सीताजी राज्य करशे. अने प्रधान अने प्रजाजनसहित हमो सर्व एना अनुवर्ती थई रहीशुं. एमछतां पण जो तने संतोष थतो न होय तो हमो सर्व रामचंद्रजी संगे वनवास ज सेवीशुं. धर्मात्मा भरतजी जे तारा पुत्र थाय छे ते पण ज्येष्ट बंधु रामचंद्रजीसंगे वल्कलचीर ज धारण करी वनवास ज सेवशे. अने पछी भले शून्य थयेल पृथ्वीवुं तुं पालन कर !!! हुं सत्य कहुंछुं के भरतजी जो दशरथतन कहवडाववा ईच्छता होय तो कदिपण पिताश्रीथी अणर्पित पृथ्वीनुं राज्य ग्रहण करशे नहि. भरतजी कुळना महत्वने जाणनारा छे. ते कोईपण काळे अधर्माचरणनुं सेवन करशे नहि. जेथी करी अरे कैकेयी तुं पुत्रनुं श्रेय न करतां अश्रेय ज करे छे. रामचंद्रजीना आश्रय रहित एवी कोईपण वस्तु नथी तो रामचंद्रजीनुं कष्ट जोइ भरतजी पण अति दुःखी ज थशे. रामचंद्रजीना आवा महत् द्रोहथी तो भरतजी पोतानुं शिर छेदायलुं ज मानशे. अने कोईपण प्रकारे, एमनां हृदयकष्टने लीधे, स्वप्ने पण एओ सुख जोई शकशे नहि. तो हे कैकेयी तुं जरा तो विचार के तारा पुत्र भरतजीनुं तुं केटलुंवधुं अप्रिय करे छे? (सहज विराम पछी) हजी पण कंई लज्जा पाम अने सीताजी जे तारी वधु ज थाय छे तेने उत्तम वस्त्राभरण स्वहस्ते आप. सीताजीने तो वल्कलचीर अपाय ज नहि. सीताजी पतिधर्मने अनुसरीने ज वन जाय छे कंई तारी प्रतिज्ञा खातर जतां नथी. माटे हजी पण तारी भूल सुधार !!

सीताजी–(वसिष्ठने नमन करी) गुरुश्रेष्ठ, जे धर्म स्वामीने प्रिय छे तेज धर्म मने प्रिय छे. जेथी करी आपने आवो आग्रह नहि करवा हुं विज्ञापना करुंछुं. स्वामीश्रीना अने मारां आवां कृत्यथी मने लेशमात्र पण क्लेश नथी. एवी धर्मपरायणता ज हमने तो विशेष आनंदे छे. जेथी हमो तो स्वामीसह आपना शुभ आशिष ज ईच्छीशुं.

समूह–(न सहन थई शकवाथी) ए पापिणी तो दुष्ट नीकळी पण महाराजाश्री दशरथ आवो अनर्थ केम जोई रहे? सीताजीनी आवी अवस्था जोई रहेवी ए शुं एमने योग्य छे? सीताजी माटे एओ पोतानो नृपधर्म केम अदा करता नथी? (आवा उद्गार श्रवण उपर पडतां).

दश०–(निश्वास नाखतां नाखतां दु:खी हृदये) अरे दुष्ट! अरे क्रूर! अरे घातिनी! शुं सीताने पण तें वनवास आप्यो छे? सीताने कौषेयादिकवस्त्र अने सुवर्णादिक आभरण केम आपती नथी? धर्मने लीधे राम माटे हुं कंइए वदी शकतो नथी. पण सीता तरफ तो अधर्म वर्तातो हुं जोई शकीश नहि. मारो नृपधर्म एवो अधर्म प्रवर्तावनारने शासन कर्याविना रहेशे नहि. (सीता माटे हजीपण कैकेयी कंईए करती न होवाथी) अरे सेवक, क्यांछे मारुं धनुष्य? क्यां छे मारुं खडग? (क्रोधपूर्वक) लाव! सत्वर लाव! सत्वर लाव! ए दुष्टानुं एना सीता तरफना अधर्म माटे हवणा ज शिर छेदुं. (एम बोलता बोलता दशरथराय उभा थवा जाय छे. अने कैकेयी खसी जाय छे).

राम–(दशरथने पकडी राखतां) हां पिताजी! हां पिताजी! आपने ए

घटे नहि. मातुश्री कैकेयीने आपे एवी शिक्षा करवी घटती नथी. सहू काळनुं ज कार्य छे. एमां आपनो शो दोष ? हवे मने सत्वर प्रस्थान करावो. मातुश्री कौशल्याने मारो वियोग न पीडे एम करशो. अने सर्वे मातुश्रीओनुं पण सारी रीते सांत्वन करशो. पिताश्री हवे एज धर्म छे. एज कार्य छे. माटे हवे विलंब करो नहि अने मने सत्वर प्रस्थान करावो. मारां अत्र वधु रहेवाथी आप तेमज सहुकोने वधु अने वधु कष्ट थाय छे. माटे धैर्य धरी विलंब रहित प्रस्थान करावो.

दश–(अति शोकाकुळ हृदये) हे राम–(वधु वदातुं नथी) (थोडेक काळे शांत थतां) पुत्र मारुं धैर्य रही शकतुं नथी. पण हवे तुं कहे एम ज करीश. (सुमंत्र प्रत्ये) व्हाला सुमंत्र, रामने माटे सुवर्णजडित रथ शीघ्र तैयार करी लाव. विलंबनुं हवे कारण नथी. वळी सीता माटे चौदवर्षपर्यंत चाले एटलां कौपेय वस्त्र अने अलंकारादिक सामग्री पण आणी सीताने अर्पण कर.

सुमंत्र–जेवी महाराजनी आज्ञा. (नमन करी जाय छे).

(वस्त्रादिक लावी सीताजीने सुमंत्र अर्पण करे छे. सीताजी ए ग्रहण करतां नथी).

राम–अयोनिजा, पिताश्रीना हृदयने कष्ट आपवुं घटतुं नथी. ए ग्रहण करवा धर्म तने कोईपण रीते बाध करतो नथी. माटे पिताश्रीनी आज्ञानुं उल्लंघन करीश नहि.

सीता–प्रभु, आपनी आज्ञानुवर्तीछुं. (एम कही ग्रहण करे छे.) (ग्रहण थई रहेतां सीताजी कौशल्याने नमन करे छे).

कौ–वधु सीते, स्वामीसंगे तारुं कृत्य खरे प्रशंसनीय ज छे. एथी तें तारो धर्म ज अदा कर्यो छे. मारो पुत्र राम के जे तारो स्वामी थाय छे तेने

तुं नित्य आनंद आपजे. एम छतां स्त्रीस्वभाव अति चंचळ होय छे. सहज सहजमां रीसाळ बने छे. अने क्लेशादिक पर्यंत पण जई चढेछे. स्त्री जातिनी अभिलाषाओ अति तीव्र होय छे अने स्त्री जातीनी हठ अति निष्ठुर होय छे. माटे वधु सीते ए कदिए तने न पीडे तेनी सदाकाळ रात्रीदिवस संभाळ राखती रहेजे. स्त्री जातिना तरंगो अने मनस्वीपणां स्वामीने कंई थोडां दुःखद थई पडतां नथी. माटे हृदयना एवा आवेशनो सदा शमदमथी लय करतां रहेवुं. अने स्वामीनी ज मनोवृत्तिने अनुसरी स्वामी सुखमां ज नित्य आरक्त थवुं. पति ए प्रभुतुल्य छे. माटे वाणी, कर्म, हृदय के मनथी पण पतिनी अवज्ञा करवी नहि. स्त्री जातीमां अहंभावनो वास विशेष होय छे. स्वामीना नियंता थवा जीज्ञासा विशेष तीव्र होय छे माटे एथी पण संभाळता रहेवुं. स्वामीनी जो भूल थती होय तो विवेक, प्रेम अने युक्ति पूर्वक स्वामीने समजावी भूल थती अटकाववी पण कोईपण काळे रोष के क्रोध करवो नहि. टूंकमां में ए नारी धर्म कह्या तेनुं सदा सेवन करी पतिने आनंददाता थई रहे.

सीता–(नमन करी) मातुश्री, अवश्य एज धर्मनुं हुं सेवन करीश. तेमां आपनुं धर्माचरण मने विशेष बळ आपशे. अने तेम थतां हुं मारा धर्ममांथी कदिए चूकीश नहि. आर्य स्त्रीनो धर्म हुं सम्यक रीते सदा उत्सुकताथी पाळीश एमां संशय करशो नहि.

कौ०–(गद्गद सजळ नेत्रे) वधु मने तारां व्रतमां पूर्ण श्रद्धा छे. माटे स्वामीसंगे सहगमन करी सुखी था. (कौशल्यानी आंखमांथी अश्रु वहतां जोई).

राम–मातुश्री आवी रीते व्याकुळ थई तमने शोच करवो घटे नहि. चौद वर्षनो काळ चौदघटी समान वही जशे अने त्यारे हुं सदा तमने आ-

नंद आपीश. (अन्य मातुश्रीओने) तमने पण मारी एज प्रार्थना छे. मातुश्री कौशल्यासंगे रही पिताश्रीनो क्लेश दुर करशो. अने तेमने सदा धैर्य आपशो. चौदवर्ष जतां हुं तमो सर्वने आनंद आपीश.(कोई पण माता वदी शकी नहि. सर्वांग अश्रुथी न्हवाइ रह्यां एवी स्थितिमां सहुको टगटग जुए छे.)

लक्ष्मण–(सुमित्रा प्रत्ये) मने हवे आज्ञा आपो. रघुकूळदिपक वडिलबंधु रामचंद्रजीसंगे जई एमनी शुश्रूषा करी इक्ष्वाकुकुळनो धर्म अदा करुं.

सुमित्रा–(सजळ नेत्रे) पुत्र, धर्मस्वरुप राममां तारी अचळ श्रद्धा छे एथी ज रामसंगे जवा में तने संमति आपी छे. पुत्र, सदा सावध रहजे, कार्यमां सदा उत्सुक रहजे, युद्धप्रसंगे मरणनो भय राखीश नहि, वडिलनी सदा शुश्रूषा करजे अने इक्ष्वाकुकुळना धर्मने ज स्मरणमां राखी शौर्यथी मातुपितुने उज्ज्वळ प्रकाश आपजे. पवित्र सीता हवे माताने स्थाने छे. माटे एनी सेवामां पण सदा तत्पर रहजे अने सर्व कार्यमां सहायभूत थई राम अने सीताने आनंददाता था. ए मारा आशिष सदा सुखदाता ज हो. (राम प्रत्ये) राम हवे सुखेथी शीघ्र वन प्रयाण करो, अने अवध वीते कुशळ आवी पहोंचो. (लक्ष्मणने) पुत्र तुं पण संगे आनंदरुप जा अने सदा सेवामां तत्पर रहजे !!!

सुमंत्र–रामभद्र, रथ तैयार छे.

राम–भ्रात लक्ष्मण, जनकतनया सह आपणे हवे चालो शीघ्र प्रयाण करीए.

लक्ष्मण–हा, प्रभु. (त्रणे चाले छे).

सुमंत्र–(आगळ चाली) आ रह्यो रथ.

राम–लक्ष्मण, जनकतनयाने प्रथम बेसाड. (लक्ष्मण तेम करे छे) हवे तुं

बेस. (लक्ष्मण बेसे छे अने छेवटे राम बेसे छे. सुमंत्र धीरे धीरे रथ हांके छे. दशरथ, कौशल्या तेमज अन्य समूह पाछळ पाछळ जायछे).

दश०—(आक्रंद करतां) हा पुत्र, हा राम, हवे मारुं धैर्य छूटे छे, शरीर कंपे छे, शौर्य नाश पामे छे. विर्यहीन तारो वियोग जोवा हवे हुं केम जीवी रहुं ? !!! मारां गात्र शिथिल थई जाय छे, हवे हुं जीवीश नहि ! हा धिक् !! हा धिक् !!! हे राघव आ देश क्यांसुधी तारो वियोग सहन करी शकशे ? देश नहि करशे तो आ देह क्यां सुधी करशे ? ज्यारे तारो वियोग ज छे तो आ देह शा अर्थे ? शुं तारे माटे आत्मभोग अस्थाने छे ? हे राम ताराविना आ स्वार्थी देह केम धारण करी रहुं ! हे राम, ज्यारे तने न्याय, प्रतिज्ञा अने धर्म प्रिय छे तो शुं आ दशरथ एज उद्देश खातर निज आत्मभोग आपतां विलंब करशे ? नहिं, नहि, कदि नहि !!! हे राम हुं तारी समीप ज आवुंछुं. उभो रहे, तुं उभो रहे !!! हुं तो तारी सन्मुख ज रहीश. हे राम नक्षत्री पृथ्वी करनार परशुने हवे कोण दमशे ? हे रंक नृपो तमारी दीनता हवे कोण त्याग करावशे ? !!! गृहखूणे छूपाई रहता तमने बहार फरता कोण करशे ? निर्माल्यताना भार तळे दबातां तमारां बळतां हृदयने शोकमुक्त कोण करशे ? दीनतारुपी अंगमां नीचोवातां अहम्भावतळे छूंदातां, मोह आगळ परवश थता स्वार्थ आगळ हीत अने निर्माल्य थतां तमारा देहरूपी क्षुद्र तत्वोने उन्नत कोण करशे ? हे राम तारो संकल्प छोड, सन्मुख था अने आनंद आप. (ए प्रमाणे आक्रंद करता दशरथ अंतःपुरथी थोडेक जतां ज मूर्छीगत थई जाय छे. कौशल्या आश्वासन करे छे. पुरजन पाछळ जवुं जारी राखे छे).

पुरजन—(आक्रंद करतां) हाय ! हाय ! सहु रसातळ जाय छे. महाराजा श्री दशरथ तो हवे प्राण त्याग करशे. हे रामचंद्रजी हमो तो त-

मारीसंगे ज आवीए छीए. रथ धीरो हांको! धीरो हांको!!! हमने तरछोडी क्यां जाओ?!! तमो विनानी अयोध्या हवे शा अर्थनी?!!! हे प्रभु हमने उगारो, हमारुं रक्षण करो, हमने पोषो, हमने आनंद आपो! आनंद आपो!!! (ए प्रमाणे आक्रंद करतां पुरजन पाछळ पाछळ दोड्यां आवतां जोई)

राम—सुमंत्र.

सुमंत्र—महाराज शी आज्ञा?

राम—पुरजन बहु दुःखी थाय छे रथ धीरो हांक.

सुमंत्र—जेवी आज्ञा.

(रथ धीमे धीमे हांके छे) (पुरजन समीप आवी पहोंचे छे).

राम—(रथमांथी उतरी पुरजन प्रत्ये).

मालिनी.

पुरजन बहु दुरे आवशो मा हवे ये
तन दुख तम जाणी दाझतुं हुं हृदे ए
स्थिर गति करी रहेशो प्रेम पासे करीने
भरत पितु शुं देजो स्नेह हर्षो धरीने!!! ५
प्रीति मम उर धारो, हेत आणी वळो हा!
मुज पितु दुख जाणी सुख आपो वळी त्यां
मृदु गुण शील वासे योग्य छे भर्त भ्राता
विर नृप तम जाणी प्रेम पोषो भूधाता! ६

(पगे चालतां चालतां पूरजनने विनवता विनवता रामचंद्रजी जाय छे).

इति रामवियोग नाम नाटके वनप्रयाण नाम चतुर्थो अंक समाप्त.

अंक ५ मो.

अयोध्यापुरी–दशरथप्रासाद.

एक दासी–(बीजी दासीने) रांड मंथरानो तो घाट घडायो जो !

२ जी–शुं कहे ? !!

१ ली–हा, हा खरुं.

३ जी–केवी रीते ?

१ ली–कुमार श्री शत्रुघ्ने रांडनो चोटलो झाली भोंय उपर पछाडी खूब गडदे पाटु कीधी.

२ जी–रांड मुईनी ?

१ ली–रांडनुं तो आवी ज बनेलुं पण आवरदानी पाधरी एटले कुमारश्री भरतजी स्त्रीहत्याना भयथी वच्चे पड्या अने रांडने जती कीधी.

३ जी–कुमारश्री भरतजी तो खरेखर महात्मा ज छे.

२ जी–हा बेन तुं सत्य कहे छे. रामभद्र अने महाराजाश्री दशरथना वियोगने लीधे आज आटला दिवसमां तो एमनुं शरीर केवुं सुकाई गयुं छे !!!

१ ली–अली कुमारश्री भरतजी तो "ओ राम"! "ओ राम"! अने "हाय पिताश्री"! "हाय पिताश्री "! एमज रातने दहाडो कर्या करे छे.

३ जी–रामभद्रविना, एमना शरीरने जरा पण जंप वळतो नथी.

२ जी–कहेवाय छे के गुरु वसिष्ठजी अने बीजा प्रधानोए घणुंए समजाव्या पण "रामचंद्रजी"विनां बीजुं कशुं तेमने गळे उतरतुं नथी.

१ ली–पोताने राज्याभिषेक करवानी ना पाडे छे.

३ जी—एटलुं ज नहि पण पोते तो रामभद्रनी पाछळ वनमां जवानी वातो करे छे अने तैयारी पण करता जणाय छे.

२ जी—अहो भाई उपर केवो प्रेम !!!

१ ली—एम कहेता कहेवाय छे के रामभद्रने पाछा लावुं तो ज मारुं जीव्युं !!

३ जी—रामभद्र तो शुं आवे ?

२ जी—रामभद्र नहि आवे तो ए पण पाछा आवे एम नथी.

१ ली—देखाय छे तो एवुं. जे प्रभु करे ते खरुं !

३ जी—आपणी नगरीनुं शुं थशे ?

१ ली—रामभद्र सर्व रीते समजुक छे. कंई जोड तोड काढशे.

२ जी—ए तो गमे तेम थशे पण मने तो बहु लागी आवे छे.

१ ली—पण ब्हेनी शुं करीए ? दैव आगळ कंई इलाज छे ?

३ जी—हास्तो !!

२ जी—रणवास पण बधो साथे ज जशे.

१ ली ने ३ जी—त्यारे तो आपणे पण भाग्यशाळी के धर्मशील रामभद्रनां दर्शनथी पावन थईशुं.

२ जी—रामभद्रनां दर्शन शिवाय आपणे बीजुं शुं जोईए ?

इति विष्कंभक समाप्त.

प्रवेश १ लो.

अयोध्यापुरी—भरतप्रासाद.

(दशरथरायनी अंत्येष्टिथी परवार्या पछी)

भरत—(स्वगत) अहो ! अयोध्या !

इंद्रवज्रा

आनंदमां तुं मुकी हुं गयो तो
हा हा !! पितु शून्य प्रवेश दीधो !!!
(एम छतां) धायो शुं होंसे ! मुज बंधु जोवा
जातां वने राखी गया हु रोवा !!! १

अरे मारी अयोध्या तारी शी दुर्दशा !!!

मालिनी.

कुसुम कळी खीलेली हंत शोषाई चाली !
नहि नहि उरकाळे [१]बाळी ए झाली झाली !!!
नयन रस गयो हा ! जोउं हुं अश्रु धारा !!!
वदन दीन उरदाहे त्राहि त्राहि पुकारो !!! २

खरेखर.

कुसुम वनशुं वेली आज ऊडी गई हा !
हती न हती हुं जोउं शुं अयोध्यापुरी आ ?!
न दिसत रसगंधो दाह ऊना फुंके ए
विपरीत गति काळे स्मर्णथी उर बाळे !!! ३

अरे स्वामीरहिता अयोध्या !

नथी नथी दुख घेली सिंचवा माळी तुं को
नवरस थई सुंका वाटिका मे कहेशो ? !

---

१ उरकाळे—काळनां हृदये, काळनी अनन्ताना हृदये, काळनां समप्रपणानी अंतराय काळने अनुकूळ क्रियाए.

दुख दरद तुं जाणी कोण उगारी लेशे?
फरी फरी रस सिंचे प्रेम सौ क्यार देशे? !!! ४

हा अयोध्या! हुं शुं जोउं? सर्वत्र उजड, निरुत्साह, दया, दीनता अने शोक एज दृष्टिगोचर थाय. भय, भय अने भय!!! अरे पिताश्री दशरथ! बीचारी रांक अने सुशील तमारी नगरीनी दया नहि आवी? अहो भ्रात श्रेष्ठ रामचंद्रजी, अहो वडिल बंधु, आम शोकग्रस्त प्रजाने मूकी जतां तमारां विवेक बळे तमने नहि वार्या? पण अहाहा!! ए सर्वनुं मूळ कारण ज हुं छुं!!! एथी ज अरे पिताश्री—

शिखरिणी.

नहि शांति पाम्या, जीवनसुख लेतां तन पडे
अहा दुःखे डूल्या दिनमणी जतां राज्य तजी ए
(एम छतां पण)
कीधा क्यां विश्रामो नगरजन रुए फरी फरी
हवे क्यां शुणीशुं? पितु मधुर वाणी सुख करी!!! ५

पिताश्री हमारां कृत्य तरफ न जोतां तमारो हमारा उपरनो प्रेम पण आडे न आव्यो?

इंद्रवज्रा.

प्रेमे कडाव्या बहु लाड पोते
घटथुं शुं जावुं मुकी आम रोते?!!!
शुं दुष्ट माता तन योग भाळ्यो?
रामे रमी हा, तन अंत आण्यो!!! ६

खरेखर एम ज होवुं जोइए केमके

इंद्रवज्रा.

प्राणो गया रामशुं प्रेमपाशे
"हा धन्य" ए शांतिथी छुटी आशे.
(केमके) आज्ञा पितु शिर चढावी चाल्या
देखी दुखो राम ! जरा न हाल्या !!! ७

पण अहो रामचंद्रजी,

पुष्पिताग्रा.

पितुदुख नहि धार्युं केश पोते
स्वजन तजी वनवास झीलीं लेते
(केमके) नयनपथ थकी दुरे जतां तो
तजी दीध देह, नहा वियोग स्हेतां !!! ८

अहो रंक अयोध्या, हवे तो तारो वास पण मने अनल प्रकटावी रहे छे के

इंद्रवज्रा.

इक्ष्वाकु कुळे न कलंक लीधुं
के ज्येष्ठ भ्राता तजी राज्य कीधुं
ए धर्म धारी मुज अर्थ सारुं
हा धर्म विना सुख क्यांय भाळुं ? ९

(विचारग्रस्त रहे छे).

(जागृत थतां) त्यारे हवे तो हे अयोध्या
शाने रह्यो हुं तुज वास धारी ?
भ्राता पितु गुण हदे न आणी

हा हा घटे धर्म हवे हुं केवो ?
भ्राता सुषेवे रस अंग देवो ! १०

हुं छतां रामचंद्रजी वनवास सेवे ए माराथी केम सहन थाय ? मारुं जीवन पण शा अर्थे ? मारो कुळधर्म पण शुं कामनो ? शुं रामचंद्रजीए मारुं हृदय जाण्युं न हशे ? एक स्त्रीना वचन उपर राज्य त्याग करवुं एमणे केम उचित धार्युं ? शुं प्रधानवर्गे अने रुषिश्रेष्ठ वसिष्ठे पण एमने वार्या न होय ? शुं मारो स्नेह पण याद कर्यो न हशे ? (विचारमां पडी जई) एम ज होवुं जोईए. त्यारे मारे विषे शुं धार्युं हशे ? हीनमति कैकेयीना जेवो ज हलको अभिप्राय मारे माटे तो आव्यो न होय ? (विचार करी) पण रामचंद्रजी मने भूले एम नथी. रामचंद्रजी मारो भक्तिभाव सारी रीते जाणे छे. एम छतां सुमंत्रने बोलावी पुछुं के रामचंद्रजीए शुं संदेशो कहाव्यो छे अने मारे विषे शुं विचार बांध्यो. (प्रकाश) प्रतिहार—

प्रतिहार—(प्रवेश करी नमन करतां) कुमारश्रीनो जय !

भरत—सुमंत्रने बोलाव.

प्रतिहार—(नमन करी) जेवी कुमारश्रीनी आज्ञा. (जाय छे).

(सुमंत्र प्रवेश करे छे).

सुमंत्र—(सहज नमतां) कुमारश्रीनो जय !

भरत—प्रधानजी आवो. अहिंयां बेसो. (सुमंत्र बेसे छे) प्रधानजी, महाराजाश्री दशरथ अने ज्येष्ठबंधु रामचंद्रजीना वियोगथी मने जरा पण चेन पडतुं नथी. नगरवास पण मने खावा धाय छे. खरेखर दुष्ट माताना तन कहवाववामां ज शुं आटलुं बधुं शोषवुं पडतुं हशे ?

सुमंत्र—कुमारश्री, एवी रीते ओछुं लावो नहि. एमां तमारो दोष नथी. दैव इच्छा ज बळवत्तर थई !!

भरत—शुं तमो कोईए पण रामचंद्रजीने वन जतां अटकाव्या नहि ?

सुमंत्र—मातुश्री कौशल्या, महाराजाश्री दशरथ, महर्षि वसिष्ठ विगेरेए तेमज में पण रामचंद्रजीने बहुए समजाव्या तोपण तेओ पितुआज्ञाथी विरक्त थया नहि.

भरत—केवुं दृढ व्रत !!!

सुमंत्र—एटकुं ज नहि पण तेमने वळाववा जतां मार्गे युक्ति प्रयुक्तिथी प्रजा तेमज स्नेहिओनां उपर आवी पडेली आपत्तिथी तेमनी दयाजनक स्थितिनुं चित्र रजु करतां कह्युं के—

मालिनी.

सरसर अश्रुधारा राम हा ! शुं न जोता ? !
स्थिरमूंढ गतिप्राणी केम विलोकी रहेता !!
निरमळ रसधारा वज्रघा पात दे शुं ?
जनरसगतिभंगे शांति क्यांथी ज केशुं ? !!! ११

त्यारे रामचंद्रजी उलटा प्रौढताथी वदी उठया के,

आर्या.

कदि विकळ मा था तुं दुख जन हरवां छे ज्यां एज नीति
धर्माचरण अरपीने वर्षावुं हुं धारा प्रीति. १२

भरत—प्रधानजी, धर्मव्रत अग्रपदे छे. पण अधर्मक्रियाथी उत्पन्न थतुं व्रत धर्मव्रत केवी रीते होई शके ?

सुमंत्र—ए प्रश्न उपर आवतां ज्यारे में कह्युं के "रामभद्र, जोता नथी के पक्षीओ आकाशमां स्थिर थई रह्यां छे. पवने पण निज कार्य त्याग कर्युं छे. मार्गे मार्गे जनसमूहो पण पूतलांसम ज उभेलां दीसे छे. आ जड पण शोकातुर दीसी अंतर वेदना दर्शावी रह्यां छे ! जेथी

जाणे भूमि, पथ्थर, वृक्ष, विगेरेमांथी पण दुखरूपी अग्निनी ज्वाळा उकळती होय एम सर्वत्र भय व्यापी रह्यो छे के "हाय! हाय! हवे शुं थशे? सहु रसातळ जाय छे!!! रामचंद्रजीविना हवे केम जीवी शकीशुं? हमारुं जीवन पण शा अर्थे?" रामभद्र, आ स्थिति शुं हृदय भेदती नथी? वळी आकाश तरफ जरा दृष्टि करो! एनो निर्मळ आनंद क्यांए लोप थई गयो छे. गगनमां धून्रता शोकोद्गार काढे छे. वायु पण धुंधवाइ उदासीनता सूचवे छे. रामभद्र, आवी रीते प्रेममय मनुष्य जतां सहुनी गति विकळ विकळ थई रही छे तो महाराजाश्री दशरथनुं तो पुछवुं ज शुं? मातुश्री कौशल्याना दुःखथी कोण दग्ध नहि थशे? बंधु श्रेष्ठ भरतजीनुं आक्रंद कोण श्रवण करी शकशे? माटे रामभद्र, हजी पण वनवासनो विचार मांडी वाळो तो वधु सारुं. केमके कंई महाराजाश्रीए वनवास आप्यो नथी. ए तो दुष्ट कैकेयीना वचननुं ज परिणाम छे. तो एवां वचनने वळगी रहेवाथी कया अर्थनी प्राप्ति थशे?" त्यारे रामचंद्रजी बोली उठ्या केः—

इंद्रवज्रा.

शाणे भूले आम सुमंत्र शाणा?
काळो गया छे नहि धर्म वानां
काळे करी दुःख सहेल थाये
आनंद तो धर्म वडे गवाये! १२

वळी शंबासुरना युद्ध प्रसंगे आपवा कहेलां वरदान ए महाराजाश्रीनी प्रतिज्ञा ज छे तो पछी हवे महाराजाश्री दशरथनी आज्ञानी जरुर रहेती नथी. जो पुत्रपाशने लीधे महाराजाश्री ए वरदान नहि आपे तो प्रतिज्ञा भंग थाय. त्यारे प्रतिज्ञाभंग करतां बीजुं कयुं अधर्म होय? जेथी करी महाराजाश्री

दशरथने एवी प्रतिज्ञाभंग करवामां हुं सहायभूत केवी रीते थई शकुं?

केमके,

इंद्रवज्रा.

आत्मागति क्यांय रहे प्रकाशी?
शाथी हृदे धर्म वहे उजासी?
ए प्रश्न जो जो वळी चित्त धारी!
धर्मेंदु विना न प्रकाश जारी! १४

आ प्रमाणे घणुंए समजाव्या छतां मारा सर्व प्रयत्न निष्फळ गया. वळी रामचंद्रजीए उमेर्युं के "भरत मने घणो प्रिय छे. केमके भरत धर्मशील ज्ञानी अने विवेकी छे. तेमज माताओ प्रत्ये समानदृष्टिवाळो छे. महाराजाश्रीनी अनुज्ञा पाळे एवो छे. लोकोनी प्रीति संपादन करवामां उत्सुक छे. जेथी करी मारा चौद वर्षना वनवासथी महाराजाश्री दशरथ, मातुश्री कौशल्या तेमज प्रजाने लेश पण उणुं, भरत आववा देशे नहि. मारा तरफथी भरतने पण तुं कहेज के धर्म एज आपणुं सर्वस्व छे. प्रजानुं हित एज आपणुं कर्तव्य छे. अने वडिलनी शुश्रूषा एज आपणो आनंद छे. माटे सुमंत्र हवे तुं पाछो फर. सत्वर जई महाराजाश्री दशरथ अने मातुश्री कौशल्याने धैर्य आप. अने कहे के राम कुशळ छे अने चौदवर्षनो काळ वीततां जरुर आवी मळशे." एटले माराथी वधु वदी शकायुं नहि. दीनमुखे अंतरमां रामचंद्रजीनां वखाण गातो पण अश्रुथी भरपुर मुख साथे, रामचंद्रजी सीताजी अने लक्ष्मणजीने पण सजळ नयने मुकी पाछो फर्यो. अने सर्व वृत्तांत महाराजाश्री दशरथने कह्यो.

भरत—हा हा! महाराजा ए तमो केम श्रवण करी शक्या!

सुमंत्र—एथी तो महाराजाश्रीनो अंत नजीक आवतो गयो. पटराणी श्रीकौशल्याजीनुं आश्वासन निष्फळ गयुं. अने श्रवणमातपिताना श्रापनुं वृत्तांत कहेतां कहेतां महाराजाश्रीए देह छोडी स्वर्गनो आश्रय कर्यो.

भरत–(सजळ नेत्रे) प्रधानजी, खरेखर काळने एम ज भाव्युं !!! पण हुं हवे अहिं वधु टकी शकुं एम नथी. मने पण मारो धर्म रामचंद्रजीने मळवा जवा आज्ञा करे छे.

प्रतिहार–(प्रवेश करी नमन करतां) कुमारश्रीनो जय !

भरत–प्रतिहार, शुं छे ?

प्रतिहार–महर्षिश्रेष्ठ वसिष्ठ राज्य सभामां आव्या छे. अने मने आज्ञा करी छे के कुमारश्रीने निमंत्रण करी लाव.

भरत–प्रधानजी, चालो आपणे सभामां जईए. रामचंद्रजीने मळवा जवा माटे प्रयाणना समाचार गुरु श्रेष्ठ वसिष्ठने कहि एमनी आज्ञा लईए. गुरुश्रेष्ठ राह जोता हशे माटे शीघ्र जईए. (उठे छे.)

सुमंत्र–कुमारश्री, हा चालो. (जाय छे.)

(सभा प्रवेश करतां)

सभाजन–(उभा थई) राज्यश्रीनो जय ! जय ! जय !!!

भरत–सभाजनो, तमो सर्व आसन लो अने मने कहेवा दो के "ए राज्यश्रीनुं धाम हुं नथी."

(सभाजन बेसे छे)

(सहु बेठा पछी भरतजी बेसे छे.)

(भरतजीए आसन कीधा पछी)

वसिष्ठ–कुमारश्री,

राजा विना एक पळ पण प्रजा जीवी शके नहि. प्रजाने राजा रूपी शिरछत्रनी निरंतर आवश्यकता छे तो स्वामी रहित थयेली प्रजानुं स्वामीत्व ग्रहण करी अनाथ प्रजाने सनाथ करो. महाराजाश्री दशरथने देहत्याग कर्याने आजे चौद दिवस थई गया छे. महाशय रामे वनवासनो आश्रय

कर्यो छे. जेथी कुलोचित धर्म प्रमाणे राज्यश्री, भरतजी, तमने ज प्राप्त थाय छे. माटे हवे ए राज्यश्री तमारे धारण करवी योग्य छे. प्राप्त थयेली राज्यश्री धारण कराववामां थती ढीलथी प्रजानुं जे अकल्याण थाय ते माटे सभा दोषभाक् थाय छे. तेमज जे योग्य कुळ पुरुषने राज्यश्री प्राप्त थाय छे तेओ ए राज्यश्री धारण न करे तो ते पण कायर गणाई प्रजाना निश्वासनुं पात्र थई पडे छे के "हाय हमो अनाथने कोण ग्रहण करी हमारुं रक्षण करशे ?" "पितुतुल्य आनंदवृद्धि कोण करशे ? हमारा व्यापारनी वृद्धि न थवाथी राजा तथा प्रजाने सुख आपनार लक्ष्मीनी वृद्धि क्यांथी करीशुं ? लक्ष्मी विना प्रजानो आनंद केम टकी शकशे ? लक्ष्मी विना राज्यनुं पण रक्षण केम थई शकशे ?" एवी रीते कुमार श्रेष्ठ हाल तो सर्वत्र उदासीनता, भय अने व्यग्रता ज जोवाय छे. व्यापाररोजगारादिक प्रजाना व्यवहार स्तब्ध थई गया छे. ए सर्व क्लेश अने अनर्थनुं मूळ दुर करवा प्राप्त थती राज्यश्रीने झट ग्रहण करो. अनाथ प्रजाने अन्य नृपवर्गना लोभ अने चौरादिकना भयथी मुक्त करो. अने सदा प्रजाना आनंदनी वृद्धि करवा उत्सुक अने तत्पर रहो !!! (बेसे छे.)

भरत—(उभा थई वसिष्ठने नमन करी) मुनिश्रेष्ठ कुळगुरु, आपनां वचन इक्ष्वाकु कुळने सर्वदा आदरणीय अने मान्य छे. रंक अयोध्यापुरीनी दुर्दशा अने दुःख जोई शकाय एम नथी. महाराजाश्री दशरथे स्वर्गवास कर्यो. हमारा ज्येष्ठ भ्राता, इक्ष्वाकुकुळभूषण राज्यश्री धारण करनार अने सर्व हृदयनां आनंदनंदन महाराजा श्रीरामचंद्रजीए वनवास लीधो. एथी शुं राज्य महाराजा श्रीरामचंद्रजी रहित छे ? एथी शुं राज्यलक्ष्मी अनाथ छे ? एथी शुं प्रजा स्वामित्व रहित छे ? खरेखर आ सभा महाराजाश्री रामचंद्रजीने माटेज ए सर्व लक्षण धारण करी रही छे, महाराजाश्रीनो वियोग छतां पण महाराजाश्रीना

अंगनुं कर्तव्य महाराजाश्रीना प्रतिनिधि रूपे महाराजाश्रीना करतां पण अधिक कर्तव्य लागणी अने प्रेमथी राज्यश्रीने योग्य धर्मनुं ए परिपाकन करे छे. जेथी करी सभाजनो अने मुनिश्रेष्ठ, आवी रीते सनाथ प्रजा अनाथ केम कहेवाय? सर्वत्र प्रकाश वर्तावती राज्यश्रीनो कोप थयो केम कहेवाय? एना झळहळता प्रकाश तरफ अन्यको कुदृष्टि पण केम करी शके? एथी करी मुनिश्रेष्ठ, आपे जे भय अने कर्तव्यनुं चित्र खडुं कर्युं तेने माटे हुं लेशमात्र पण अवकाश जोई शकतो नथी. खरेखर सभाना शिर उपर अनिवार्य जोखमदारी आवी पडी छे. पण मने आनंद थाय छे के सभा ते जोखमदारी उत्तम रीते अदा करवा सर्व प्रकारे कुशळ छे. सभाजनो! तमारा शिर उपर आ जोखमदारी हुं कायरपणाथी नांखतो नथी. एवी जोखमदारी नांखवानो मने हक पण नथी. हुं पण एक तमारा समूहमांनो ज छुं. ए जोखमदारी अनायासे प्राप्त थई छे तो एनुं वहन करवुं एज हवे तो आपण सर्व माटे कर्तव्य रह्युं छे. कुळभूषण महाराजाश्री रामचंद्रजी छतां राज्यश्री मने प्राप्त थई शकती नथी. एवी राज्यश्री धारण करवाथी मारे शुं इक्ष्वाकुकुळने कलंक लगाडवुं? अयोग्य अने अप्राप्य वस्तुनी इच्छा करी मारे शुं हमेशने माटे नर्कवास ग्रहण करवो? राज्यलोभथी काळनी परंपरामां अनुचित धर्मनुं आचरण करी काळने माटे मारे शुं अधर्मनुं दृष्टांत मुकी जवुं? स्वप्ने पण ए विचार केम संभवे? सभाजनो! ए केम बनी शके? भले देहनो पात थाय, भले रवि पश्चिमे उदय पामे, भले भूमि रसातळ जाय, पण ज्यां सुधी आ भरतना देहमां प्राण छे त्यां सुधी एम कादि बननार नथी, नथी अने नथी ज.

सभाजनो–(हर्षथी) धन्य छे ! धन्य छे!! धन्य छे!!! इक्ष्वाकुकुळ भूषण !

भरत–तो मारे माटे हवे एक ज मार्ग छे. अने ते ए के महाराजाश्री रामचंद्रजी माटे मारे ज वनवास ग्रहण करवो. अने तेमनी पासे राज्यश्री धारण कराववी. ए माटे महाराजाश्री रामचंद्रजी सन्मुख जवामें सर्वे तैयारी करी राखी छे. अने काल प्रातःकाळे हुं प्रयाण करीश. सभाजनो ए कार्यमां तमो सर्व सहाय थाओ एज हवे मारी विज्ञप्ति छे. (सुमंत्र तरफ जोई) प्रधानजी प्रजाने खबर आपो के जेने संगे आववुं होय ते तैयार थई रहे.

वसिष्ठ–कुमारश्री, तमारुं सदा कल्याण हो ! मने सभाने तेमज प्रजा एम सर्वने तमारी धर्मपरायणताथी रुंवे रुंवे हर्ष अने आनंद व्यापी रहे छे. खरेखर इक्ष्वाकुकुळनो एज धर्म छे. सभाजनो, आजनुं कार्य भूलाय एम नथी. कर्तव्यनी दिशा नक्की थई चूकी छे. उत्सुकता, त्वरा अने तत्परताथी ए अदा थाय एमां ज आपण सर्वनो आनंद हो ! इति जय ! जय !! जय !!!

सभाजनो–जय ! जय !! जय !!! कुमारश्रीनो जय ! जय !! जय !!!

वसिष्ठ–सभाजनो हवे सभा विसर्जन थाय छे.

(सर्व जाय छे.)

इति पंचम अंके प्रथम प्रवेशः

પ્રવેશ ૨ જો.

સ્થળ—શૃંગવેરપુર.

ભરત—(સ્વગત) અરે મારી અયોધ્યા!

હરિણી.

ગતિ વિકળ તો જોઈ તારી, હૃદે પરિતાપ દે!
રસ વિગલિતા ભ્રાતા જાતાં શિ શૂન્ય દશા તું એ ?!!
ફરી ફરી હવે ક્યારે પીશું ? વસે રસ ગર્ભ તું !!
નયન ઠરતાં મીઠી લ્હેરે ભરે જળ પ્રેમશું !!! ૧૫

હા રઘુકુલોત્તમ ! આપનો વિયોગ અસહ્ય છે !!

માલિની.

અધીર મન હું દોડે રામ હા ક્યાર પામું !
હૃદય મુજ ઉકેલી કાર્યની માફી માગું
રઘુકુળ કહું ધર્મો રામ પાછા ફરે જે
નગરજન સહુને રાજ્ય આનંદ દે એ !!! ૧૬

મહારાજાશ્રી રામચંદ્રજી વિના શાંતિ નથી. (એવી રીતે રામચંદ્રજી અને રામચંદ્રજીના જ વિચારમાં ભરતજી ગ્રસ્ત છે એવે પ્રતિહાર પ્રવેશ કરે છે)

પ્રતિહાર—(નમન કરી) કુમારશ્રીનો જય !

ભરત—પ્રતિહાર શું છે ?

પ્રતિહાર—પ્રધાનજી સુમંત્ર આપને જોવા ઇચ્છે છે.

ભરત—એમને અહિંયાં લાવ.

પ્રતિહાર—(નમન કરી) જેવી આજ્ઞા.

(જાય છે.)

सुमंत्र–(प्रवेशतां सहज नमन करी) कुमारश्रीनो जय !

भरत–आवो प्रधानजी.

सुमंत्र–रामभद्रना सखा, महाराजाश्री दशरथना परम मित्र अने शृंगवेरपुरना भीलाधिपति गुहराज आपने मळवा इच्छे छे.

भरत–प्रधानजी, एमने सत्वर लावो.

सुमंत्र–जेवी आज्ञा. (जाय छे.)

(सुमंत्र गुहसंगे प्रवेश करे छे.)

भरत–(उभा थई) आवो निषादपति, हमारा ज्येष्ठ भ्राता अने महाराजाश्री रामचंद्रजीना तमो सखा होवाथी तमो महाराजाश्री रामचंद्रजी जेटला ज प्रिय छो. महाराजाश्री रामचंद्रजीना वियोगथी परिताप पामता मने तमारां दर्शनथी रघुकुलोत्तम महाराजाश्री रामचंद्रजीनां लांबे काळे दर्शन करवा जेटलो ज आनंद थाय छे.

गुहराज–महाराजाश्री दशरथना पुत्र अने हमारा स्वामी श्रीरामचंद्रजीना भ्राताने एज घटे !

भरत–गुहराज, आसन लो (गुहराज आसन ले छे) गुहराज, महाराजाश्री रामचंद्रजी कुशळ तो छे ! (बेसे छे. नयन अश्रुमय थतां) गुहराज,

मालिनी.

रमण रस जातां भक्ति रामे जीवुं हुं
हृदय जपी सुजापो योग रामे रमुं हुं
सफळ नयन थातो राम आनंद पीतां
(तोपण) घटी पळ शुं वियोगो काळ कृतांत देता !!! १७

तो गुहराज महाराजाश्री रामचंद्रजीनुं दर्शन आज केटलो बधो समय थयां में कर्युं नथी. जेथी महाराज विषे जे कंई पण जाणो ते सर्व कहो. गुहराज एथी ज मारा आत्माने तृप्ति मळे एम छे.

गुहराज—बंधुश्रेष्ठ, मुनिवेषमां श्रीरामचंद्रजी कुशळ छे. सीता, राम अने लक्ष्मणनी त्रिपुटी जे जे भूमि उपर पोताना चरण मुके ते भूमि पण रसमय थई रहे छे. जेथी एमनां दर्शनलाभथी हुं मारुं अहोभाग्य समजुं छुं. खरेखर एओए मने कृतार्थ कर्यो.

भरत—(शोकग्रस्त) हा दुर्दैव ! हा दुर्दैव !! (अश्रु गळे छे) गुहराज, खरेखर मारुं कमभाग्य छे के महाराजाश्री रामचंद्रजीनी शुश्रूषा मने सर्जी नहि. अहो भ्रात लक्ष्मण तारुं जीवन सार्थक थयुं छे. देवी श्री सीता ! अनेक कष्टमां पण स्वामीश्रीना अनुगामी थवाथी, हृदय तमारां हृदयनी श्रेष्ठतामां तल्लीन थई ए श्रेष्ठतानां अगाध उंडाणमां डूबकी खाय छे !!! अने वदी उठे छे के देवीश्रीनां हृदयनुं माप काढतां बुद्धिबळ कुंठित थई जाय छे. अने "अहो" "अहो" ए धन्यनादना पूज्यभावमां ज विरमी रहे छे !! गुहराज ए त्रिपुटी विषे जे कंई पण जणाववा योग्य होय ते अवश्य जणावो. केमके ए जाणवाथी ज मारां हृदयने शांति वळे एम छे.

गुह०—भरतजी, स्वामीश्रेष्ठ रामचंद्रजी तरफ तमारो आटलो बधो प्रेम जोई मने स्वामीश्री रामचंद्रजीना दर्शनथी पण अधिक आनंद थाय छे. अने कुमारश्री लक्ष्मणनो बंधुभाव खडो थई जाय छे.

भरत—(आतुरताथी) गुहराज, लक्ष्मणनो बंधुभाव केवो हतो ए कहो.

गुह०—रात अने दिवस स्वामीश्रीनी अनुकूळता जाळववा सेवकभाव शिवाय लक्ष्मणजीनामां में बीजो भाव जोयो नथी. सर्व प्रसंगे, सर्व

काळे हुं लक्ष्मणजीने बंधुकार्यमां एक चित्तथी तत्पर अने तत्पर जोतो.

भरत–खरेखर लक्ष्मण, तें वडिल प्रत्येनो धर्म बजावी रघुकुळने दिपाव्युं. तेमां वळी महाराजाश्री रामचंद्रजी तो वडिल छे एटलुंज नहि पण अनेक गुणोत्तमनुं स्थान छे. अने गुणोत्तमना दास थई रहेवुं एज जीवननुं सार्थक छे तो लक्ष्मण महाराजाश्री रामचंद्रजी ए उभय उक्त होवाथी तारुं जीवन तो सार्थक थयुं. अने मारे माटे तो कैकेयीए जनअपवाद ज लीधो !!! अरे दुर्दैव !

शार्दूलविक्रीडित.

हा कैकेयी हुं मातृभूमि थई ने इक्ष्वाकु कीर्ति लुंटी
काढया देशविदेश रामगणने ईच्छा भूंडी ज्यां कीधी
भ्राताभोग हुं भोगवुं गृह रही स्वप्ने मति जो करी
आवो वास ज नर्कनो फरीफरी ब्रह्मांड शाक्षी हरी !!! १८

गुह०–एवा सोगननी जरुर नथी. भरतजी तमारी शुद्धि अने निर्मळता माटे तमारां हृदय अने तमारां कृत्य करतां वधु पुरावो शुं होय ?

भरत–निषादपति, हुं सत्य कहुं छुं के

वैश्वदेवी.

धिक्धिक् जाणो जे बंधु कुंबंधु थाये !!
ना भूमि भोगो बंधुनो प्रेम पाये
हृदे वेचीने भोग लेवा ज एवा
जन्म्या धिक् ! काळे जेह कुंकाळ जेवा !!! १९

गुहराज बंधुश्रेष्ठ लक्ष्मणे महाराजाश्री रामचंद्रजीनी केवे प्रकारे शुश्रूषा करी ते कहो.

गुह०—बंधुश्रेष्ठ, पवित्र राजकुमार भागिरथीने तटे आवी पहोंच्या ए वृत्तांत में सांभळ्यो नथी. स्वामीश्रीना गुणगानथी आनंद लेतां ए वृत्तांत क्रमपूर्वक होई स्वामीश्रीना हृदयरसनुं आपणने संपूर्ण रीते पान करावशे. माटे (सुमंत्र तरफ जोई) प्रधानजी, अयोध्या छोडया पछी भागिरथीनां तट सुधीनुं संक्षेप वृत्तांत कहो.

भरत—हा. प्रधानजी, वियोगना शोकावेशमां मारां हृदये ए श्रवण करवा जिज्ञासा करी नहि. पण गुहराजना प्रेमप्रवाहथी हृदयने कंइक शांति मळे छे. स्थळ संबंधने लीधे महाराजाश्रीनुं एवुं चारित्र आपणा प्रेमनुं विशेष पोषण करशे.

सुमंत्र—श्री रामचंद्रजीना गुणनुं वर्णन थई शके एम नथी. एम छतां एमना प्रत्ये मारा प्रेमने लीधे जे कंई कहेवाय ते श्रवण करो.

भरत—प्रधानजी यत्किंचित जे पण कंई कहेवाशे ते मारां वियोग शल्यने सुखदाता ज थई पडशे. माटे महाराजाश्री रामचंद्रजी तेमज लक्ष्मणे शुं शुं कर्युं अने शुं शुं वदता ते सर्व कहो.

सुमंत्र—महाराजाश्री दशरथ तेमज बीजा गृहजनो रामचंद्रजीने पुनः जोवानी इच्छावाळां होवाथी विशेष दुर नहि जत. रामचंद्रजीने गृहथी ज थोडेक दुर विदाय करी शोक ग्रस्त हृदये पाछां फरतां छतां पण पुरजनोए तो रामचंद्रजीनी पाछळ अने पाछळ ज चालवुं शिरुं कर्युं. रामचंद्रजीने पाछा फरवा माटे पुनः पुनः विनववा लाग्यां. पण सर्व व्यर्थ. पुर जनोना प्रेम आगळ रामचंद्रजीनुं हृदय दयार्द्र थई गयुं. छतां वनवास जवानो दृढ संकल्प तो अविचळ ज रह्यो. अने रामचंद्रजी वदता रह्या केः—

मालिनी.

पुरजन बहु दुरे आवशो मा हवे ये
तन दुख तम जोई दाझतुं हुं हृदे ए
स्थिर गति करी र्‍हेशो प्रेमपासे करीने
भरत पितुशुं देजो स्नेह, हर्षो धरीने !! २०

प्रीति मम उर धारो हेत आणी वळो हा !
मुज पितुदुख जाणी सुख आपो वळी त्यां
मृदु गुण शीलवासे योग्य छे भर्त भ्राता
वीर नृप तम जाणी प्रेम पोषो भूधाता !!! २१

भरत—(ठंडा निश्वास नांखतां) हा प्रभु! हा प्रभु !!!

सुमंत्र—रामचंद्रजीनां आवां आवां मृदु वचनथी तो पुरजनवासीनां हृदय वधु वधु मुकाववा लाग्यां, नेत्रो जळथी भरपूर थई रह्यां. अने रामचंद्रजीनां ज गुण गातां, रामचंद्रजीने-पाछा वाळवानी आशामां अने आशामां रामचंद्रजीना स्नेह पाछळ खेंचाववा लाग्यां. तेओमांना ज्ञान, तप, गुण अने शीलयुक्त वृद्ध ब्राह्मणो अश्वादिक पशु अने पक्षी विगेरे जड चैतन्य स्थळोने संबोधी रामचंद्रजीने तेमना वियोगथी सर्वत्र व्यापेला वियोगशल्यनुं चित्र खडुं करवा लाग्या. तेमना वियोगथी अयोध्या नगरीनी स्थिति, महाराजाश्री दशरथनी स्थिति, ब्राह्मणोनी शून्य वेदीओनी स्थिति विगेरेनां चित्रथी पुरजननां हृदयक्लेशनुं चित्र खडुं करवा लाग्या. पण रामचंद्रजी एकना बे थया नहि. रथ उपरथी रामचंद्रजी नीचे उतर्या अने पुरजन साथे ज पगे चाली तेमनां हृदयने शांति आपता चालवा लाग्या. अने सायंकाळे तमसा नदीने तीरे सहुको आवी पहोंच्यां.

भरत—पुरजन, तमारुं अहो भाग्य के महाराजाश्रीनी आवे प्रकारे सेवा करवा तमो भाग्यशाळी थया. (गुह प्रत्ये) गुहराज, खरेखर हुं ज भाग्यहीन के मारो एवे प्रसंगे महाराजाश्रीथी वियोग सर्ज्यो ! ! !

गुह०—भरतजी एम शोच करो मा. (सुमंत्र प्रत्ये) प्रधानजी आगळ चलावो.

सुमंत्र—निरंतर आनंद वर्षाववो ए सरित तटनुं कार्य छे पण रामचंद्रजीने तो उलटुं ज थयुं. उदय थता सूर्यनी आशामां रमण करता समूहने तमसा तटे अस्त पामता सूर्यनो ज अनुभव सर्ज्यो. उदयकिरणमां स्नान निमग्न रहेवानी आशामां रंग कल्लोल करतुं श्री लक्ष्मणजी अने श्री सीताजीनुं हृदय तमसा तटे अस्त पामता सूर्यथी धडक धडक वहेवा लाग्युं. मुखारविंद उपर ग्लानि प्रसरी रही. कुदरतनी विचित्र रचनामां मुग्ध थई सर्व कोइ मूढवत थई रह्यां. "अहा काळनुं शुं परिबळ ! ! !" एज हृदयआवेशना उद्गार स्फुरवा लाग्या. शोकमय सृष्टिना व्यापी रहेला व्यवहार मध्ये कर्तव्यने जाणनार श्री रामचंद्रजीनुं हृदय पण स्थिर रही शक्युं नहि. लक्ष्मणजीनी उदासीनता जोई श्री रामचंद्रजी वदवा लाग्या—"भ्रात लक्ष्मण, खरेखर मातापिताथी वियोगनो आ प्रथम ज दिवस छे. मातुश्री कौशल्या अने सुमित्रानो सघळो समय तो आक्रंदमां ज व्यतीत थतो हशे. महाराजा श्री दशरथनी शी अवस्था हशे ? हुं नथी धारतो के महाराजाश्री दशरथ हवे वधु काळ प्राण धारण करी शके. "वियोग" शब्द श्रवण पर पडतां ज एमनुं जीवन उडी गयुं हतुं. आशा मात्र नष्ट थई गई हती. संसार शून्यवत दिसवा लागतो हतो. तो एवुं आशाहीन जीवन क्यां सुधी टकी शके ? भ्रात लक्ष्मण आपणने शोच करवो घटतो नथी. आपणी आशा नष्ट थई नथी. हजी आपणे मातापिताने आनंद आपवानो छे. तेमनी शुश्रूषा करवानी छे. अत्यारथीज जो तुं

आवो उदासीन रहीश तो तारुं बळ अने तारुं वीर्य केम टकी शकशे ? आपणने तो विशेष आशा, बळ, वीर्य अने तीव्र व्रत साथे कार्य छे. माता पिता गृह, नगर, पुरजन आदिकने त्याग करतां आपणी सृष्टि तो हवे त्रिगुणात्मक मात्र ज थई रही. एज सृष्टिने पोषवी ए आपणुं कर्तव्य. एमां ज आशा आनंद अने प्रेमनी अभिवृद्धि करवी एज आपणुं निरंतरनुं कार्य. भ्रात लक्ष्मण, सीता रसनुं स्थान छे, हुं वडिल बंधु होवाथी गुरु के द्रष्टा आत्मा स्थान छुं. अने भ्रात, तारामां अपूर्व श्रद्धाए वास करेलो होवाथी तुं चित्तनुं स्थान छे. त्यारे लक्ष्मण, ए चित्त रसनुं पोषण करवामां के द्रष्टा आत्मा तरफनां कर्तव्यमां आळस्य न करे ए तारे चोकस संभाळवानुं छे. ए माटे अहर्निश सावध रहेवानुं छे. एमनां रक्षण माटे सर्वत्र रात्री दिवस अवलोकन राखतां रहेवानुं छे. तो आजथी रात्रीनी निद्रानो पण त्याग ए पण खरेखर भ्रात तारे शिर एक अनिवार्य कर्तव्य आजथी ज आव्युं छे. माटे एनुं ज आनंदथी सेवन कर. हवेथी एज तारां अने हमारां कर्तव्यनी दिशा. मुनिव्रत पाळवुं, रसने पोषवो, अने आत्मानी अभिवृद्धि करवी ए कार्य."—भरतजी, आथी लक्ष्मणजी तरत ज सतेज थई गया अने पोतानुं कार्य तपासी लीधुं. मुनिवेशनो प्रथम ज दिवस होवाथी श्री रामचंद्रजीए कंई पण अन्न न लेतां जळपाननो ज आहार करी लीधो अने तमसातटे पोतानां व्रतनो दृढ संकल्प कीधो. वृक्ष नीचे श्री रामचंद्रजी अने सीताजीए भूमि शयन कर्युं. पुरजनो पण सर्वे सुई गयां अने लक्ष्मणजी साथे हमो रक्षण करता बेठा. खरेखर भूमिशयननो आ तेमनो प्रथम ज दिवस हतो. लक्ष्मणजी साथे गृह, कैकेयी, महाराजाश्री दशरथ, श्री कौशल्या सुमित्रा, नगर अने पुरजन उपर विचार करतां करतां ब्राह्ममुहूर्त थयुं. एटले श्री रामचंद्रजी जागृत थई गया अने लक्ष्मणजीने कहेवा लाग्या के "भ्रात हवे

विलंब करवानो नथी. पुरजन जागे ते पहेलां आपणे नीकळी जवुं जोईए. एमनां हृदयने हुं कष्ट आपवा इच्छतो नथी. माटे प्रयाणनी सत्वर तैयारी कर." ए प्रमाणे पुरजनवासीने निद्रामां मुकी हमे प्रयाण शिरु कर्युं अने भागीरथीतटे आवी पहोंच्या. हवेनो वृत्तांत गुहराज कहेशे.

भरत–(शोकावेशमां)

शार्दूलविक्रीडित.

अंके पंकज शोभतां रसगृहे धारा छुटे प्रेमनी
विंटयां दासगणे अहा वन जतां दावा नळे क्षेम, नी
लाडीलां फरतां अरे मधुवने छायापितु ज्यां गृहे
छायाछत्र पितुगृहे उडी जतां व्याघ्री हणे चंद्र हे ! ! !

खरेखर गुहराज, कैकेयी व्याघ्रो रुपे ज जन्मी छे. एणे महाराजाश्री दशरथनां मधुवननेताराज करी नांख्युं. ए आनंदनुं स्मरण थतां मारा हृदयने बहु बळी आवे छे के अरे .

शार्दूलविक्रीडित.

सज्यां जे शिरछत्रताज धरवे फांफां वने मारतां
शय्या तृणफळादिके दिन गमे[१] संसर्ग भू सारतां !
ज्यां त्रिकाळ फरे अरे वनचरो, शी आश त्यां क्षेमनी
ह्यां ह्यां राम सीता फरे गृह तजी हा का गति दैवनी !!! २३

गुह—भरतजी आश्वासन राखो. एवे प्रकारे शोक करो मा. ज्यां लक्ष्मणजी सेवामां तत्पर छे त्यां प्रभुने गृहसुखनुं लेश पण स्मरण थाय एम नथी. तेमज ज्यां सुधी लक्ष्मणजीना हाथमां रात अने दहाडो धनुष छे त्यां सुधी वनचरोथी पीडानो संभव पण नथी. जे थयुं ते एटलुं

(१) गमे=जाय छे. संस्कृत–गम्–जवुं.

के प्रभुने वनवास योग्य न हतो.

भरत—पण अरे गुहराजजी, एकलो लक्ष्मण ते एवी सेवा क्यां सुधी जाळवी शके?

गुह—भरतजी, लक्ष्मणजीनां भक्ति, श्रद्धा अने दृढता गमे ते काळे पण अचळ ज छे. एनी पुष्टिमां भागीरथीतटे हमारा समागमनो सार कहुं.

भरत—गुहराज, हा अवश्य कहो.

गुह—महात्मा श्री रामचंद्रजीनां पधारवानी खबर मळतां हु तेमनी आगतास्वागता करवानां सर्व साहित्य साथे तेमनी समीप जवा नीकळ्यो. में ए महान् प्रभुने इंगुदी वृक्ष नीचे लक्ष्मणजी अने सीताजी सहित जोया. यथायोग्य पूजन कर्या पछी भोजनादिक सर्व साहित्य एमने अर्पण कर्युं. पण ए महान् प्रभुए कशुं स्विकार्युं नहि. मारी अने मारी प्रजानी कुशळता पूछी. अने अति कोमळताथी कह्युं "पितुआज्ञा तने सुविज्ञात ज छे. माराथी कशुं ग्रहण थई शके एम नथी. फळ मूळआहार अने मृगचर्मादिक एज मारा धर्मने योग्य छे. पिता श्रीना अश्वने योग्य साधन ज ग्रहण करवाथी तारी मन कामना तृप्त करी शकु एम छे." एमनां धर्मनिष्ट हृदय आगळ हुं कंई वदी शक्यो नहि. एटले सायंकाळ थवा आव्यो. प्रभु भागीरथीना निर्मळ तट उपर संध्या करी आव्या अने लक्ष्मणजीए आणेलां गंगाजळनुं ज मात्र पान करी इंगुदी वृक्ष नीचे लक्ष्मणजीए तैयार करेली तृण शय्यानो निद्रा माटे आश्रय लीधो.

भरत—ए तृणशय्या क्यां छे? गुहराज मारे ए अवश्य जोवी जोईए. राज्यविभूतिना त्याग पछी नृपश्रेष्ठ रामचंद्रजीनुं ए प्रथम व्रत छे. (उभा थई) निषादपति, चालो मने ए स्थान बतावो.

गुह—(आगळ चालतां चालतां) आ मार्गे, आ मार्गे—(कौशल्या अने वसिष्ठादिक पण साथे जाय छे)

भरत—(भागीरथी तट जोतां)

शार्दूलविक्रीडित.

तार्यां साठ सहस्र पूज्य कुळमां मंदाकिनी आ वहे,
शंभु शिरथी ऊतरी· अघ वहे आजे गति शुं कहे? !!!
शोभंतां तटवास पुष्प समूहे देवांगना ह्यां रमे
व्याकुळुं रघुकुळ जाह्नवि! भमे निश्वास शुं ना दमे ?!!! २४

(एटले इंगुदी वृक्ष समीप आवी पहोंचे छे)

गुह—भरतजी, आ रह्युं इंगुदी वृक्ष. (उभा रही) अने आ रही तृणशय्या. भरतजी प्रभुना प्रतापथी तृणशय्या हजी जेवी ने तेवी ताजी जणाय छे!!

भरत—(शत्रुघ्न प्रत्ये) तात शत्रुघ्न, आपणा वडिल बंधु अने रघुकुळोत्तम रामचंद्रजीनी आ शय्या छे. क्यां चंद्रशाळानुं शयनगृह! अने क्यां आ भागीरथीतटनो भूवास !!!

(पद.)

गगने रही चंद्रशाळा दृष्टि अयोध्या ज्यां करे
आकाशगंगाधवलता, शुं तेजज्योति· नहि हरे? २५
दासीगण विंटी वळी ज्यां नूपुर कलरव बहु करे
मधुर खररर नादगंगा जोई अप्सरानुर उतरे; २६
सुगंध अनेक म्हेकावता शयनगृहशोभा ज्यां हसी
निर्मळ वायु पुष्पपरागे मघवासदनइच्छा कशी? २७
उषादेवशोभा वधे वार्जीत्र ज्यां घोर पुरतां
वृक्षे वृक्षे पंखी टहुका ब्रह्मांडगोल को झुरता? २८
वृक्ष वायु ढाळतां ने गंगाशीकर अमृत सिंचतां
कवितरंग उक्ति एविषे भ्रात! तृप्ति केम पामतां? !!!२९

भ्रात शत्रुघ्न ! एवी उक्तिओ तो तपस्वी अने वैरागीओनां समाधान अने संतोष माटे ज छे. मारुं मन तो महाराजाश्री रामचंद्रजीनी दशा जोई, विकळ बनी जाय छे.

शत्रुघ्न—एज सत्य छे. कौशल्यादिक माताओनां हृदय शोकनो पण पार नथी.

भरत—भ्रात, आ शय्या तो वळी जो

इंद्रवज्रा.

मूतां दबायुं तृण जेवुं तेवुं
पासां फरे जो त्रिखराय केवुं !!!
एकत्र जो जो थई आम बेठुं
व्हाले करी रामशुं उर देतुं !!! ३०

हा ! हा ! भ्रात, एमज होवुं जोईए, केमके

जोतां सुजोतां स्थिर दृष्टि आपे
जो जो वदे ए बहु प्रेम जापे
वश्या हृदे भाव सुखाळी आपे
जाणे थयुं दर्शन राम आजे !!! ३१

शत्रुघ्न—नूपुरना घसाराथी आ पासुं मातृवत् सीताजीनुं होय एम जणाय छे.

भरत—तात शत्रुघ्न,

शार्दूलविक्रीडित.

क्रीडाशुं शिवचाप लै पितुगृहे, तोडया मदो कैकना
अंगोअंगशुं प्रेमभाव धरतां स्वामीगृहे मोदमां
चाल्यां जाह्नवी आ भगीरथ पुठे, भूभार ऊतारवा
स्वामीसंग भूअंक जानकी करे, सृष्टि शुं उद्धारवा ?
अयोनिजा ! शो उत्कृष्ट धर्म तमो पाळो छो ? ! ! ३२

इंद्रवज्रा.

सेवा करे स्वामी, हृदे शुं हींसे ?
अंगे अहा क्लेश न लेश दीसे ! ! !
पोषे शुं स्वामी व्रत अंग झाझुं ?
कौशेय तंतु हजी एक बाजु ! ! ! ३३

गुह—भरतजी, तमारी दृष्टिने धन्य छे ! तमारा भावने कोई पहोंची शके एम नथी. अहो जेने तमारा सरखा भ्रात छे तेनुंज हुं खरेखर अहो भाग्य समजुं छुं.

भरत—गुहराज, मारुं हृदय मने मार्ग आपी शकतुं नथी. खरेखर हुं ज कम भाग्य के मने सेवा धर्म मळ्यो नहि. गुहराज हवे रात्री केम निर्गमन थई ते कहो.

गुह—आपणे हवे आपणा आसन उपर जईए.

भरत—वडिल बंधुनुं शय्यासन त्यजी हुं तो कहिए जईश नहि. हुं तो रात्री आ स्थळे ज काढीश. (बीजा सर्वने) तमो सर्व कोई आश्रम उपर जई निद्रा लो.

वसिष्ठादिक—हमो पण अत्र ज रहीशुं.

भरत—(सुमंत्र प्रत्ये) प्रधानजी, सर्व कोईने आसन लेवा कहो.

सुमंत्र—पुरजनो हवे सहु कोई बेसी जाओ एवी बंधुश्रेष्ठ अने कुमारश्री भरतजीनी आज्ञा छे.

(सहु कोई बेसे छे अने भरतजी पण बेसे छे.)

भरत—(गुह प्रत्ये) गुहराज, हवे तमारी कथा कहो.

गुह०—महात्माश्री रामचंद्रजी माटे आणेलां जळनां शेषभागनुं, लक्ष्मणजीए

कंई पण आहार न लेतां, आचमन मात्रज कर्यु ! अने प्रभुए तृण शय्यानो आश्रय केतां हमो बन्नो (आंगळी बतावी) पेली तरफना वृक्षतळे जई रक्षण करता बेठा.

भरत–भ्रात लक्ष्मण, तारु व्रत पण अति गहन ज छे.

गुह०–हा, एमनां व्रत अने दृढताथी अवधी !

भरत–ते शुं ?

गुह०–हुं तेज कहुं छुं. वृक्ष तळे बेठा पछी में लक्ष्मणजीने कह्युं "महात्माश्री रामचंद्रजी अने देवीश्री सीताजीए शयन कर्युं छे अने हवे तमो पण शयन करो. हमो निषाद लोको रक्षण करीशुं एमां तमारे लेश पण शंका करवी नहि. महात्माश्री रामचंद्रजीने व्रत होवाथी शय्यादिकनो अंगीकार न कर्यो पण तमने कंई एवुं व्रत नथी. माटे आ शय्यादिक ग्रहण करी निरांतथी निद्रानुं सेवन करो. अपन्नासादिकने लीधे तमो अति श्रमित थई गया छो जेथी निद्रानी अवश्य जरुर छे." आटलुं कहेतां ज, भरतजी, लक्ष्मणजी बोली उठया "निषादपति ! महात्माश्री रामचद्रजी ज्यारे भूमिनुं सेवन करे छे त्यारे हुं शयननो आश्रय केवी रीते करी शकुं ? शुं ए महान प्रभुने भूमि शयन योग्य छे ? शुं ए राज्यपुरुषने वनवास योग्य छे ? मातापितानी शुश्रूषा त्याग करी, तेमने वियोगशल्यनुं कष्ट अर्पी, हमारे पण, शुं वियोगशल्यनो सहवास जरुरनो छे ! महात्माश्री रामचंद्रजी धर्मने जाणनारा छे; एमणे वनवासधर्म अंगीकार कर्यो छे तो मारो तो दासधर्म होवाथी हुं शयनादिक केम ग्रहण करी शकुं ? एतो बनी शके एम नथी. शुं वडिल बंधु रामचंद्रजी अने मातुतुल्य श्री सीताजी कष्ट वेठे अने हुं भोगादिकनुं सेवन करुं ? ए तो केम ज बनी शके ? मारे माटे जे धर्म सर्ज्यो तेज कर्तव्य छे. माटे गुह-

राज, एवुं वचन फरी कदिए पण कहेशो नहिं अने एवी रीते कोई पण प्रकारनी मागणी करशो नहि."

भरत–(एकदम बोली उठतां) ओ लक्ष्मण,

उपजाती.

घटे ज बंधु तुज धर्म एवो
सेवा करी भ्रात विबोध लेवो
निद्रा क्षुधा त्याग कीधां वने ज्यां
पाम्यो खरे स्थान तुं देव जीत्यां ! ! ! ३४

हा तात लक्ष्मण तुंज भाग्यशाळी छे ! !

गुह०–भरतजी, पछी लक्ष्मणजीए गृह तरफना उद्गार काढी हृदयनो अति शोक बताव्यो. "अहो महाराजाश्री दशरथ केम जीवी शकशे ?" "बिचारी अयोध्या तारुं शुं थशे ?" "मातुश्री सुमित्राने तो शत्रुघ्न होवाथी कंईए आश्वासन मळशे पण मातुश्री कौशल्या, तमारी शी दशा हशे ?" "सर्व स्त्रीओनां आक्रंदथी गृह शोकमय थई रह्युं हशे ?" "अरे वियोगशल्य अने राज्याभिषेकनी व्यर्थताना दुःखने लीधे महाराजाश्री दशरथ तो अवश्य ज प्राण त्याग करशे" "एमनी जेओ प्रेतसंस्कारादिक क्रिया करशे तेज खरा भाग्यशाळी छे शुं दशरथ राय जीवशे ?" "शुं एमनां दर्शन करवा पुनः भाग्यशाळी थईशुं" "अमारो वनवास निवृत्त थई महात्माश्री रामचंद्रजीने पुनः अयोध्या प्रवेशनो समय आवशे ?" आवा आवा उद्गारमां रात्री पूरी थई.

भरत–भ्रात लक्ष्मण, भाग्यशाळी तो तनेज समजुं छुं के कष्टमां पण भ्रात धर्म अदा करवा तत्पर रह्यो. (गुह प्रत्ये) गुहराज पछी शुं थयुं ?

गुह–प्रातःकाळ थतां प्रधानजी सुमंत्रने विविध प्रकारनो बोध आप्यो. एमने पाछा फरवा समजाव्या अने एमनां रुदन करतां हृदयनुं, महात्मा

श्री रामचंद्रजीए अनेक प्रकारे आश्वासन करी, महाराजाश्री दशरथ, मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ अने मातुश्री कौशल्याने बोध पूर्वक संदेशो कहाव्यो ए वृत्तांत तो प्रधानजीए कह्यो हशे.

भरत—ए कथा तो प्रधानजीए मने यथाविधि कही संभळावी छे पण पछी शुं थयुं ?

गुह—(सखेद) भरतजी, हवे ज वनवासनुं अति दुष्कर कार्य शरु थयुं.

भरत—गुहराज, तमारी मुखाकृति उपर ग्लानि प्रसरी रही छे. महाराजश्री रामचंद्रजीनी कुशळता विषे मने भय व्यापी रह्यो छे माटे हवे शुं बन्युं ते कहो.

गुह०—(नयन अश्रुमय थतां) भरतजी, महात्माश्री रामचंद्रजी सर्व प्रकारे कुशळ ज छे पण तेमना वनवासना अति दुष्कर तपोव्रतथी हृदयने कंपारी छूटे छे.

भरत—(खेद पामतां) गुहराज ए व्रत शुं हतुं ?

गुह०—महात्माश्री रामचंद्रजी, प्रधानजीनुं आश्वासन कर्या पछी हस्त जोडी मने विनय पूर्वक कहवा लाग्या "भिल्लराज, मनुष्यमां तो शुं पण ज्यां मनुष्य वसतां होय एवां वनमां पण वसवानो हमारो धर्म नथी. हमने तो निर्जन आश्रम वास ज योग्य छे. जेथी करी तपस्वी माफक हमारे जटा धारण करवी जोईए. अहियांथी हुं लक्ष्मण अने सीता सहित जटा बंधन क्रिया करी, विदाय थईश. अने वनवासना वानप्रस्थादिक धर्मने धारण करी रहीश. माटे गुहराज, वटक्षीर सत्वर मंगावी आपो" भरतजी आं श्रवण करतां मारुं हृदय भराई आव्या विना रह्युं नहि. पण आज्ञा उठाववी एज मारो धर्म हतो.

भरत—(शोकाकुळ थई जतां) "शुं मारा वडिल बंधु रामचंद्रजीए जटा ग्रहण करी ?" "शुं राज्यकुळभूषणे जटा ग्रहण करी ?" "शुं राम-

चंद्रजी हवे पाछा नहि फरे?" (एम बोलतां बोलतां भरतजी मूर्च्छागत थई गया).

गुह०—भरतजी, आश्वासन राखो, धैर्य धरो, एवो शोच करवाथी शुं ? महात्माश्री रामचंद्रजीने पाछा लाववा एज आपणी हवे फरज छे. भरतजी जागृत थाओ! जागृत थाओ!

कौशल्या—(शोकार्ता) मारा व्हाला, मारुं शुं थशे ? हुं कोने जोईने ठरीश ? (नयन अश्रुमय थतां) रामनो वियोग छतां तने जोई मारुं हृदय आनंद पामतुं ते हुं हवे केम जीवीश ? भरत! भरत! भरत! सावध था! तारी मातुश्री तरफ जो! एटला बधा शोकग्रस्त थवाथी हवे शुं ? रामे निजधर्म विचार्यो तो आपणे हवे आपणोज धर्म विचारवानो रह्यो! मारा लाडकवाया, उठ अने हमने आश्वासन आप. तुं हमारी सेवा करवा योग्य छे. अने ज्यारे तुं आवी दशानुं सेवन करशे त्यारे हमारी शी अवस्था ? (कंइ असर न जोतां) भरत! भरत! हजीए केम तुं उठतो नथी?!!! (दडदड अश्रु वह्यां जाय छे.)

वसिष्ठ—(कौशल्यानुं आक्रंद न सहन थवाथी) भरतजी, मातुश्री कौशल्या तमारी आवी दशाथी अति कष्ट पामे छे. शुं ए तमो जोई शकता नथी ? शुं तमारा मातृप्रेमे तमारां हृदयनो त्याग कर्यो छे ? खरेखर एतो असंभवित ज छे. त्यारे शुं मातुप्रेम करतां पण भ्रातृप्रेम अधिक थयो ? खरेखर एमज होय तो प्रसंगना धर्मनो लोप थतो शुं तमो जोई शकता नथी? तमारुं हृदय धर्मज्ञ छतां आवे प्रसंगे शुं शोकार्त मूढ ज थई रहशे ? भरतजी, तमने ए स्थिति संभवती नथी. रामचंद्र प्रत्ये अगाध प्रेमनुं ए कार्य छे तो रामचं-

द्रने पुनः अयोध्या लई जवा प्रयास करवो ए आपणुं कर्तव्य छे. आपणे जो भक्तिपूर्वक ए कर्तव्य अदा करीशुं तो रामचंद्रजी आपणने वेढे एम नथी. त्यारे प्रयोजन रहित आवी निराशाने शीद आधीन थई जाओ? भरतजी, माताओनां आक्रंद श्रवण करो अने झट जागृत थई जाओ.

भरत–(कंइक स्वस्थ थतां) गुरुजी, रामचंद्रजीने पाछा लाववा हवे मने तो अशक्य ज लागे छे! नहि तो एओ जटील वेश शुं करवा धारण करे? गुरुजी,

गीती.

आवे नहि ज्यां बंधु अफळ जीवन मम थयुं जरुर जाणुं;
विदार्युं वियोगे हृदय तरफडतुं रहे नहि शमाव्युं! ३९

वसिष्ठ–भरतजी, धैर्य राखो, एम निराश थाओ मा! रामचंद्रजी सुज्ञ छे. ए तमारा मननुं अवश्य समाधान करशे. माटे आवी रीते क्लेश पामी मातादिकने पण क्लेश आपो मा.

भरत–हुं आज्ञांकित छु. पण गुरुजी, रामचंद्रजीने पुनः लाववा माटे मने अवश्य मदद करशो.

वसिष्ठ–भरतजी, ए कहेवानी जरुर नथी. अखिल अयोध्या नगरीनी ज ए उत्कंठा छे.

भरत–(गुह प्रत्ये) गुहराज, पछी शुं थयुं?

गुह०–जटील वेश, धारण, क्रिया थई रहेतां, हमारी तैयार राखेली नौकामां स्वहस्ते लक्ष्मणजी सहित प्रथम देवीश्री सीताजीने बेसाड्यां. पछी मारुं तथा प्रधानजीनुं आश्वासन करी महात्माश्री रामचंद्रजीए पोते

नौकारोहण कर्युं. पछी लक्ष्मणजी बेठा. प्रभुए मारी तथा प्रधानजी पासे विदाय मागी. नौका चालती थई. प्रभुए देवीश्री गंगाने नमस्कार कर्या. देवीश्री सीता तथा लक्ष्मणजीए पण ते प्रमाणे कर्युं. प्रभुए हवे नौकाने वेगथी चलाववानी आज्ञा आपी. नौका सडसडाट चाली गई तेथी ज्यां सुधी नौका नजर आगळ रही त्यां सुधी हुं अने प्रधानजीए दुःखी हृदये नौका तरफ ज जोयां कर्युं. अने आखरे निराश थई हमो पाछा फर्या ! !

भरत—(दुःखी थतां) गुरुजी, शुं मने पण निराश थवानो समय नहि आवे ? गुरुजी हुं पण हवेथी जटील वेश धारण करुं छुं अने पवित्र रामचंद्रजीने बदले हुं ज तेमनी प्रतिज्ञा, चौद वर्षपर्यंत वनवासमां तृणशय्यादिक सेवी, सफळ करीश. शुं मारी दीन अने दयार्द्र स्थिति जोई रामचंद्रजी एटलुं कह्युं मारुं नहि माने ? गुरुजी, हुं धारुं छुं के मानशे.

वसिष्ठ—भरतजी एवा संकल्प विकल्प शुं करवा करो ?

भरत—हा गुरुजी, शत्रुघ्न मारी संगे रहेशे. अने हमारां वनवाससेवनथी प्रभुश्री रामचंद्रजीनी प्रतिज्ञा पण मिथ्या थई गणाशे नहि. रामचंद्रजी लक्ष्मण सहित अयोध्यामां राज्य करशे. अने हुं शत्रुघ्न साथे वन सेवीश. अने तेम पण रामचंद्रजी नहि ज मानशे तो हुं पण तेमनी संगे तेमनी परिचर्या करतो वनवास ज सेवीश. गुरुजी, खरेखर मारो आनंद एथी ज अधिक वृद्धि पामतो रहशे. अने मारा मनोरथ सफळ थई संकल्प सिद्धि थशे.

वसिष्ठ—समयने अनुकूळ धर्म अदा करवो एज योग्य छे.

भरत—हा गुरुजी, हुं अवश्य तेमज करीश.

वसिष्ठ–भरतजी, हवे कंईक निद्रा लो तो ठीक.

भरत–गुरुजी, सहुकोने शयन माटे आज्ञा आपो. अने हुं तो महान् प्रभुश्री रामचंद्रजीनां रटणमां ज मारी रात्री निर्गमन करीश.

वसिष्ठ–यथा रुची. (बीजा समूहने) निद्रा समय थवा आव्यो छे माटे तमो सहु निद्रा लो.

समूह–हमो पण ए प्रभुना गुणनुं ज यशोगान गाया करीशुं.

(एवे प्रकारे सहु निवृत्त थइ रहे छे.)

भरत–(स्वगत).

शार्दूलविक्रीडित.

धाजो देव सहु सहाय समये, भ्राता गृहे लावतां
अर्पीशुं निशदिन अर्ध्य बहुए, यज्ञोक्रिया सारतां
आनंदे दइशुं पितृत्रळो वळी, श्राद्धादिको पाळतां
द्रष्टामंत्र ऋषि गृहे यजन दै आनंद वर्षावतां. २१

(आवां रटणमां भरतजी रात्री निर्गमन करे छे.)

इति पंचम अंके द्वितीय प्रवेश समाप्त.

प्रवेश ३ जो.

चित्रकूटनिवास स्थळ.

(महाराजाश्री दशरथनी क्रियादिक करी रह्या पछी.)

राम–भ्रात भरत, महाराजाश्री दशरथनो वियोग असह्य ज छे.

इंद्रवज्रा.

धाता जहां होंसथी पितु पासे
हृदे उभातां बहु आशआशे
छोडी जतां हा पितु स्वर्ग आजे,
शून्य स्थळे केम प्रवेश थाशे ?!!! ३७

स्थळे स्थळ आनंदना प्रसंगो खडा थतां ए प्रसंगोनां स्मरण मात्रथीज हृदय चिराय छे. भ्रात भरत, ए शुं कदि भूलाय एवा छे ?!!!

शार्दूलविक्रीडित.

आनंदे बहु गेलता शिशुपणे तृप्ति पितु आपतां
विद्यायोग वडे कुमार वयमां हैयां शुं उभावतां !!
हा किशोर वये प्राक्रम शुणी हर्षे उभा तो थता
लेता ज्यां हृदये पिता रस वहे ! धारा शुं ए भाळता ?!!? ३८

भरत–पिताश्रीनो पुत्रप्रेम अनन्य हतो. "हा राम "हा राम" करतां करतां ज एमणे स्वर्गनो मार्ग लीधो एम वसिष्टादिक ऋषिवरोथी सांभळ्युं.

राम–पिताश्रीना प्रेमनी खोट पुराय एम नथी. एम छतां पण भ्रात भरत, ए आपणे हवे भूलवुं जोईए.

भरत–(हस्त जोडी) प्रभु, ए भूलवा माटे हवे एकज मार्ग छे.

राम–भ्रात, काळने अनुकूळ थवुं एज आपणुं कर्तव्य छे.

भरत–(दीनमुखे) प्रभु, समकाळमां विषमकाळनो खेद अनिवार्य छे.

राम–भ्रात, ए सहु मननो धर्म छे.

भरत–कुळश्रेष्ठ, मन अमन थई शकतुं नथी.

राम–कार्य अने कर्तव्यज्ञानना भेदने ए सर्व साध्य छे. आ चित्रकूट स्थळ जोयुं ?

शार्दूलविक्रीडित.

नाचे ज्यांय कुरंग अंग हरखे, मंदाकिनी जो वहे
कूजंतां वनकुंजपुंज शुणतां, होंसे धसे पाय ए
लीलावारी परागपुष्प मळतां भ्रांति हरे शुचिए
उषाए मनमोदस्नान करतां काया वहे शांतिए !!! ३९

भरत–(हस्त जोडी) महाराज, ए लीला तो निषाद अने ऋषिजननी छे. आप तो राज्यभूषण छो.

राम–भ्रात, कुदरतने त्यां राजा ऋषि अने निषाद एवी भिन्नता नथी. ए तो सहुने एक सरखो ज आनंद आपे छे. जेथी करी तुं जो के

इंद्रवंशा.

आनंद आपे गृह वंश छायुं ए
धर्मे वसे राम,[१] भूगर्भ जाण ते
भूभारनिष्ठा लय थाय, धर्म ज्यां
आनंदऊर्मि नहि क्लेश देत त्यां. ४०

भरत–ज्ञानश्रेष्ठ, हमो पामर जनने एवी भावनामां भोळववाथी शुं ? शुं हमारी भावना नष्ट थई छे ? शुं हमारो भ्रातृभाव लोप थयो छे ? शुं हमोमां भूगर्भनां बळे वास कर्यो छे ? एथी हमो केम तृप्ति पामीए ? कुळश्रेष्ठ, आप जुओ छो के नगरजन सहित हमो तमारो वियोग सहन करवा असमर्थ छीए. हमारां हृदय क्लेशथी भेदाय छे. हमने सर्वांगे दीनता व्यापी रहे छे. अने "महाराज शुं कहेशे !" "शुं आज्ञा आपशे ?" "शुं पाछा वळशे ?" एवा एवा विचारमां भयभीत धडकतां हृदयथी शरीर कंपी रह्युं छे. अने हमो सर्व हवे तो तमारां दयापात्र थई रह्यां

(१) राम=आत्मा. रमते यस्मिन् इति रामः ॥

छीए. पुनः अयोध्यापुरी पधारी राज्यविभूति ग्रहण करो. अने धर्मयुक्त हमो तमारी सेवा करीए. हमारी भावनानी तो महाराज एम हद छे. माटे हवे मारी तेमज नगरजननी तल्पी रहेली वृत्तिओनो अनुग्रह करो. (भरतजी मौन्य रहे छे.)

वसिष्ठ–रामभद्र, भरतजी सत्य कहे छे. महाराजाश्री दशरथरायना देहत्याग पछी भरतजी ज्यारे राज्यविभूति ग्रहण करता नथी तो तमो ए विभूति ग्रहण करवा योग्य छो. माटे भरतजीनां मनने संतोष आपवो अने नृपहीन देश न गणाय एम आचरवुं ए तमारुं कर्तव्य छे.

(रामचंद्रजी मौन्य रहे छे.)

भरत–(दीन थई) पूज्य बंधु, खरेखर हुं अपराधी छुं के मारां निमित्त मात्रथी ज (अश्रु गळे छे) आपे वनवास ग्रहण कर्यो. अने महाराजाश्री दशरथराये देह त्याग कर्यो. ए मारां दुर्दैव शिवाय बीजुं शुं होय? मातानी दुष्ट वाणीनुं ज जो आ परिणाम होय तो शुं एनो प्रतिकार न थई शके? शुं भक्तवत्सल बाळकना अपराध क्षमा न थई शके? महाराज हमो तो बाळक ज छीए. माटे दया करी हमारो अपराध क्षमा करो अने हुं प्रार्थना करुं छुं के हमारा योग तरफ दृष्टि करो नहि.

राम–भ्रातृश्रेष्ठ भ्रात भरत, एवो परिताप मा कर. एमां तारो लेश मात्र पण दोष नथी. तेमज मातुश्री कैकेयीनो पण कंई अपराध नथी. दैवनी गति विचित्र होय छे तो दैवनी गतिने अनुसरी आपणे आपणो धर्म अदा करवो एज आपणुं कर्तव्य छे. तो दैवइच्छाने अनुसरी में मारो धर्म ग्रहण कर्यो जेथी हवे शोच करवो घटतो नथी.

भरत–पूज्य बंधु, महाराजाश्री दशरथना स्वर्गवासथी दैवगतिए नवुं स्वरुप लीधुं तो एवां स्वरुपने अनुसरी आप राज्य प्रत्ये आपनो धर्म अदा करो (हस्त जोडी नमन करतां) एवी मारी याचना छे.

(नमन करी रहे छे.)

राम–(मस्तके हस्त फेरवतां) भ्रात, स्वस्थ था. (भरतजी स्वस्थ बेसे छे.) भरत हवणां प्राप्त थयेल धर्मने अनुसरी माराथी राज्य ग्रहण थई शके एम नथी. महाराजाश्री दशरथना स्वर्गवासथी धर्मना स्वरुपमां भेद पडयो होय एम हुं जोतो नथी. भ्रातृभावयुक्त तारी अति प्रशंसनीय भावना योग्य ज छे. पण ए भावना मने प्राप्त थयेल धर्मनी आडे जनारी छे. जेथी एवी भावनानुं माराथी ग्रहण थई शके एम नथी.

भरत–प्रभु, नृप विना देश केम टकी शके ?

राम–भ्रात, महाराजाश्री दशरथनी आज्ञानुं जेम में प्रतिपालन कर्युं छे तेज प्रमाणे तुं पण चौद वर्षपर्यंत राज्यविभूति ग्रहण करी महाराजाश्री दशरथनी इच्छाने फळीभूत करी तेमना प्रत्ये तारो धर्म अदा कर.

भरत–महाराज, वडिल बंधु छतां राज्यविभूति हुं ग्रहण करी शकुं एम नथी. एज मारो निश्चय छे. शुं हुं रघुकुलने लांछन रुप थईश ? (आकाश तरफ द्दष्टि करी) हे प्रभु, ए भावना स्वप्ने पण मा हो !!

राम–भ्रात भरत, ए धर्म विरुद्ध आचरण नथी. पण महाराजाश्री दशरथनी आज्ञा पाळवा रूप धर्म छे. एथी तारुं कृत्य दोष रुप होतुं नथी. पण स्वर्गमां महाराजाश्री दशरथना आत्माने शांति आपनारुं छे. माटे हवणां प्राप्त थयेल राज्यविभूति तुं शंका रहित गृहण कर अने प्रजानुं सारी रीते पालन करी प्रजाने संतोष आप. केमके राज्यपुरुषनो एज धर्म छे. (भरतजी मौन्य रहे छे.)

जाबाली–रामभद्र, प्रकृति विरुद्ध आपनां विवेचन अने बोध श्रवण करतां हुं विस्मय पामुं छुं के अहो राज्यपुरुषमां आवी बुद्धि क्यांथी ?! शुं रामभद्रने बुद्धि विभ्रम तो नथी थयो ? नहि तो रामभद्र स्वाभाविक अनुभव विरुद्ध आवुं विवेचन केम करे? रामभद्र, मरण पछी स्वर्ग एतो बाळक अने अज्ञ पुरुषोने छळवा के तेमने सारे मार्गे दोरववानो छळ मात्र ज छे तो एवा छळना तमो क्यांथी भोग थया? मरण एज दृष्टिमर्यादामां रमी रहेली सृष्टि मात्रनो अंत छे तो मरण पछी संतोष, स्वर्ग, अने शांति ए वळी शुं? देह एज वैभवनुं साधन छे अने देह साथे ज सर्व कार्य के क्रियानो अंत आवे छे तो मृत्युंगत महाराजाश्री दशरथनी आज्ञानो संबंध क्यांथी रह्यो? एवां वचन एतो आपणे माटे सर्जेला वैभवथी विदुर रहेवानी अज्ञानता ज छे. माटे रामभद्र, कुमारश्री भरतनी प्रार्थना ग्रहण करो. अने राज्यश्रीने पामो. सहु नगरजननी पण एज इच्छा छे. हमो ऋषिगण पण ए माटे ज तमने बोध वचन कहीए छीए. माटे संशय रहित सर्वना हितनुं कार्य करवा तत्पर थाओ अने सहुनां हृदयना क्लेशने दुर करो. रामभद्र एज उत्कृष्ट धर्म छे. एथी विपरीत धर्म ए अधर्म ज छे एम सत्य जाणो.

भरत–(अति दीनपणे) महाराज, मुनिश्रेष्ठ जाबालीनां वचन मिथ्या होय नहि. प्राप्त थयेल राज्यश्री ग्रहण करवामां कोइपण जातनो अधर्म होय नहि. तो एवा अधर्मना निमित्ते, महाराज, शुं हमने छेह देवो ज धार्यो छे ? हमो कोना आश्रये रहीशुं ? हमारी शुं गति थशे? प्रभु विनानुं स्थळ स्मशानवत ज छे जेथी जो आप राज्यश्री ग्रहण नहि करो तो हमारा जीवननो पण अंत ज समजवो.

कौशल्या–पुत्र, भरत सत्य कहे छे. तारा विना एनो देह टकी शके एम हुं धारती नथी.

राम–(जाबाली प्रत्ये) मुनिश्रेष्ठ आपनां वचन अज्ञ समूहने क्षोभ आपवा माटे पुरतां छे पण ए वचन मने भेदी शके एम नथी. वृत्तिवादने अनुसरी जे जे वचन कह्यां ते समूहना स्वच्छंदताना प्रवाहने भले अनुकूल हो, पण मने तो ए मुद्दले मान्य नथी. मुनिश्रेष्ठ, एवो बोध करतां सर्वव्यापक सृष्टिक्रममां समग्र भावनानुं गति स्वरुप तदन लोप थाय छे ए शुं नथी जोता ? एम करतां स्थूळ सहित अने स्थूळ रहित भावनानां कार्य अने भावनाना प्रदेश अने एवा प्रदेशना मार्ग तदन विसारी मुको छो. समग्र सर्वव्यापक एवां एकज अविनाशी नित्य सत्य अभेद आत्मस्वरुप उपरथी जनसमूहनुं दृष्टिबिंदु तमो पलटावी स्थूळ व्यवहारनी संकुच हदमां ज आणी मुकी, एवां दृष्टिबिंदुने क्षुद्र करी, व्यवहार पण क्षुद्र, चंचळ अने उछृंखळ करवानो ज उपदेश करो छो. एवो उपदेश मने ग्राह्य नथी. हृदय अने अंतःकरणनी गति हुं विलोकी शकुं छुं. सृष्टिक्रममां एमनी गति अने एमनां बळनुं ज्ञान मने अनुभवसिद्ध छे. शुद्धि, निर्मळता अने भावनाना विशाळ प्रदेशमां ए सहुकोने प्रत्यक्ष थाय छे, त्यारे वृत्तिमय क्षुद्र व्यवहारने ए तदन अगम्य छे. भावना मात्र सर्व काळे सर्वव्यापक छे, एनो प्रवास स्वर्ग मृत्यु अने पाताळ सर्वत्र छे. हरकोइ स्थूळनी भावना बीजा प्रदेशनी भावनानुं पोषण करे छे, एवी रीते सृष्टिक्रममां अन्योअन्य पोषण मळतुं रहे छे. जेथी भावनाना साम्राज्यनुं ज्ञान अति गहन छे. सूर्य, मंडळ, ग्रह, तारा, देवगणादिक पण भावनाना ज प्रदेशो छे. स्वप्नस्फुर्णा ए भावनानां कार्यनुं माप होवा उपरांत भविष्य दर्शक आदर्श क्रिया छे. सूर्यमंडळ अने भगणक्रिया सृष्टिना क्रिया मार्गनुं सूचन करे छे. श्वान काक बिलाड इत्यादिकनी आगम दृष्टि अने निर्मळ स्वप्नना आदेशो ए सर्व पोषायली भावनाना भविष्य सूचक द-

र्पण छे. ए सर्वनी गति विलोकवा मने सहज शक्ति छे तो मुनिश्रेष्ठ आपनो वाद मने केवी रीते मान्य होई शके ? स्थूळ दशरथ आपणो द्रष्टा नथी पण भावना रुपी दशरथ आपणां सर्व कार्य अने अंतरपटोनो द्रष्टा छे. जेथी करी एम कहो के "महाराजाश्री दशरथ तो गया तो तेमनी आज्ञाना अमलनी जरुर शी ?" ए कहेवुं केवळ अज्ञानता ज छे, व्यवहारमां मची रहेल स्थूळ वृत्तिनो अघोर अंधकार ज छे. एथी भावना मात्रने कठोर, दुष्ट के स्वार्थी रंग आपी आपणां हृदयने मलिन करी अंतःकरण उपर अंधकारनां ज पड प्रवर्तावीए छीए. तो मुनिश्रेष्ठ एवो युक्तिवाद मने केवी रीते मान्य होई शके ? एवी नास्तिकतानो प्रचार थयेलो जोवाने हु केवी रीते इच्छी शकुं ? मुनिश्रेष्ठ, एवी अधम नास्तिकतानो फरी बोध करशो नहि. सर्वव्यापक आत्माना समग्रस्वरुप द्वारा सृष्टिनी क्रिया विलोकी ते प्रमाणे अनुसरवुं एज सत्य धर्म छे. ऋषिश्रेष्ठ, एज सत्य धर्मनुं अनुकरण थतां भूमि, कीर्ति, यश, लक्ष्मी तेमज आत्मानां समग्र ज्ञानने अंगे शांति अने परम आनंद स्वरुप ए सौ सत्यवादी पुरुषनी ज प्रार्थना करे छे तो एवा धर्मनां ज्ञान छतां ए धर्म विरुद्ध हुं केम वर्ती शकुं ? एवुं युक्ति पूर्वक धर्माचरण ग्रहण करी शुं हुं मारां ज हृदय अने अंतःकरणने छेतरीश ? शुं हुं महाराजाश्री दशरथ समीप लीधेली प्रतिज्ञानो भंग करी राज्यमोह के भ्राता भरतना प्रेमने आधीन थई आत्माना धर्मव्रतनो लोप करीश ? आर्य सत्यपुरुषनां एवां आचरणनो त्याग करी शुं हु अनार्य कहेवाईश ? एक राज्यपुरुष थई जन समूहना अनुकरण माटे शुं हुं मारुं आवुं वर्तन मुकी जईश ? ऋषिश्रेष्ठ, ए कदि पण बनी शके एम नथी. कर्मभूमिने पामी अशुभ कर्मनो प्रचार हुं केवी रीते जोई शकुं ? अग्नि, वायु, देव पितृ आदिक कर्मना फळ भागी छे तो ए

सर्व आगळ शुं हुं हास्यपात्र थईश ? शुं हुं एओमां एम कहेवाववा दईश के राम राज्यमोह के प्रेमने आधीन थई धर्मथी भ्रष्ट थया? सृष्टिक्रम अने काळचक्रना नेता ब्रह्मा, विष्णु अने रुद्रने हुं शुं प्रत्युत्तर आपीश ? शुं हुं एम कहीश के माराथी मारो धर्म अदा थई शक्यो नथी ? हुं तमारो गुन्हेगार छुं जेथी काळक्रमने योग्य सजा मने आपो. शुं हुं एक क्षुद्र के अल्प व्यवहारफळ सुख कीर्ति के प्रेमने खातर सृष्टिक्रमनां समग्र स्वरुपमां दीनता व्होरी लई धर्मनो ध्वंश करीश ? ऋषिश्रेष्ठ एतो न भूतो न भविष्यति छे. हुं मारा धर्ममां अचळ छुं. पण तमो एवो नास्तिक वाद के असत्य धर्म कोइपण काळे प्रसरावी अधोगतिने पामशो नहि. असत्य धर्म जन समूहने सर्पसम त्रास रुप छे तो आपणां एक अधर्म युक्त वर्तनथी जन समूहने अधो मार्गे दोरववो ए केवु अघोर भयंकर पाप कर्म छे. ए शुं कोइपण समजुकनी दृष्टि बहार होई शके ? ! ! वळी मुनिश्रेष्ठ स्वार्थ त्याग ए समग्र आत्माना **निस्पृहतानुं** कार्य छे गमे त्यां गमे ते माटे गमे तेवा स्वार्थ त्यागथी आत्मा तरफ उर्ध्व गमन करती आपणी उन्नत वृत्तिओने पोषण मळे छे तो पिताश्री दशरथनी प्रतिज्ञा अने मातुश्री कैकेयीनी जीज्ञासा तृप्त करवा अर्थे में जे स्वार्थनो त्याग कर्यो छे ते कोइपण प्रकारे अयोग्य कार्य केवी रीते होई शके ? एज आत्मानी गति छे, एज आत्मानी कर्तव्यज्ञता छे, अने एज आत्मानो आनंद छे. तो मुनिश्रेष्ठ मारु कृत्य विपर्यय केवी रीते होई शके ? आत्मगति माटे सर्वत्र एज कार्यनी दिशा छे तो अज्ञ व्यवहार समूहनी जीज्ञासा तृप्त करवा खातर ज मारी निर्बळता केवी रीते दर्शावी शकुं ? माटे ज मुनिश्रेष्ठ मारां निश्चयमांथी कोइपण मने पाछो हठावी शके एम नथी.

वसिष्ठ—रामभद्र, जाबाली मुनिए जे कह्युं ते नास्तिकपणांथी नथी कह्यु.

जाबाली मुनि एवो नास्तिक वाद प्रचार पामेलो जोवा इच्छे नहि. पण एमणे जे कह्युं ते तमने कुमारश्री भरत' तरफथी समजाववा खातर ज कह्युं. तमारां ज्ञान अने श्रद्धाथी हमो ऋषिगण हर्षित बनीए छीए, अने तमारी धर्मभावनाथी सहुकोनां हृदय "धन्य" "धन्य" पोकारी रह्यां छे. स्वर्गमां देवगण पण आकाशक्रियाथी स्वहर्ष दर्शावी रह्या छे. एम छतां पण भरतजी के जे तमारी सन्मुख दीनमुखे याचना करी रह्या छे एमनो अनुग्रह करवो आवश्यक छे.

राम—भ्रात भरत, तुं केम दीन थई रहे छे? मारा वियोग माटे तने शोक करवो घटे नहि. मातुश्री कैकेयी द्वारा महाराजाश्री दशरथे जे आज्ञा करी छे, ते योग्य ज छे. राज्यपुरुषनो ए धर्म छे के देशे देश फरी चर्चा जोवी, प्रजानां सुख दुख जाणवां, अने समग्र प्रजाने आनंद आपवो. एज राज्यपुरुषनुं महत् कर्तव्य छे. जेथी करी एवी चर्चानी चर्या माटे महाराजाश्री दशरथे मने चौद वर्ष वनवास मोकल्यो ए योग्य ज कर्युं छे. एमां मातुश्री कैकेयी के महाराजाश्री दशरथनो लेश पण दोष नथी. एओए तो राज्यपुरुषने योग्यज धर्म आज्ञा करी छे. भ्रात भरत, तुं जाणे छे के दंडकारण्यमां अनेक तपस्वीओ वसे छे; तेम अहिंयां राक्षसगण पण विशेष छे. जेथी करी जो हुं ए तपस्वीगणने राक्षसनो उपद्रव नाश करी सुख आपीश तो एम नक्की मानजे के आपणां इक्ष्वाकु कुळनी कीर्ति देशे देश अनेक काळ पर्यंत वृद्धि पामती रहेशे. महाराजाश्री दशरथनी आज्ञा फळवती थशे. अने मातुश्री कैकेयीनुं वचन आनंददाता ज थई पडशे. अने त्यारे ज तने तारो आजनो आवो क्षोभ ए भ्रमणा ज छे एम सत्य लागशे. माटे हे भ्रात भरत तुं अनेक शंका करवी छोडी दे, मारां वचनमां श्रद्धा राख, अने क्यां तो श्रद्धाने अनुसरी के व-

डिल बंधुनी आज्ञा ए धर्म समजी मारी इच्छाने अनुसरतां अने महाराजाश्री दशरथनी आज्ञानुं पालन करतां, प्रजानुं सारी रीते रक्षण करी, समग्र प्रजाने लक्ष्मीना अभ्युदय साथे संतोष आप. रघुकुलोत्तम, राज्य वैभव माटे नथी; राज्य मनुष्य जातना अहंभावना पोषण माटे आडंबर स्थान नथी, राज्य ए वाक् मात्रथी ज प्रजाने मोहमां ललचावी प्रजाने अघर अंधकारमां दुःखी अने क्लेशित स्थितिमां रीबावी लटकाववानुं साधन नथी, आपेली प्रतिज्ञाना अर्थ उलटाववानी काळापोषक प्रपंचात्मक गोष्टिस्थान पण नथी; एकने भोगे बीजाने श्रीमंत करवानी शाळा नथी, समानताना आडंबर सहित अन्यायनुं छळ स्थळ नथी, तेमज अन्यो अन्यमां कल्हादिकथी कुटिल नीतिनुं भाजन पण नथी. वळी राज्य ए वाकचातुर्यथी स्वछिद्र ढांकी प्रजा साथे अनेक छळ प्रपंच रमवानी बाजी पण नथी. पण राज्य ए अनेक व्यक्तिओना आत्माने सुख संतोष अने आनंद आपवानुं श्रेष्ठमां श्रेष्ठ कर्तव्य स्थान छे. समग्रता, समानता, न्याय, उदारता अने विशाळतानुं पोषण स्थान छे. प्रेम, शौर्य, धैर्य, दृढता अने धीरतानी केळवणी शाळा छे. न्यायनुं स्वर्ग स्थान छे. अने कर्तव्यआनंदथी आत्मानुं तेजोमय निर्मळ अने शुद्ध हृदय धाम छे. माटे भ्रात भरत, मारी आज्ञाने अनुसरी प्रजानुं सारी रीते पालन कर अने एमां ज धर्म अने कर्तव्य आनंद मान.

भरत—प्रभु, आपनी आज्ञा शिर चढावुं छुं. क्षत्री धर्मनां आपनां कर्तव्य विरुद्ध माराथी कंई वदी शकाय एम नथी. एम छतां पण हुं राज्यश्री ग्रहण करी शकुं एम नथी. आपनी इच्छाने ताबे थई जे कंइपण करी शकुं ते आपना प्रतिनिधि तरीके ज, माटे आपनां राज्य चिन्ह तरीके आपनी पादुका मने आपो तो ए चिन्ह द्वारा ज आपने सन्मुख मानी

लई सर्व कार्य तमने ज अर्पण करी, आपनी इच्छानो नगर बहार रही जटा तथा चीर वस्त्र धारण करी यथाशक्ति आपनी आज्ञानो अमल करीश. जेथी हवे मारी ए प्रार्थना मान्य करशो.

राम—भ्रात, भले तेम हो. आ मारी पादुका (काढी आपे छे) ने सन्मुख राखी महाराजाश्री दशरथना मरणथी अनाथ प्रजाने सनाथ करी सारी रीते पोषण कर. महर्षी वसिष्ठ, तेमज अन्य ऋषिगण अने प्रधानजी सुमंत्र तने तारां कार्यमां मदद करशे. तारी उत्कृष्ट भावना तारुं कर्तव्य अदा करवामां तने सदा सहायभूत थशे. मातादिक राज्यगण अने प्रजा एम सर्वने तुं हवे सत्वर जई आनंद आप ए मारी आज्ञा छे.

(भरतजी पादुका ग्रहण करी नमन करे छे)

भरत—प्रभु, बहु उपकृत कर्यो. चौद वर्ष उपर एक पण दिवस जशे तो हुं मारा प्राण धारी शकीश नहि. चौद वर्ष पर्यंत तो तमारी आज्ञाथी, फळ मूळादिकना आहार मात्रथी ज, मारा प्राण टकी रहेशे. माटे प्रभु वनवास जलदीथी पूर्ण करी राज्य विभूतिने ग्रहण करी हमो सर्वने आनंद आपो. तेम न थयुं तो चौद वर्ष पुरां थतां ज हुं अग्नि प्रवेश करीश.

राम—भरत, अवश्य हुं चौद वर्ष पुरां थतां आवीश. मारा प्राण मारी नगरी, मारी प्रजा अने मातादिकने लई तारामां ज छे. कर्तव्य पुरुं थतां हुं घडी पण विलंब करीश नहि. माटे भरत, आश्वासन पामी सुखेथी अयोध्या पुरी तरफ प्रयाण शीरु कर. प्रजाने एक पळ पण अनाथ राखवाथी आपणे दोषभाक् थईए छीए. ए दरम्यान जे गुन्हा, अनीति क्लेश, दुःखादिक आपत्ति प्राप्त थाय तेनुं कारण आपणे ज थईए छीए. कारण के ते समयमां आपणे आपणुं कर्तव्य अदा करता नथी. जेथी करी अखिल समूह अने देशनो दोष पण आपणे ज शिर चढे

छे. माटे भरत, हवे तुं जरा पण विलंब नहि करतां सत्वर प्रयाण कर. (वसिष्ठ प्रत्ये गळगळा थतां) गुरुजी, भरत तमने सोंपु छुं. भरतनुं हृदय अति कोमळ छे. पिताश्री अने भ्रातनो वियोग एने असह्य थई पड्यो छे. माटे एनुं सांत्वन करशो. योग्य सलाह आपता रहशो अने वडिलथी वियोग काळमां बाळक सम एना सर्व कोड अने लाड पाळशो एज मारी याचना छे.

वसिष्ठ—रामचंद्रजी, निश्चिंत रहो. भरतजीने हमो ओछुं आववा दईशुं नहि. अने राजा प्रजानुं जेम कल्याण थाय ते प्रमाणे सदा विचरता रहीशुं.

राम—(सुमंत्र प्रत्ये) प्रधानजी, प्रजा अने भरत तमारे शरणे छे. एमनुं योग्य पालन करवुं ए हवे तमारुं कार्य छे.

सुमंत्र—महाराज, आपनी आज्ञानो सदा उत्सुकता तत्परता अने आनंदथी अमल करीशुं ए विषे तमारे लेश पण शंका राखवी नहि. पण हमो प्रार्थना करीए छीए के तमो सत्वर आवी प्रजा सह हमने आनंद आपो.

राम—(कौशल्या प्रत्ये) मातुश्री भरतने ओछुं लाववा देशो नहि. एना प्रेमनुं सारी रीते पोषण करी पिताश्री अने मारा वियोगनी भावना भुलावशो.

कौश०—पुत्र, सदा निर्भय रहे. भरत विषे फिकर कर नहि. पण तुं जलदीथी आवी हमो सर्वने आनंद आप.

राम—(नमन करी) हा मातुश्री, हुं चौद वर्ष पुरां थतां सत्वर आवी रहीश.

भरत—(रामने पगे पडी गद्गद थतां) प्रभु, आपनो आज्ञानुवर्ती हुं जाउं छुं. पण सत्वर पधारशो.

राम—भ्रात, अवश्य जलदी आवीश. सुखेथी राज्यनुं पालन कर.

(भरत बाजु थई जाय छे)

कौश०–पुत्र आलिंगन आप. (रामने आलिंगे छे) पुत्र तारुं सदा कल्याण हो.

राम०–मातुश्री, काळपूर्ण थतां हुं तमने अवश्य आनंद आपीश.

(कौशल्या पण बाजुए खसी जाय छे)

(वसिष्ठ प्रत्ये) गुरुजी हवे आशिष आपो.

वसिष्ठ–शांतिः। शांतिः ॥ शांतिः ॥।

रामचंद्रजी, एज सर्वदा तमारी अनुवर्ती हो! हवे हमो सर्वे जईए छीए.

(सर्वे जाय छे.)

(सर्वे गया पछी)

राम–(लक्ष्मण प्रत्ये) भ्रात लक्ष्मण,

हरिणी.

व्रत कठिन छे, बंधु केरुं, तपे तन गाळवा ! ! !
सरळ मनथी स्पृहा त्यागे, वहे रस निर्मळा
हृदय गतिए, उंचे लेतां तरे वपु प्रेममां
सजळ नयने अंगो भीनां रहे डुली शांतिमां! ४१

लक्ष्मण–(हस्त जोडी) महाराज, ए सत्य छे. भरतजीए आपणने उंचा प्रेममां तरता ज मुक्या छे. (नीचुं जोई) पवित्र भरतजी विषे मारी दोषदृष्टि क्षमा करशो.

राम–तात लक्ष्मण, ए विषे शोच कर नहि. एतो प्रकृतिनो धर्म छे. पण प्रकृति आपणने धर्म के मर्यादा बहार घसडी न जाय ए जोवुं आपणुं कर्तव्य छे.

लक्ष्मण–महाराज, हवे अवश्य सावध रहीश.

(किंचित् काळ मौन्य व्यापी रहे छे)

राम–(एकाएक) पण लक्ष्मण, महाराजाश्री दशरथनो वियोग असह्यज छे. भरतनुं आश्वासन कर्या छतां पण हृदय तो वियोगथी झुर्या करे छे. खरेखर

शार्दूलविक्रीडित.

मार्या कंइक दानवो रणविषे, सीता जीती शौर्यथी
वासो कीध ऋषि गृहे वळी वळी, विद्या भणे प्रेमथी
आयुधो करशुं लई हुं फरतां, मृग्या कीधी धर्मथी
ज्यां ज्यां एम फरी, फरुं गृह विषे, छाया पितु तो खरी!!! ४२

अहो काळ तें शुं कर्युं! हवे तो

इंद्रवज्रा.

जोवी जडे ते नहि छांय आजे!
शाणे गया ए तजी पितु आमे?!
आवीशुं पाछा वनथी ज ज्यारे
शोधीशुं क्यां रे?—तम हुंफ त्यारे!!! ४३

(एवी रीते रामचंद्रजी शोकग्रस्त थई जाय छे)

लक्ष्मण—महाराज, हवे पिताश्रीनो शोच करवाथी शुं? आपे भरतजीने कह्युं तेम पिताश्रीनो वियोग विसारवो जोईए. अने हवे तो वनवास पुरो थतां पवित्र भरतजी अने प्रजाजन तरफ ज आपणो धर्म रहे.

राम—भ्रात तुं सत्य कहे छे. त्यारे आपणे शुं करवुं जोईए?

लक्ष्मण—महाराज,

उपजाती.

पाछा फरीशुं वनथी ज ज्यारे
धारीशुं छत्रे संग भ्रात त्यारे!
आनंद माता सहु त्यांय देशुं
प्रजा जनोनां नित्य रंग लेशुं!!! ४४

वळी

इंद्रवज्रा.

वियोग दुःखे ज रुए प्रजा जे
शुणी हृदे घा उर, को, न लाजे!
काळे करी हे प्रभु प्रेम पाशो
आशा उमेदे वनशोक न्हाशो!! ४५

राम—भ्रात लक्ष्मण, अवश्य काळे करी एमज थशे जो के

शिखरिणी.

रुए छे सौ कोण दशरथ जतां देश तजीने
अहा काळे घेर्या, जीव करगरे "राम सुख दो"!
दुखे हा शोषातां झुरी झुरी वियोगे तरफडी
शुं ह्यां बेठां जोवी! कृति करमनी काळशुं जडी!!! ४६

(विचार ग्रस्त स्वगत) खरेखर, हाल काळने आधीन सहु एम ज छे. एम छतां पण (प्रकाश) लक्ष्मण नहि! नहि!

इंद्रवज्रा.

"ज्यां सुधी छे हा मुज देश आघो!
सुखे न सुए मुज अंग भागो"
आत्मागति ज्यांय उठे पुकारी
देशोदये ए सहु लाभकारी! ४७

अरे मारा वियोगी देश!

शार्दूलविक्रीडित.

काळे प्राप्त थयेल धर्म धरतां क्रिया खडी आ हवी
सेवो आपदधर्म उच्च गतिए, शांति जीवे केळवी
रेलाशे भर रेल सुख नदीनी, उंचां तटो सेवतां
भूलाशे दुख काळ विषम तणां, आनंदमां रेलतां!!! ४८

(हृदय ध्वनि).

इंद्रवज्रा.

माता पिता ने वळी बंधु केरो
धर्मेशुं हेडो कदिये न फेडो
सेवो न राजा कदि भिन्न सृष्टि
धारे प्रजाहित हरो कुदृष्टि!!! ४९

इति रामवियोग नाम नाटके वियोग नामे पंचमो अंक समाप्त.

योगेंद्र.

योगेंद्रना संबंधमां नीचे आपवामां आवेल प्रत्युत्तर अत्र दर्शाववो जरुरनुं जणाय छे.

मान्यवर सेक्रेटरी, कच्छ राज्य,

आपना तरफना आषाढ वद ७ गुरुना नं. १३ ना जवाबमां लेखक तरफथी जणाववानुं के आपना तरफ आवेल योगेंद्रनी पच्चीस प्रत साथे लेखकने कंइज संबंध नथी. विशेष लेखके जे कंइ कर्युं होय ते एटलुंज के एन. एम. त्रिपाठीनी कंपनी (मुंबाइ) ने सामान्य नियम सूचवी हिंद, गुजरात अने अन्य स्थळे बक्षिस व्यवस्था करवा माटे योगेंद्रनो प्रतो गया श्रावण (१९६१) मासथी सोंपवामां आवी छे.

वलसाड—हनूमान शेरी,
ता. १९-७-०६.
आषाढ वद १३ गुरु १९६२

योगेंद्र लेखक.
लल्लुभाइ नारणजी.

शुद्धिपत्र.

प्रचलित सामान्य शब्दोना अंत्य अने उपांत्य स्वरना ह्रस्व दीर्घनो एक नियम भंग थयेलो जणाय, क्वचित् क्वचित् सामासिक शब्दो सहज छूटा लागे. संबंध पूर्वक अनुस्वार उठयां न होय के रही गया होय मात्रा त्रुटी होय विगेरे नजरने तरी आवता दोषो उपर वाचक वृंद क्षमा दृष्टिथी जोशे एवी **आलेखक** आशा राखे छे. केटलाक शब्दो अने क्रियापदनां द्विधा स्वरुप **आलेखकने** जरुरनां जणायां छे विगेरे ए आलेखकनी दृष्टि क्रियानां फळ छे. ए शिवायना दोषो दर्शाववा रही गया होय तो शुद्धिपत्र उपरथी सूचित नियम प्रमाणे सुधारी लेवा.

हनुमान शेरी—वलसाड,
भाद्रपद श्राद्ध पक्ष ७, १९६२
ता. १० मी सप्टेम्बर १९०६

लल्लुभाइ नारणजी

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	२	वियोगाजली	वियोगांजली
१२	१८	१ मार्गशीर्ष, १९६१ २ माघ, १९६०	(आ पंक्ति फुटनोटमां लेवी)
१३	६	काळ शुं	काळशुं
,,	२१	हदे शुं	हदेशुं
१९	१९	वियोग धर्म	वियोगधर्म
२१	२	लीध	लीधे
,,	३	सरखामणी आर्यावर्त करतां	सरखामणी करतां आर्यावर्त
२४	१८	लेखकना	लेखकनां
,, (छेवटे)	१८	त्यां	ज्यां

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२६	३	आपना	आपनां
३२	२८	other	other additions
३९	२०	क्रियाशुं	क्रिया शुं
४१	१७	विशाळ—नाए—	—विशाळ, नाए—
५४	१९	तस्पर	तत्पर
५५	८	प्राप्त	प्राप्त
,,	,,	शीताशुं	शीतांशु
५६	६	एवा	एवां
,,	१४	घन्य	धन्य
,,	,, (छेवटे)	अपसर	अवसर
५७	१०	नुरकुक्षि प्रदेशे	नुर कुक्षिप्रदेशे
५७	१५	त्यां ! !	त्यां ? !
५७	२१	शास्र	शास्त्र
५८	१९	भावौ	भावो
६२	१७	सु जोवा	सुजोवा
६५	१०	नमन करी रुषि वर्य,	(नमन करी) ऋषिवर्य
६६	१३	पडशे,	पडशे.
६७	२६	षर तंत्रता	परतंत्रता
७१	२१	थयां	थया
७२	२	जाहूनवी	जाह्नवी
७३	२१	राडनुं	रांडनु
७५	१९	नयी	नथी

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८०	५	कर्युं.	कर्युं,
८२	१५	अलकार	अलंकार
९६	५	बेळा	वेळा
९९	२४	होये	होय
,,	२५	आत्ज्ञानी	आज्ञानी
१०१	१०	छे,	छे.
१०२	१६	उत्क्रुष्ट	उत्कृष्ट
११०	१०	समानताळुं	समानतावाळुं
११२	९	भिन्नताते	भिन्नताने
११५	१५	सन्भुख	सन्मुख
११८	३	ठाढां	टाढां
११९	८	वाउए	बाउए
१२०	८	द्दष्ठि	द्दष्टि
१२२	१५	अवता	आवता
१२५	२१	तमे	तने
१२९	२१	हुष्ट	दुष्ट
१३०	१०	असंमज	असमंज
,,	१७,२०	अनिष्ठ	अनिष्ट
,,	२०	ईच्छा	इच्छा
१३१	१०	राभ्य	राज्य
१३८	२०	हीत	हीन
१४२	२१	अनन्ताना	अनन्त ताना
१४४	१२	नहा	न हा
१४८	७	धर्मेदु	धर्मेंदु

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५४	२०	याग	योग
१५७	२६	भागिरथी	भागीरथी
१६१	१३	व्याघ्रो	व्याघ्री
१६३	१५	–धवलता,	–धवलता
१७०	२१	जटील वेश, धारण, क्रिया	जटीलवश धारणक्रिया
१७४	६	उषाए	उेषाए
१७७	९	आंवुं	आवुं
,,	१२	बचन	वचन
१७८	१२	बिंद्रुने	बिंदुने
१८१	५	तमांरी	तमारी
१८४	२१	गद्गद	गद्‌गद्

योगेंद्र.

बक्षिस व्यवस्था माटे जुओ समालोचक १९०५ अ-
क्टोबर, डीसेंबर अने पुस्तकालय माटे १९०६ एप्रील, जुन

लल्लुभाइ नारणजी देशाइ
वलसाड.

अमदावाद.
युनियन प्रीन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेड.